राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 राष्ट्रपति मुर्मु ने साइना नेहवाल के साथ खेला ...

बधाई, आपने कम समय में मनी लॉन्ड्रिंग में भी पीएचडी की, भाजपा... 12

वर्ष : 12 | अंक : 91 | पटना, शुक्रवार, 12 जुलाई, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

परीक्षा रद्द कर दोबारा कराने की मांग वाली याचिकाओं पर सुनवाई टली

नीट यूजी परीक्षा : सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई 18 जुलाई के लिए टाली

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने बड़े पैमाने पर कथित कदाचार और अन्य अनियमितताओं के कारण मेडिकल में स्नातक स्तर की पढ़ाई के दाखिले के लिए पांच मई को आयोजित राष्ट्रीय पात्रता का प्रवेश परीक्षा 2024 रद्द कर उसे दोबारा कराने की मांग वाली याचिकाओं पर अपनी सुनवाई गुरुवार को 18 जुलाई के लिए टाल दी। मुख्य न्यायाधीश डी.वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने सुनवाई की अगली तारीख मुकर्रर करते हुए कहा कि पीठ के अलावा कुछ अन्य याचिकाकताओं ने अभी तक केंद्र सरकार और परीक्षा आयोजित कराने वाली संस्था राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी द्वारा बुधवार को दायर हलफनामे पर गौर नहीं किया है। इसलिए इस मामले को 18 जुलाई के लिए स्थगित की जाती है। केंद्र सरकार ने अपने जवाब में अदालत को यह भी जानकारी दी कि नीट यूजी 2024 के लिए काउंसलिंग प्रक्रिया जुलाई के तीसरे सप्ताह से शुरू होगी।

काउंसलिंग चार राउंड में आयोजित की जाएगी। पीठ ने पिछली सुनवाई 08 जुलाई को केंद्र सरकार और एनटीए को आरोपों से संबंधित जवाब हलफनामा के जरिए अदालत में 10 जुलाई को दायर करने का निर्देश दिया था।अदालत ने केंद्रीय जांच ब्यूरो को भी जांच से संबंधित प्रगति रिपोर्ट दाखिल करने को कहा था।

शीर्ष अदालत ने आठ जुलाई को कहा था कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि परीक्षा की पवित्रता से समझौता किया गया है। अदालत ने यह भी कहा था कि अगर धोखाधड़ी के लाभार्थियों और बेदाग उम्मीदवारों के बीच अंतर संभव नहीं तो फिर से परीक्षा आयोजित की जानी चाहिए। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने बुधवार को एक हलफनामा दाखिल कर शीर्ष अदालत को बताया था कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास द्वारा किए गए नीट यूजी 2024 के आंकड़ों के तकनीकी विश्लेषण से न तो बड़े पैमाने पर गड़बड़ी के कोई संकेत मिले, और न ही असामान्य अंकों से लाभान्वित होने वाले उम्मीदवारों का कोई स्थानीय समूह है। हलफनामा में कहा गया है कि विश्लेषण से पता चला कि परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों में कुल मिलाकर 550 से 720 की सीमा में वृद्धि दर्ज की गई। यह वृद्धि शहरों और केंद्रों में देखी गई है। इसकी वजह पाठ्यक्रम में 25 फीसदी की कमी को जाता है।केंद्र सरकार के जवाब में कहा गया है कि उच्च अंक प्राप्त करने वाले ऐसे कई उम्मीदवार विभिन्न शहरों से आते हैं। यह स्थिति कदाचार की बहुत कम संभावना को दशार्ता है। एनटीए ने अपने अलग हलफनामे में कहा कि आज की तारीख तक 16 प्राथमिकियां दर्ज की गई हैं, जिनमें से 14 उसकी शिकायत पर, जबकि पटना और गोधरा पुलिस ने अपनी सूचना के आधार पर अलग अलग मुकदमा दर्ज किया है। एनटीए ने मई में प्रश्नपत्र सार्वजनिक होने के आरोप लगाने वाले टेलीग्राम वीडियो के संबंध में कहा कि पहले प्रश्न पत्र सार्वजनिक होने की झूठी धारणा बनाने के लिए वीडियो से छेड़छाड़ की गई थी। एनटीए ने यह भी बताया कि सोशल मीडिया पर टिप्पणियों और चचाओं ने वहां के दावे की मनगढ़ंत प्रकृति को सामने लाया। शीर्ष अदालत ने 08 जुलाई को केंद्र सरकार और एनटीए से नीट यूजी परीक्षा के प्रश्न पत्र सार्वजनिक होने के दायरे के बारे में जानकारी देने और सार्वजनिक होने तथा 5 मई, 2024 को परीक्षा आयोजित होने के बीच के समय अंतराल के बारे में भी जानकारी देने को कहा था।

मिस्टर जज आप नहीं... मैं हूं

सीजेआई चंद्रचूड़ ने नीट मामले की सुनवाई के दौरान वकील को याद दिलाया

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में नीट मामले की सुनवाई के दौरान ऐसा कुछ हुआ कि सीजेआई चंद्रचूड़ वकील को यह याद दिलाते नजर आए कि जज कौन है।नीट मामले की सुनवाई की नई तारीख देने और ऑर्डर लिखवाने के दौरान ही सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सोमवार और मंगलवार को अपनी अनुपलब्धता बताई थी, तभी वरिष्ठ वकील जे नेदमपारा कह उठे कि वह बुधवार के लिए राजी हैं। इस पर सीजेआई चंद्रचूड़ ने उन्हें रोकते हुए कहा, कि एक सेंकड, मिस्टर नेदमपारा, जज आप नहीं, सौभाग्य से जज मैं हूं। आप खामोश रहें।

जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने पूर्व आईएएस अधिकारी को सौंपी बड़ी जिम्मेवारी

मनीष वर्मा बने जदयू के राष्ट्रीय महासचिव

प्रात : किरण

पटना/नई दिल्ली/एजेंसी। पूर्व आईएएस अधिकारी मनीष वर्मा को जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार ने बड़ी जिम्मेवारी सौंपी है। वर्मा को जदयू का राष्ट्रीय महासचिव बनाया गया है। जदयू के महासचिव आफाक अहमद खान ने गुरुवार को एक जारी बयान में यह जानकारी दी। उल्लेखनीय है कि दो दिन पूर्व मंगलवार को आईएएस मनीष कुमार वर्मा को पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा एवं प्रदेश अध्यक्ष उमेश कुशवाहा की अगुवाई में पार्टी की सदस्यता दिलाई गई थी। ओडिशा कैडर के आईएएस मनीष कुमार वर्मा स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सलाहकार रह चुके हैं। इसके वे पहले आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य थे। ओडिशा कैडर के आईएएस अधिकारी रह चुके मनीष वर्मा ने 2018 में स्वैच्छिक सेवानिवृति ली थी। शुरू में वह ओडिशा के जिलों में डीएम रहे थे। बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के गृह जिले नालंदा के मूल निवासी मनीष वर्मा 2012 में अंतरराज्यीय प्रतिनियुक्ति के तहत अपने राज्य लौट आए थे। इसके बाद से वह लगातार बिहार में ही सेवा दे रहे थे। वह पटना और पूर्णिया के जिलाधिकारी भी रहे हैं। अफसरशाह के रूप में भी मनीष वर्मा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के आसपास ही रहे थे। नीतीश कुमार खुद कुछ कार्यक्रमों के इनके घर पर भी जा चुके थे। जब मनीष वर्मा की प्रतिनियुक्ति दिल्ली हो गई तो वह वीआरएस लेकर बिहार आ गए। तब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उन्हें दूसरे तरीके से पद और शक्तियां दीं। इसके बाद धीरे-धीरे मनीष वर्मा ने जदयू के संगठनात्मक ढांचे का अध्ययन किया। कहा जा रहा है कि लोकसभा चुनाव में जदयू के अच्छे प्रदर्शन के पीछे मनीष वर्मा की अहम भूमिका थी। सेवानिवृति लेने के बाद मनीष वर्मा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के परामर्शी थे। मनीष वर्मा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के गृह क्षेत्र नालंदा के रहने वाले हैं। नीतीश कुमार के जिले के साथ-साथ उनकी जाति से भी ताल्लुक रखते हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उन्हें बड़ी जिम्मेवारी सौंपी है। जानकारी के मुताबिक 2000 बैच के उड़ीसा कैडर के आईएएस मनीष वर्मा की पहली पोस्टिंग कालाहांडी के सब कलेक्टर के तौर पर हुई थी। 2012 में जब अंतरराज्यीय प्रतिनियुक्ति के तहत मनीष वर्मा बिहार आए थे तभी उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई। वो पटना, पूर्णिया सहित कई जिलों के डीएम भी बने फिर नीतीश कुमार के सचिव भी रह चुके हैं लेकिन 2018 में उन्होंने वीआरएस ले लिया और रिटायरमेंट के बाद राजनीति में एंट्री करने का मन बनाया। आखिरकार वो नीतीश की पार्टी जेडीयू में शामिल हो गये हैं। वो नीतीश कुमार के काफी करीबी माने जाते हैं। यही कारण है कि आज मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उन्हें बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है। जदयू का दामन थामने के बाद पूर्व आईएएस मनीष वर्मा ने कहा था कि 21 साल नौकरी करने के बाद मुझे लगा कि अब बिहार की जनता की सेवा किया जाए इसलिए वीआरएस लेकर जनता दल यूनाइटेड के साथ आ गये हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि पहले मैं दिल से जनता दल यूनाइटेड के साथ था और आज इस दल में ही शामिल हो गये हैं। जनता दल यूनाइटेड के परिवार का सदस्य बनकर राज्य की जनता के हित के लिए काम करूंगा और पार्टी जो भी जिम्मेवारी देगी उसका बखुबी पालन करूंगा। मनीष वर्मा ने कहा था कि हमने लालटेन युग में पढ़ाई की थी। लालटेन युग में लालटेन को साफ करते-करते आईएएस बन गए। नीतीश कुमार जब बिहार के मुख्यमंत्री बने तब उन्होंने बिहार का अंधकार से प्रकाश में लाने का काम किया। अगर आज बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के कारण ही समाजवाद जिंदा है।

संक्षिप्त खबरें

वज्रपात से 04 लोगों की मौत पर मुख्यमंत्री ने जताया दुख

पटना। पिछले 24 घंटे में वज्रपात से सीवान में 02, सुपौल में 01 और रोहतास में 01 व्यक्ति की मौत पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आपदा की इस घड़ी में वे प्रभावित परिवारों के साथ हैं। मुख्यमंत्री ने मृतक के परिजनों को चार-चार लाख रुपए अनुग्रह अनुदान देने के निर्देश दिये हैं। मुख्यमंत्री ने लोगों से अपील की है कि सभी लोग खराब मौसम में पूरी सतर्कता बरतें। खराब मौसम होने पर वज्रपात से बचाव के लिये आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा समय-समय पर जारी किये गये सुझावों का अनुपालन करें।

सीएम नीतीश ने एसीएस संदीप पौंड्रिक की मां के निधन पर जताया शोक

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उद्योग विभाग के अपर मुख्य सचिव संदीप पौंड्रिक की मां के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने अपने शोक संदेश में कहा है कि मां का निधन असहनीय और अपूरणीय क्षति होता है। मुख्यमंत्री ने दिवंगत आत्मा के चिर शांति तथा उनके परिजनों को दुख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है।

केंद्रीय वित्त मंत्री सीतारमण से मिले उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी

प्रात : किरण

पटना। उप मुख्यमंत्री सह भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी गुरूवार को दिल्ली में केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान उन्होंने बिहार के विकास और प्रदेश में चल रही विकास योजनाओं को लेकर चर्चा की। वित्त मंत्रालय में हुई इस मुलाकात के दौरान श्री चौधरी ने केंद्रीय वित्त मंत्री से बिहार राज्य के विकास, राज्यहित एवं जनहित से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की। इस मुलाकात में उन्होंने प्रदेश में चल रही विकास योजनाओं को लेकर भी बातचीत की, जो काफी सार्थक रही। इस मुलाकात के दौरान वित्त मंत्री श्री चौधरी ने बिहार में अधिक राशि पहुंच सके जिससे बिहार का और तेज गति से विकास हो सके, पर भी चर्चा की। केंद्र सरकार की बिहार में कई योजनाएं चल रही है।

महिलाओं को मिले परिवार नियोजन के विकल्प चुनने का अधिकार: नड्डा

नई दिल्ली/एजेंसी। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जे पी नड्डा ने कहा है कि परिवार नियोजन में महिलाओं को विकल्प चुनने में सशक्त बनाने के लिए केंद्र और राज्यों को सामूहिक रुप से काम करने की जरुरत है। नड्डा ने बृहस्पतिवार को यहां विश्व जनसंख्या दिवस पर आयोजित एक ऑनलाइन सम्मेलन माँ और बच्चे की भलाई के लिए गर्भधारण का स्वस्थ समय और अंतराल की अध्यक्षता करते हुए कहा कि केंद्र और राज्यों को सामूहिक रूप से काम करने की जरूरत है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि महिलाएं परिवार नियोजन के विकल्प चुनने के अपने अधिकार का प्रयोग कर सकें और उन पर अनचाहे गर्भधारण का बोझ न पड़े। उन्होंने कहा कि गर्भनिरोधकों की जरूरतें विशेष रूप से अधिक जनसंख्या वाले वाले राज्यों, जिलों और ब्लॉकों में पूरी करना सुनिश्चित किया जाना चाहिए। इस अवसर पर केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल भी उपस्थित रही। उन्होंने कहा, विकसित भारत का लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब भारत के परिवारों का स्वास्थ्य अच्छी तरह से बनाए रखा जाए, जिसे छोटे परिवारों से प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि परिवार नियोजन कार्यक्रम का उद्देश्य पसंद से और सूचित विकल्प से जन्म होना चाहिए।

प्रधानमंत्री मोदी दो देशों की यात्रा पूरी कर स्वदेश लौटे

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रूस और ऑस्ट्रिया का दौरा पूरा कर गुरूवार सुबह स्वदेश लौट आए। उनका विशेष विमान इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर लैंड हुआ। प्रधानमंत्री रात को ऑस्ट्रिया से स्वदेश रवाना हुए थे। नई दिल्ली पहुंचने पर उनका स्वागत किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व से बातचीत की और द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। ऑस्ट्रिया से रवाना होने के बाद प्रधानमंत्री कार्यालय ने एक्स पर कहा था कि प्रधानमंत्री मोदी ऑस्ट्रिया की सफल यात्रा पूरी करने के बाद नई दिल्ली के लिए रवाना हो गए। प्रधानमंत्री मोदी ऑस्ट्रिया से पहले रूस गए। वहां उन्होंने राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन के साथ 22वें भारत-रूस शिखर सम्मेलन में हिस्सा लिया। प्रधानमंत्री मोदी को पुतिन ने आधिकारिक रूप से ऑर्डर ऑफ सेंट एंड्रयू एपोसल पुरस्कार से सम्मानित किया। यह रूस का सर्वोच्च सम्मान है। रूस के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने ऑस्ट्रिया की यात्रा की। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर कहा, ऑस्ट्रिया की मेरी यात्रा ऐतिहासिक और बेहद सार्थक रही है। हमारी मित्रता में नई ऊर्जा का संचार हुआ है। मुझे वियना में विविध कार्यक्रमों में भाग लेने की खुशी है।

सड़क हादसे में घायलों के इलाज की समूचित व्यवस्था : मयूख

प्रात : किरण

- भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी ने यूपी के डिप्टी सीएम से की बात
- घायलों के इलाज में हर संभव मदद करने का किया आग्रह

पटना। उत्तर प्रदेश के उन्नाव में लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस-वे पर हुये भीषण सड़क हादसे में 18 यात्रियों की मौत पर भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया सह प्रभारी और विधान पार्षद संजय मयूख ने गहरा दुःख जताया है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम सह स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक से फोन पर बातचीत कर मदद करने का आग्रह किया है।

जानकारी के अनुसार, इस सड़क हादसे में बिहार के आठ लोगों की मौत हुई है। वहीं, दर्जन भर लोग गंभीर रूप से घायल हैं। हादसे में मोतिहारी के छह और शिवहर के दो लोगों ने अपनी जान गंवाई है। वहीं, कई अन्य यात्री घायल हैं। भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया सह प्रभारी संजय मयूख के यूपी के डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक से फोन पर बात की है। विधान पार्षद ने यूपी के उप मुख्यमंत्री से घायलों के समुचित इलाज व अन्य व्यवस्था करने का आग्रह किया। डिप्टी सीएम ने विधान पार्षद संजय मयूख को आश्वासन दिया कि सरकार हर संभव कोशिश कर रही है। घायलों के समुचित इलाज की व्यवस्था की गई है।

संक्षिप्त खबरें

कार के टक्कर से ऑटो सवार चार लोग जख्मी

फतुहा। गुरुवार को रेल ओवरब्रिज के समीप फोरलेन पर सामने से जा रहा ऑटो में पीछे से एक ऑल्टो कार ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि ऑटो में सवार सभी चारों लोग घटना का शिकार हो गए। मिली जानकारी अनुसार एक ऑटो पर सवार ड्राइवर समेत चार लोग खुसरूपुर के लोदीपुर से आ रहे थे। जब ऑटो फतुहा फोरलेन ओवरब्रिज के समीप पहुंचा तभी पीछे से आ रही अनियंत्रित मारुति ऑल्टो कार ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि ऑटो में सवार सभी लोग घायल हो गए। घायल लोगों में बालमुकुंद साव के पुत्र नीरज साव, उपेंद्र सिंह का पुत्र रंजीत कुमार, सुरेश प्रसाद का पुत्र भुल्ला कुमार, बालमुकुंद साव का पुत्र अमरेंद्र ठाकुर है। सभी जख्मी मंझौली के रहने वाले हैं। इस घटना में ऑटो ड्राइवर भुल्ला कुमार को ज्यादा चोटें आई हैं। इस संबंध में थानाध्यक्ष रूपक कुमार अंबुज ने बताया कि सड़क दुर्घटना की सूचना वहां पर मौजूद ग्रामीणों द्वारा दी गई। जिसके बाद तत्काल घटनास्थल पर पहुंच कर घायलों को इलाज के लिए सीएचसी लाया गया, जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार कर एनएमसीएच रेफर कर दिया।

एमसीएच वार्ड में लगे परिवार नियोजन मेला का सिविल सर्जन ने किया उद्घाटन

हाजीपुर। सदर अस्पताल के एमसीएच वार्ड में गुरुवार को विश्व जनसंख्या दिवस पर परिवार नियोजन मेला का आयोजन किया गया। इस मेले में लगे पांच स्टॉल परिवार नियोजन के स्थायी और अस्थायी साधनों के बारे में जानकारी दे रहे थे इसके अलावे जननी के दो कैनोपी भी लगाए गए थे। जिसमें एएनएम को बिठाकर परिवार नियोजन से संबंधित लीफलेट वितरण एवं काउंसलिंग किया जा रहा था। मेला का उद्घाटन सिविल सर्जन श्याम नंदन प्रसाद एवं जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ मनोज कुमार द्वारा किया गया। जिला सामुदायिक उत्प्रेरक द्वारा इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह स्टाल पखवाड़ा तक लगा रहेगा एवं काउंसलर इसी स्टॉल पर बैठकर काउंसलिंग कर स्थाई और अस्थाई साधना का वितरण करेंगे। एएनएम स्कूल की बच्चियों के साथ विश्व जनसंख्या दिवस पर रैली निकाला गया साथ ही नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन भी किया गया जिसका मूल आधार छोटा परिवार सुखी परिवार पर आधारित था।

दो वाहनों के बीच टक्कर के बाद गांधी सेतु पर परिचालन प्रभावित

पटना सिटी, महात्मा गांधी सेतु पर हाजीपुर की तरफ पाया संख्या 27 के पास ट्रक और मिक्सर मशीन वाहन में टक्कर हो गया। इस कारण से हाजीपुर से पटना आने वाले लेन पर वाहनों का परिचालन कुछ देर के लिए प्रभावित हो गया। यातायात पुलिस ने बताया कि दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को क्रेन की मदद से किनारे कराया गया। इसके बाद वाहनों की आवाजाही सामान्य हो पायी। स्थिति यह थी कि दुर्घटना के बाद सेतु पर वाहनों की कतार लग गयी थी। सूचना मिलते ही यातायात थाना की पुलिस पहुंची और परिचालन को सामान्य करने में लग गई। यातायात पुलिस ने बताया कि हादसा में कोई हताहत नहीं हुआ है। क्रेन से वाहनों को किनारे करने के बाद परिचालन को सामान्य कर दिया गया है। स्थिति यह थी कि देर रात हुई घटना के बाद गुरुवार की सुबह तक वाहनों का दवाब सेतु पर दिखा।

जनसंख्या नियंत्रण पर पोस्टर प्रदर्शनी व स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित

पटना सिटी, विश्व जनसंख्या दिवस को पर गायघाट स्थित राजकीय महिला महाविद्यालय में छात्रओं के बीच पोस्टर प्रदर्शनी व स्लोगन प्रतियोगिता काआयोजन कराया गया। इसकी अध्यक्षता कॉलेज की प्राचार्या डॉ इला ने की। कार्यक्रम का संचालन गृह विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ मणि किया। आयोजन में डॉ रंजू कुमारी, श्रुति तेतरवे और डॉ निमिषा ने अपने विचार रखे। जागरुकता अभियान के दौरान मानव श्रृंखला भी बनाया गया। प्रतियोगिता में शामिल छात्राओं में प्रीति प्रिया राज, मिताली कुमारी, विशाखा मेहता, नौशिन फातमा को सम्मानित किया गया। शिक्षकों ने भी जनसंख्या नियंत्रण के फायदे के बारे में छात्रों को बताया तो दूसरी ओर छात्राओं ने भी प्रतियोगिता के माध्यम से इसे रेखांकित किया।

जिले में जनसँख्या स्थिरीकरण पखवाड़ा की हुई शुरूआत

सिविल सर्जन ने गर्दनीबाग अस्पताल में परिवार नियोजन मेला का किया उद्घाटन

● पखवाड़ा के दौरान आशा सहित अन्य स्वास्थ्य कर्मी स्वास्थ्य मेला आयोजित कर लोगों को करेंगे जागरूक

प्रात :किरण संवाददाता

पटना- परिवार नियोजन के विभिन्न स्थाई और अस्थाई साधनों के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश से जिले में जनसँख्या स्थिरीकरण पखवाड़ा की शुरूआत की गयी. गर्दनीबाग अस्पताल परिसर सिविल सर्जन डॉ. मिथिलेश्वर कुमार ने परिवार नियोजन मेला का उद्घाटन किया. इस अवसर पर सिविल सर्जन ने कहा कि पखवाड़ा का मुख्य उद्देश्य जनमानस में परिवार नियोजन के अस्थायी एवं स्थायी साधनों के बारे में जागरूकता फैलाना है. पखवाड़ा के दौरान योग्य पुरुष लाभुकों को परिवार नियोजन के लिए नसबंदी की जानकारी देकर उन्हें इसके लिए प्रेरित करना है. उन्होंने बताया कि 11 से 31 जुलाई तक चलने वाले पखवाड़ा के दौरान आशा सहित अन्य स्वास्थ्य कर्मी स्वास्थ्य मेला आयोजित कर लोगों को परिवार नियोजन के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें बास्केट ऑफ च्वाइस उपलब्ध कराएंगे. इस अवसर पर सिविल सर्जन के साथ डीपीएम, डीसीएम गिरीश रंजन ओझा, पीएसआई के वरीय प्रबंधक विवेक मालवीय सहित कई स्वास्थ्यकर्मी मौजूद रहे। जिला स्वास्थ्य समिति के जिला कार्यक्रम प्रबंधक (डीपीएम) विवेक कुमार सिंह ने बताया कि प्रति वर्ष 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जाता है. इस अवसर पर प्रति वर्ष 11 से 31 जुलाई तक जनसंख्या स्थिरीकरण पखवाड़ा मनाया जाता है. इस दौरान सभी योग्य दंपतियों को परिवार नियोजन के अस्थाई और स्थाई साधन के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी देते हुए परिवार नियोजन के साधन अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता है. इस दौरान योग्य दंपतियों को परिवार नियोजन के साधन अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए उन्हें स्वास्थ्य संस्थान ले जाकर महिला बंध्याकरण और पुरुष नसबंदी करवाने कि सुविधा उपलब्ध करवाई जाएगी। जनसँख्या किसी भी राष्ट्र के विकास का मानकः मारूफगंज शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. माला श्रीवास्तव ने बताया कि जनसँख्या स्थिरीकरण पखवाड़ा का उद्देश्य समुदाय में परिवार नियोजन के साधनों के बारे में नए उत्साह से परिवार नियोजन के संदेश को प्रसारित करना है. माता और शिशु का स्वास्थ्य राष्ट्र की उन्नति को देखने का प्रमुख मानक है। वहीं झखरी महादेव शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. सुनीता सिन्हा ने बताया कि परिवार नियोजन के साधन अपनाने से माता एवं उसके शिशु का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और यह उनके परिवार के विकास में सहायक साबित होता है।

इस अवसर पर मारूफगंज शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एवं झखरी महादेव शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में स्वास्थ्यकर्मियों द्वारा जागरूकता रैली निकली गयी।

कार्यपालक अभियंता से मिला भाजपा बिक्रम नगर मंडल का एक शिष्टमंडल

नगर क्षेत्र से संबंधित समस्याओं को लेकर सौंपा ज्ञापन

प्रात :किरण संवाददाता

बिक्रम :- भाजपा बिक्रम नगर मंडल अध्यक्ष तेज नारायण शर्मा के नेतृत्व मे गुरुवार को पार्टी कार्यकताओं का एक प्रतिनिधि मंडल ने बिक्रम नगर पंचायत के कार्यपालक पदाधिकारी संजीव कुमार से मुलाकात की` मुलाकात के दौरान पार्टी नेताओं ने बिक्रम नगर पंचायत में जल जमाव, सड़क, नाली निकास, जल संकट, नगर बाजार में जाम, स्वच्छता व नगर पार्क आदि की समस्यायों से अवगत कराते हुए एक ज्ञापन सौंपा` भाजपा नेताओं ने बिक्रम नगर क्षेत्र की समस्याओं की ओर कार्यपालक अभियंता का ध्यान आकृष्ट कराते हुए निष्पादन की गुहार लगायी` नेताओं ने कहा कि कार्यपालक अभियंता ने हमारी समस्याओं को गम्भीरता से लिया है व जल्द निराकरण का भरोसा दिलाया है` उन्होंने निमानुसार सभी समस्याओं का समाधान करने को कहा है । मुलाकात के दौरान प्रतिनिधि मंडल में उपाध्यक्ष सूर्यनारायण सिन्हा, जिला कोषाध्यक्ष अभिशेख रंजन मोन्टी, महामंत्री योगेश तिवारी मौजूद थे।

अखाड़ा को तय तिथि व समय पर करें पहलगाम, वर्ना कार्रवाई

डीजे पर रोक, मोहर्रम में शांति कायम रख थानाध्यक्ष ने की सहयोग की अपील

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

सुल्तानगंज थाना परिसर में मोहर्रम को लेकर शांति समिति और अखाड़ा कमेटी के खलिफाओं के साथ बैठक गुरुवार को की गई। इसकी अध्यक्षता एएसपी शरथ आरएस एवं थानाध्यक्ष अजय कुमार ने की। बैठक में अखाड़ा कमेटी के आयोजकों एवं शांति समिति के सदस्यों द्वारा विभिन्न अखाड़ा के पहलाम में होने वाली

दिक्कतों के समाधान करने के लिए बारी-बारी से बातों को रखा गया। इसमें सहायक आरक्षी अधीक्षक ने अखाड़ा निकालने के लिए अपने थाना स्तर से आखाड़ा आयोजकों को 20 लोगों के आधार कार्ड के साथ लाइसेंस लेने की बात कही। बिना लाइसेंस के अखाड़ा निकालने पर कानूनी कार्रवाई करने की चेतावनी भी दी। लाइसेंस में दिए गए निर्धारित समय एवं तिथि के अनुसार ही अखाड़ा को पहलाम करना होगा। इसका अनुपालन नहीं जो भी अखाड़ा के लोग नहीं करेंगे, उनका अगले साल से लाइसेंस नहीं दिया जाएगा। बैंड बाजा में डीजे बजाने पर डीजे को जब्त कर लिया जाएगा और उस अखाड़ा के आयोजकों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। मोहर्रम के मौके पर विधि-व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए पत्थर की मस्जिद, तेराहे की मस्जिद, दरगाह चौराहा पर एवं करबला के नजदीक अस्थायी थाना खोला जाएगा। यह सीसीटीवी कैमरे से लैश होगा। इससे सभी अखाड़ा पर निगरानी की जाएगी। पूर्व एवं पश्चिचम इलाका से आने वाले अखाड़ा को बारी-बारी से करबला तक जाने के लिए पत्थर की मस्जिद मोड़ पर बेरियर लगाया जाएगा। इसकी निगरानी पुलिस बल करेगा।पहलाम स्थल एवं उसके नजदीक लगे मेले में पानी का टैंकर, जनरेटर के साथ चिकित्सक दल तैनात रहेगें।पहलाम स्थल से जुड़े लिंक रोड एवं पास पड़ोस की गलियों में आने-जाने वाली महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुलिस बल की गश्ती रहेगी। अखाड़ा को शांतिपूर्वक आगे बढ़ाने के लिए पुलिस स्कॉर्ट साथ में रहेगा। पत्थर की मस्जिद से दरगाह करबला तक उबड़-खाबड़ सड़क को समतल बनाने के लिए राबिश और बालू से दुरुस्त किया जाएगा। बैठक में वार्ड पार्षद बैजू लाल दास, आरजू बेगम, सीमा वर्मा एवं शांति समिति के सदस्यों में गणेश कुमार, रमेश रजक, मुधरंजन कुमार चुन्नी, बसी अख्तर, अनिल यादव, कलीम इमाम, मो फैसल, मो इरशाद बहादुर, अंजुम आलम, छोटू कुमार एवं मंसूर आलम उपस्थित रहे।

स्व. बिश्वम्भर नाथ वर्मा की 16 वीं पुण्य तिथि पर कई कार्यक्रम आयोजित

प्रात :किरण संवाददाता

हाजीपुर।राजनारायण कॉलेज के सभागार में डॉ० केदार नाथ वर्मा मेमोरियल सामाजिक सेवा संस्थान के तत्वावधान में स्व० बिश्वम्भर नाथ वर्मा की १६ वीं पुण्य तिथि पर कॉमेट फाउंडेशन, हैदराबाद द्वारा ह्लकरियर फेस्ट फॉर आईटी प्रोफेशनल्स ह्ल एवं बिश्वम्भर-देवकी (बी० ड़ी०) छात्रवृत्ति वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन राजनारायण कॉलेज, हाजीपुर के प्रधानाचार्य प्रोफेसर (डा.) रवि कुमार सिन्हा ने दिप जला कर किया। कार्यक्रम में डॉ. पवन कुमार यादव, विभागाध्यक्ष, राजनीति शास्त्र विभाग एवं डॉ जे.पी. त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, गणित शास्त्र विभाग सह कोआर्डिनेटर वैचलर ऑफ कम्प्यूटर साइंस की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन श्री जितेन्द्र रंजन (को-फाउंडर, कॉमेट फाउंडेशन एवं संयोजक डॉ० केदार नाथ वर्मा मेमोरियल सामाजिक सेवा संस्थान) ने एवं अध्यक्षता श्री संजय वर्मा (सचिव, डॉ० केदार नाथ वर्मा मेमोरियल सामाजिक सेवा संस्थान) ने किया। इस अवसर पर श्री संजय वर्मा ने संस्थान के वेबसाइट का लोकार्पण किया। श्री वर्मा ने बताया की कैसे युवा इस वेबसाइट के माध्यम से इस संस्थान के कार्यक्रम के बारे में जानकारी ले सकते हैं। इस अवसर पर संस्थान केशशिकांत वर्मा ,श्री मनोज वर्मा और अन्यलोगों ने भी फाउंडेशन एवं संस्थान कार्यों के ऊपर प्रकाश डाला। इस अवसर पर कॉमेट फाउंडेशन के को-फाउंडर श्री जितेन्द्र रंजन ने विस्तृत जानकारी दी की कॉमेट कैसे आईटी क्षेत्र के युवाओं को मुफ्त सलाह दे रही है और इससे अबतक कितने युवाओं ने लाभ उठाया है। श्रध्येय स्व० बिश्वम्भर नाथ वर्मा के पुण्यतिथि ११ जुलाई को हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी गरीबी रेखा से नीचे के नवम वर्ग के बच्चों को छात्रवृत्ति प्रदान किया गया। छात्रवृत्ति श्रीमती देवकी सिन्हा (धर्मपत्नी, स्व० बिश्वम्भर नाथ वर्मा)ने प्रदान किया। छात्रवृत्ति के उदेश्यों पर संस्थान के सचिव श्री संजय वर्मा ने प्रकाश डाला। अंत में कार्यक्रम का समापन डा. अनीता सहाय (प्राचार्य : जयप्रकाश इवनिंग इंटर कॉलेज, हाजीपुर), श्रीमती सुगंधा सिन्हा, श्रीमती अनीता वर्मा, श्रीमती ममता वर्मा, श्रीमती मधु वर्मा एवं श्रीमती बबिता रंजन द्वारा किया गया।

सात आयुष्मान आरोग्य मंदिर को मिला एनक्यूएएस सर्टिफिकेट

गया और मुंगेर के साथ गोपालगंज के तीन स्वास्थ्य केंद्र हैं शामिल

● शहरी और ग्रामीण दोनों जगहों के स्वास्थ्य केंद्र शामिल

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। स्वास्थ्य केंद्र पर मिलने वाली सुविधाओं के आधार पर दिए जाने वाले प्रमाणीकरण में राज्य ने फिर कामयाबी पायी है। इस बार आयुष्मान आरोग्य मंदिर के रूप में कार्यरत राज्य के सात स्वास्थ्य केंद्रों को एनक्यूएएस (नेशनल क्वालिटी एश्योरेंस स्टैंडर्ड) का सर्टिफिकेट मिला है। एचएससी और यूपीएचसी के रूप में कार्यरत यह आयुष्मान आरोग्य मंदिर गोपालगंज,मुंगेर और गया जिले के हैं। इनमें गया और मुंगेर के दो तथा गोपालगंज के तीन स्वास्थ्य केंद्र शामिल है। इन सबों का असेसमेंट मई माह में किया गया था। चार स्वास्थ्य केंद्रों को कुछ विशेष शर्तों के साथ राष्ट्रीय प्रमाणीकरण दिया गया था। राज्य में कुल 17 नेशनल एनक्यूएएस स्वास्थ्य केंद्र नए सात एनक्यूएएस सर्टिफिकेट मिलने से राज्य के खाते में एनक्यूएएस प्रमाणित स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या 17 हो गयी है। इनमें सात जिला स्तरीय अस्पताल, एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र तथा निचले स्तर के सात स्वास्थ्य केंद्रों के अलावा दो शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भी शामिल है। एनक्यूएएस के नेशनल असेसर और मिनिस्ट्री ऑफ फाइनलाइज लक्ष्य के अधिकारी डॉ माहताब सिंह ने बताया कि यह अच्छी बात है कि राज्य के स्वास्थ्य केंद्र ने फिर से एनक्यूएएस के नेशनल असेसमेंट में जगह बनाई है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि यहां के स्वास्थ्य केंद्र पर मिलने वाली सुविधाओं की गुणवत्ता में बढ़ोतरी तो हुई ही है, सेवा प्रदाता के रूप में भी अपनी जगह बना रहे हैं। इससे निश्चित ही निचले स्तर से लेकर उच्च स्तर तक के स्वास्थ्य केंद्रों के बीच स्वस्थ स्पर्धा होगी। वहीं स्वास्थ्य के मानक भी बेहतर होगें।

कैसे और किन मानकों पर होता है असेसमेंट एनक्यूएएस प्रमाणीकरण जनरल क्लीनिक, मेटरनल हेल्थ, न्यू बॉर्न एंड चाइल्ड हेल्थ, टीकाकरण, फैमिली प्लानिंग, संचारी रोग, गैर संचारी रोग, आउटरीच, फामेर्सी, लैबोरेट्री, ड्रेसिंग रूम और इमरजेंसी, जेनरल एडमिनिस्ट्रेशन, वेस्ट मैनेजमेंट, फायर सेफ्टी, इलेक्ट्रिसिटी लोड असेसमेंट शामिल हैं। मानकों के असेसमेंट के लिए चार तरीके हैं जिसमें स्वास्थ्य केंद्र का आबजर्मेशन, स्टाफ इंटरव्यू, रिकॉर्ड रिव्यू और पेशेंट इंटरव्यू शामिल हैं।

डीएम के औचक निरीक्षण में गैर हाजिर पाए गए आईटीआई कॉलेज के प्रिंसिपल और कर्मी, सभी का वेतन अगले आदेश तक के लिए बंद

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

हाजीपुर। जिला पदाधिकारी श्री यशपाल मीणा द्वारा बुधवार को हाजीपुर के हरिवंशपुर में अवस्थित महिला आईटीआई कॉलेज ,आईटीआई महनार तथा सामान्य आईटीआई कॉलेज का औचक निरीक्षण किया गया। औचक निरीक्षण में उक्त तीनों कॉलेज के प्राचार्य और उप प्राचार्य के साथ है प्रायः सभी कर्मी अनुपस्थित पाए गए। जिला पदाधिकारी ने इसे गंभीरता से लेते हुए कर्तव्य से अनुपस्थित सभी तीन प्राचार्य,, सभी उप प्राचार्य एवं सभी अनुपस्थित कर्मियों का वेतन अगले आदेश तक के लिए बंद कर दिया गया है और इनसे 24 घंटे के अंदर स्पष्टीकरण की मांग की गई है। विदित हो कि जिला पदाधिकारी जब निरीक्षण करने आईटीआई कॉलेज में पहुंचे, उस समय मात्र एक निम्न वर्गीय लिपिक , दो कार्यालय परिचारी और एक सफाई कर्मी उपस्थित थे।

चौक थाना परिसर में गमला में इंडोर पौधा लगाया, हुई सराहना

पौधारोपण का कार्य समय की मांग व देखरेख चुनौती : थानाध्यक्ष

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित संस्था छोटा सा प्रयास के द्वारा चौक थाना परिसर में दर्जनों खुशबूदार पौधे का रोपण गमला सहित किया गया। संस्था के अध्यक्ष सुभाष कुमार उर्फ अन्नू कसेरा ने बताया कि थाना परिसर में हरियाली रहने से आगंतुकों को राहत और सुकून मिलेगा। वैसे भी हरियाली खुशहाली का प्रतीक है। संस्था के महासचिव कन्हाई पटेल ने बताया कि जल, जीवन और हरियाली, तभी आएगी खुशहाली। आओ मिलकर कसम खाएं जीवन में दो पेड़ लगाएं। थानाध्यक्ष शशि कुमार राणा ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में किया गया कार्य समय की मांग है और सबसे बड़ी चुनौती भी। सामूहिक प्रयास से बड़े लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। इस अवसर पर संतोष अग्रहरी, राज कृष्णा, सन्नी यादव, आदित्य केशरी, कृष्णा पटेल, श्रवण कुमार आदि शामिल थे।

कैसा लोकार्पण समारोह, जहां जनता व एनडीए कार्यकर्ताओं को जाने से रोका

पटना सिटी आनंद केसरी

● पुलिस ने रोका, तो उलझे भाजपाई, संजीव यादव को सीना व पेट पर हाथ दे रोका, दो मंडल के अध्यक्ष सहित दो दर्जन को बेरिकेडिंग के पास रोका

जेपी गंगा पथ पर मरीन ड्राइव के तीसरे चरण गायघाट से कंगन घाट के बीच का लोकार्पण मुख्यमंत्री नीतीश के कुमार के द्वारा बुधवार को पूर्वाह्न में हुआ। भाजपा नेताओं और कार्यकताओं की टोली जेपी पथ पर आयोजित कार्यक्रम स्थल पर जाना चाह रहे थी, मगर स्थानीय थाना की पुलिस और पुलिस बल के द्वारा कार्यक्रम स्थल से करीब सौ मीटर पहले ही उन सबों को रोक दिया गया। भाजपा किसान मोर्चा के पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष संजीव यादव आगे बढ़ रहे थे। साथ में भाजपा चौक मंडल के अध्यक्ष नवल किशोर सिन्हा, मालसलामी मंडल के अध्यक्ष मनोज साह, बलराम माथुरी, सरदार अजय सिंह चप्पू, त्रिलोक सिंह निषाद सहित करीब 20-25 नेता और कार्यकर्ता थे। इसी दौरान एक पुलिस वाले ने संजीव यादव को रोकते हुए उनके सीने और पेट पर हाथ रखते हुए रोकने की कोशिश की। इस पर संजीव यादव ने आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि वह यहां मुख्यमंत्री के कार्यक्रम में शामिल होने और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने पहुंचे हैं। लेकिन पुलिस वालों ने उनके साथ ऐसा रवैया अपनाया कि मानो वह सब कोई अपराधी हों। श्री यादव के साथ ही अजय सिंह चप्पू, त्रिलोक सिंह निषाद, बलराम माधुरी आदि ने पुलिस के व्यवहार के प्रति आक्रोश जताया। बाद में इंस्पेक्टर प्रभात कुमार सक्सेना, शशि कुमार राणा आदि ने हस्तक्षेप करते हुए लोगों को बैरिकेडिंग तक जाने दिया। बाद में सभी आयोजन स्थल तक गए। भाजपा नेताओं का कहना था कि नेताओं की शोभा उनके पार्टी के नेता और कार्यकर्ताओं से और जनता से होता है। और आप उसी को आयोजन स्थल पर जाने से रोक देंगे तो फिर उद्घाटन समारोह आयोजित करने का कोई औचित्य नहीं रह जाता है। हालांकि पुलिस पदाधिकारी ने उन सबों से आमंत्रण पास या अनुमति पत्र दिखाने को कहा, इस पर भाजपाइयों ने कहा कि उन्हें पार्टी के नेता के द्वारा फोन कर समारोह स्थल पर पहुंचने को कहा गया है, तभी वह सब यहां आए हैं। वैसे भी हमारे स्थानीय विधायक सह बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी, विजय कुमार सिन्हा और सांसद रविशंकर प्रसाद हम सबों के सम्मानित नेता हैं और उनके पास जाने के लिए किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। कारण कि आयोजन सार्वजनिक है, कोई गुप्त बैठक नहीं है कि हम सबों को जाने से रोका जाए। दूसरी और जनता अपने चेहरे पर मुख्यमंत्री के साथ ही स्थानीय विधायक सह विधानसभा अध्यक्ष के साथ ही दोनों डिप्टी सीएम को करीब से देखना चाह रही थी। और हो भी क्यों नहीं। उन सबों को एक बेहतर उपहार जो मिल रहा था। मगर जब एनडीए के नेताओं और कार्यकताओं को समारोह स्थल पर जाने से पुलिस रोक रही थी, तब जनता का कहना था कि ऐसे समारोह की क्या जरूरत, जब जनता और कार्यकताओं को जाने से रोक दिया जाए।

जवानी में की गई इबादत अल्लाह को बेहद पसंद : मो रिजवान

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

अरब के शहर मक्का स्थित अल्लाह के घर खाने काबा का तवाफ कर हज मुकम्मल करने के बाद पटना पहुंचे शेखा का रोजा निवासी मोहम्मद रिजवान आलम और उनकी पत्नी मुमताज का परिवार और मोहल्ले वालों ने पुरजोर इस्तकबाल किया। उन्होंने सभी का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि अल्लाह को सबसे ज्यादा जवानी में की गई इबादत पसंद है। हर नौजवान को चाहिए कि वह अपनी सेहत को खुदा की खास नेमत समझ कर जवानी में खूब इबादत करें। मुमकीन हो तो हज का फर्ज भी जवानी में ही पूरा करें। उन्होंने बताया कि पूरी दुनिया से हज के लिए मक्का पहुंचे मर्द और औरतों ने हिंदुस्तान के साथ सभी मुल्कों में सुकून, प्यार और भाईचारा कायम रहने के लिए दुआ की। फिलिस्तीन में हक की लड़ाई लड़ रहे मजलूम लोगों पर इजरायल की फौज कहर बरपा कर रही है। अल्लाह बच्चों, औरतों और मर्दों की हिफाजत करें। फिलिस्तीनियों की कुबार्नी को काबुल करें और मस्जिदे अक्सा पर उनकी फतह हो। हाजी रिजवान आलम ने कहा कि हाजियों की इन दुआओं को अल्लाह जरूर कबूल करेंगे। उन्होंने सभी मुसलमानों को मुस्तैदी से पांच वक्त की नमाज पढ़ने, कुरआन को पढ़कर समझने और उस पर अमल करने, सूट खाने से बचने, जकात व खैरात करने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर मोहम्मद फैज, मोहम्मद जमील, मोहम्मद एजाज, मोहम्मद फिरोज अंसारी, मोहम्मद मुमताज, खुर्शीद आलम आदि ने हाजी मोहम्मद रिजवान आलम के साथ देश दुनिया में शांति, सौहार्द और मोहब्बत बरकरार रहने के लिए दुआ की।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण
पटना, शुक्रवार, 12 जुलाई, 2024

मक्का अनुसंधान केन्द्र बेगूसराय तथा दरभंगा को विकसित करने की जरूरत : मंगल पाण्डे

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री से मिले कृषि मंत्री, किया अनुरोध

- कृषि मंत्री ने बिहार में कृषि क्षेत्र की तीव्र प्रगति को लेकर की बातचीत

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

बिहार सरकार में कृषि मंत्री मंगल पाण्डे ने गुरूवार को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान से कृषि भवन नई दिल्ली में मुलाकात की। कृषि मंत्री ने बिहार में कृषि क्षेत्र की तीव्र प्रगति के उद्देश्य से केंद्रीय मंत्री से बातचीत की। कृषि मंत्री ने राज्य में कृषि विज्ञान केंद्रों में आधारभूत संरचना विकास तथा नवीनतम फसलों के तकनीकी हस्तांतरण हेतु अतिरिक्त राशि आवंटित कर मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया तथा राज्य में मक्का और मखाना की उत्पादन क्षमता पर प्रकाश डाला और इसे साकार करने के लिए केंद्र से सहयोग का आह्वान किया। कृषि मंत्री ने कहा कि केन्द्र प्रायोजित योजना विशेषकर राष्ट्रीय कृषि विकास योजना एवं कृषोन्नति योजना में बिहार राज्य का उद्व्यय में वृद्धि करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय बागवानी मिशन तथा प्रधानमंत्री सूक्ष्म सिंचाई योजना (प्रत्येक बूंद से अधिक फसल) योजनाओं में किसानों को देय अनुदान की राशि वर्ष 2014 के अनुसार ही दिया जा रहा है। इसलिए इन योजनाओं के कॉस्ट नॉर्म्स को पुनरीक्षित करने की माँग की। साथ ही, उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अंतर्गत प्रत्यक्षण तथा उपादान अनुदान का कॉस्ट नॉर्म्स वर्ष 2018-19 के बाद बदलाव नहीं किया गया है, उन्होंने इसे आज के परिपेक्ष्य में बदलाव करने की माँग की। कृषि मंत्री ने बताया कि राज्य में अवस्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अधीन कार्यरत मक्का अनुसंधान केन्द्र, बेगूसराय तथा राष्ट्रीय मखाना अनुसंधान केन्द्र, दरभंगा को आवंटित प्रक्षेत्र में इन फसलों के राज्य के हित में विकास के लिए समुचित अनुसंधान नहीं किया जा रहा है तथा राज्य के लिए आवश्यक प्रभेदों को विकसित नहीं किया जा रहा है। इन दोनों संस्थानों को भारत सरकार के द्वारा विकसित किया जाये। कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल द्वारा प्रस्तुतीकरण के माध्यम से भारत सरकार से केन्द्र प्रायोजित योजनाओं विशेषकर राष्ट्रीय कृषि विकास योजना) तथा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के विभिन्न अवयवों में राशि आवंटन बढ़ाने का अनुरोध किया गया। साथ ही, उन्होंने बिहार को रबी 2024-25 में दलहन विकास योजना के क्रियान्वयन हेतु मसूर, चना, मटर तथा मूँग के बीज की उपलब्धता के लिए आग्रह किया। विभिन्न फसलों के प्रजनक बीज को सही समय पर उपलब्ध कराने के लिए अनुरोध किया गया तथा दलहनी, तेलहनी तथा मोटे, पोषक अनाज के प्रजनक बीज की उपलब्धता के लिए भारत सरकार द्वारा आवंटित मात्रा को बढ़ाने का अनुरोध किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर के साथ-साथ केंद्र एवं राज्य के कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

सुरक्षा मानकों को लेकर राज्य सरकार संवेदनशील : शीला

पटना। परिवहन मंत्री शीला मंडल ने कहा है कि बसों के कागजात और अन्य सुरक्षा मानकों को लेकर राज्य सरकार संवेदनशील है। यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले किसी भी सूरत में बक्शे नहीं जाएंगे। मंत्री गुरूवार को जदयू कार्यालय में आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम के दौरान उक्त बातें कही। मंत्री ने उन्नाव में हुए भीषण सड़क दुर्घटना पर गहरा दुख जताया। वहीं, मंत्री ने मीडिया से जुड़े सवालों का जवाब देते हुए रुपौली विधानसभा उपचुनाव में एनडीए प्रत्याशी कलाधार प्रसाद मंडल की बड़ी जीत का दावा किया। इससे पहले मंत्री ने जनसुवाई कार्यक्रम में सूबे के विभिन्न जिलों से पहुचें आम जनों की समस्याओं को सुनकर उनके त्वरित समाधान हेतु आवश्यक पहल की। इस मौके पर नवीन कुमार आर्या एवं अरुण कुमार सिंह मौजुद रहें।

चीन की तरह भारत को भी जनसंख्या नियंत्रण के लिए कड़े कानून की जरूरत : गिरिराज

- विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर केंद्रीय मंत्री का बड़ा बयान

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

पटना/लखीसराय। विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने जनसंख्या नियंत्रण को लेकर एक बार फिर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने बढ़ती जनसंख्या पर चिंता जताते हुए कहा कि देश के अंदर 147 जिले ऐसे हैं, जहां तेजी से जनसंख्या बढ़ रही है। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह लखीसराय पहुंचे थे, यहां विद्यापीठ चौक पर बीजेपी कार्यकताओं ने उनका जोरदार स्वागत किया। इस दौरान उन्होंने पत्रकारों से बातचीत के दौरान देश की जनसंख्या पर बात की। उन्होंने कहा कि आज विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जा रहा है। मैंने पहले भी कहा है और आज भी कहता हूं कि देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून की सख्त जरूरत है। गिरिराज सिंह ने कहा, चीन ने दुनिया में विकास का परचम फहराया है। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि वह वन चाइल्ड पॉलिसी लेकर आया। अगर चीन वन चाइल्ड पॉलिसी नहीं लाता तो इस दुनिया में 60 करोड़ लोग और होते। भारत आज दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बन गया है और दुनिया की जितनी आबादी है, उसकी 20 फीसदी आबादी हमारे यहां है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि देश में आज जमीन कम पड़ गई है, लोगों के लिए पीने का पानी कम पड़ रहा है। बढ़ती हुई जनसंख्या एक चुनौती है। इसलिए जैसे चीन ने जनसंख्या को रोकने के लिए कानून बनाया, वैसे ही हमें भी इसकी जरूरत है। हमें ऐसा सख्त कानून बनाना चाहिए, जिसे नहीं मानने वाले नागरिकों के मतदान का अधिकार खत्म कर देना चाहिए और सरकारी सुविधा से वंचित कर देना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि आज देश के अंदर 147 जिले ऐसे हैं, जहां जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। उसका कारण है हिंदू महिलाओं की फर्टिलिटी रेट कम है और मुस्लिम महिलाओं की ज्यादा है। इसलिए देश में आज जनसंख्या नियंत्रण को लेकर कड़ा कानून लाने की जरूरत है।

राजद को मिली करारी हार से हताश हैं नेता प्रतिपक्ष : उमेश

- बोलें- नीतीश कुमार की कृपा से तेजस्वी को नसीब हुआ सत्ता सुख

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने गुरुवार को बयान जारी कर नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव को निशाने पर लिया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की कृपा दृष्टि से तेजस्वी यादव को दो-दो बार बिहार के उप-मुख्यमंत्री का पद नसीब हुआ वरना अपने बलबूते विधायकी जीतना भी उनके बस की बात नहीं थी। श्री तेजस्वी यादव के बयानों से ऐसा प्रतीत होता है कि लोकसभा चुनाव में राजद को मिली करारी हार से हताश होकर वे अपना आपा खो चूकें हैं। श्री कुशवाहा ने कहा कि राजनीति की अंतिम साँसे गिन रही राजद वर्ष 2015 के विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार की बैसाखी के सहारे 80 सीटें जीतने कामयाब हुई थी। हमारे विरोधी भी इस बात को नकारने का साहस नहीं कर सकतें हैं कि आज बिहार में राजद की बचीखुची राजनीतिक प्रासंगिकता नीतीश कुमार की ही देन है। लेकिन अगले साल होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव में राजद का 2010 से भी बुरा हश्र होना तय है, जनता ने अपना मन बना लिया है। श्री कुशवाहा ने कहा कि लोकसभा चुनाव में तेजस्वी यादव दो सौ से अधिक जनसभाएं करने का दावा कर रहें थें लेकिन उनकी सीटें दहाई का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाई। राजद को मिली करारी हार से वे बुरी तरह बौखलाए हुए हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार को लेकर श्री तेजस्वी यादव की संवेदनहीन टिप्पणी में अशिक्षा और संस्कारों के अभाव का गहरा प्रभाव दिखता है। मुख्यमंत्री को लेकर तेजस्वी यादव द्वारा किया गया शब्दों का चयन राजनीतिक मर्यादा के विपरीत है।

सूबे में कानून व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त : अरुण

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश प्रवक्ता अरुण कुमार यादव ने कानून व्यवस्था को लेकर राज्य सरकार पर निशाना साधा है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि प्रदेश में कानून व्यवस्था ध्वस्त है। लोगों में भय व्याप्त है, डरावनी स्थिति बनी हुई है। सत्तापक्ष के विधायक भी कह रहे हैं कि अपराधी पुलिस के संरक्षण में घटनाओं को खुलेआम अंजाम दे रहे हैं। राजद प्रवक्ता ने कहा कि राज्य में अपराधियों का समानांतर सत्ता कायम है। राज्य भर में अपराधी तांडव नृत्य कर रहा है। राज्य में दिनदहाड़े हत्या, लूट, अपहरण, गैंगरेप, डकैती, छिनतई, रंगदारी की घटनाएं हो रही है। लोगों में भय का माहौल व्याप्त है। फिर भी शासन-प्रशासन मूकदर्शक बनी हुई है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव जी आपराधिक घटनाओं पर आंकड़ों के साथ जब सरकार को आईना दिखाते हैं तो सरकार में बैठे लोग सच्चाई स्वीकार करने के बदले तिलमिला जाते हैं। जनता का मूल मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए अनर्गल प्रलाप करने लगते है।

कावंरिया पथ का ससमय गुणवत्ता पूर्ण निर्माण हमारी प्राथमिकता: विजय

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने कहा है कि कावंरिया पथ का ससमय गुणवत्ता पूर्ण निर्माण हमारी प्राथमिकता है। सावन माह में लाखों श्रद्धालुओं द्वारा सुल्तानगंज गंगा घाट से जल लेकर देवघर तक की पैदल यात्रा की जाती है। श्रद्धालुओं के लिए यह यात्रा उनकी आस्था से जुड़ा विषय है। उप मुख्यमंत्री ने विभागीय पदाधिकारियों को निदेश दिया है कि कांवरिया पथ का गुणवत्ता पूर्ण निर्माण ससमय सुनिश्चित किया जाय। कच्ची कांवरिया पथ सुल्तानगंज से देवघर तक 110 किमी है, जिसमें लगभग 84 किमी की दुरी बिहार राज्य के अंदर आती है।

उप मुख्यमंत्री ने संबंधित पदाधिकारियों को निदेश दिया है कि इस पथ में कांवरियों को सुविधा हेतु बालु का बिछाव ससमय पूर्ण किया जाय। साथ ही 5 किमी के वन क्षेत्र में भी श्रद्धालुओं की यात्रा सुगम हो, इस पर ध्यान दिया जाय।

कच्ची कांवरिया पथ, सुल्तानगंज से दुम्मा (झारखण्ड) सीमा तक लगभग लम्बाई 84 किमी बिहार राज्य के अन्तर्गत है। बिहार राज्य के अन्तर्गत यह मार्ग भागलपुर, मुंगेर एवं बांका जिले से गुजरता है। कांवरिया पथ में 4.5 मीटर की चौड़ाई एवं 50 मिलीमीटर की मोटाई में गंगा बालु का बिछाव किया जाता है। पैदल यात्रा में बालु की ठंडक बनाये रखने हेतु नियमित रूप पुरे रास्ते में जल का छिडकाव किया जाता है।

उप मुख्यमंत्री द्वारा निदेश दिया गया है कि कच्ची कांवरिया पथ में बालु बिछाव के उपरांत नियमित रूप से पानी का छिड़काव किया जाय ताकि श्रद्धालुओं को किसी तरह की असुविधा न हो।

उप मुख्यमंत्री द्वारा संबंधित मुख्य अभियंता को निदेश दिया गया है कि कांवरिया पथ का स्वयं भी स्थलीय निरीक्षण कर कार्य की गुणवत्ता बहाल रखना सुनिश्चित कराये।

उप मुख्यमंत्री द्वारा कहा गया कि देवघर बाबा भोलेनाथ के प्रमुख धार्मिक स्थलों में एक महत्वपूर्ण स्थल है। शिव भारतीय सनातन संस्कृति के अराध्य देव है। उनकी पूजा के लिए जानेवाले सभी श्रद्धालु कांवरियों को सभी प्रकार की आवश्यक सुविधा उपलब्ध कराने हेतु सरकार कृत संकल्पित है।

राजद के जंगलराज को नहीं भुलने वाली है जनता : राजीव

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने तेजस्वी यादव से कई सवाल पूछते हुए उन्हें जवाब देने की चुनौती दी। उन्होंने कहा कि जिस राजद ने बिहार को लूट का अड्डा बना दिया था, आज उसके युवराज की राजनीतिक नौटंकी और झूठे बयानों को देख कर शर्म भी शर्मा रही है। राजद के काले कारनामों की कालिख पोंछने में व्यस्त युवराज हर बात पर सवाल उठाते हैं, लेकिन यदि उनसे कोई कुछ पूछ ले तो वह सीधे भाग खड़े होते हैं। वह बताएं कि आखिर किस डर से वह सवालों का जवाब देने की हिम्मत नहीं जुटा पाते? क्या वह वार कर के भाग जाने को ही राजनीति मानते हैं? तेजस्वी से सवाल पूछते हुए उन्होंने कहा कि लाठी और लालटेन को विकास का प्रतीक बताने में जुटे युवराज को बताना चाहिए कि उनके शासनकाल में दलितों, पिछड़ों-अतिपिछड़ों और महिलाओं को उनका हक क्यों नहीं मिलता था? क्यों उनके राज में दलितों, पिछड़ों-अतिपिछड़ों और महिलाओं के आरक्षण को नहीं बढाया गया? वह बताएं कि क्यों उनके राज में गरीबों के वोट लूट लिए जाते थे? वह बताएं कि उनके राज में रंगदारी और अपहरण को उद्योग किसने बनाया था? किसकी शह पर जातीय नरसंहार होते थे? युवाओं के हाथों में कलम की बजाए लाठी और कट्टा किसने थमाया हुआ था? क्यों लोग शाम ढले घर से बाहर निकलने में घबराते थे? जदयू प्रवक्ता ने कहा कि तेजस्वी बताएं कि जिस समय बिहार के युवा पलायन करने पर मजबूर थे, उसी समय उनके पास बिना किसी काम-धंधे के अकूत संपत्ति कहाँ से आ गयी? वह बताएं कि जमीन लेकर नौकरी देने वाले यह लोग मामला खुलने पर भी लोगों की जमीनें क्यों नहीं लौटाते? उन्हें जनता को बताना चाहिए कि उनके शासनकाल में बिहार में सड़क, बिजली, पानी जैसी सुविधाएं लोगों को क्यों नहीं मिल पाती थी? उन्होंने कहा कि राजद के युवराज को जानना चाहिए कि झूठे जुमले उछालने से जनता उनके जंगलराज को भूलने वाली नहीं है। उन्हें समझना चाहिए कि सिर्फ झूठे सवाल पूछने को ही राजनीति नहीं कहते बल्कि पूछे गये सवालों का जवाब देने की कुव्वत भी होनी चाहिए। अगर वह एक झूठा सवाल उछालेंगे तो उनसे 10 सही सवाल पूछे जायेंगे।

लैब टेक्नीशियनों पर पुलिस लाठीचार्ज निंदनीय : भाकपा माले

सरकार उनकी मांग पर करे विचार

पटना। माले राज्य सचिव कुणाल ने कल राजधानी पटना में लैब टेक्नीशियनों पर पुलिस दमन की कड़ी निंदा की है। कहा कि सरकार को उनकी मांग पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करना चाहिए था, लेकिन वह दमन का रास्ता अपना रही है। विदित हो कि 2020 में कोरोना काल में 665 लैब टेक्नीशियानों की संविदा पर बहाली की गई थी। 30 जून को सभी की सेवा समाप्त कर दी गई। इसके पहले भी, जब राज्य में महागठबंधन की 17 महीने की सरकार थी, उनकी सेवा समाप्ति का प्रस्ताव आया था। लेकिन माले विधायक महानंद सिंह ने उनके सवालों को विधानसभा के पटल पर रखा था, और तब जाकर सरकार ने टेक्नीशियनों की सेवा समाप्ति का प्रस्ताव वापस लिया था। लेकिन अब चूंकि एक बार फिर राज्य में जनविरोधी भाजपा-जदयू की सरकार है, उनकी सेवा समाप्ति का फैसला कर लिया गया है।यह कहीं से उचित नहीं है कि 4-5 साल काम करवाने के बाद युवाओं को बाहर का रास्ता दिखला दिया जाए। सरकार संविदा पर काम करने वाले कर्मियों के समायोजन पर गंभीरतापूर्वक व सहानुभूति के साथ विचार करे।

दिनदहाड़े अपराधियों ने खदेड़कर युवक को मारी गोली, मौत

- राजा बाजार के चौधरी टोला गली में हुई वारदात, दहशत का माहौल

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

राजधानी में अपराधी दिनदहाड़े बेखौफ अंदाज में घटनाओं का अंजाम दे रहे हैं। इसी कड़ी में गुरूवार को एक बार फिर एक युवक की गोली से हत्या का मामला प्रकाश में आया है। जानकारी के मुताबिक अपराधियों ने खदेड़कर उसे गोली मार दी। अस्पताल में इलाज के दौरान उसने दम दोड़ दिया। घटना पटना के पॉश इलाका कहे जाने वाले में राजा बाजार के चौधरी टोला गली में हुई। घटना के बाद पूरे इलाके में सनसनी का माहौल बन गया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए पीएमसीएच भेज दिया। पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है। मृतक की पहचान राकेश कुमार 40 वर्ष चौधरी टोला निवासी के रूप में हुई है। पुलिस ने घटनास्थल से एक दीवाल में फंसे हुए गोली के बुलेट को भी बरामद किया है। घटना की पुष्टि करते हुए एयरपोर्ट थाना प्रभारी विनोद पीटर ने बताया कि उनके परिजनों से जानकारी ली जा रही है। बताया जा रहा है कि राकेश कुमार मूल रूप से सीतामढ़ी का निवासी था और पटना के चौधरी टोला में किराए में रहकर बिजली मिस्त्री का काम करता था। बुधवार की देर रात काम से वह अपने घर लौट रहा था। इसी क्रम में पूर्व से घात लगाए अपराधियों ने उन पर एक गोली चलाई जो मिस कर गया। इसके बाद वह खुद को बचाने के लिए भागने लगा। इस बीच अपराधियों ने काफी दूर तक खदेड़कर राकेश कुमार को गोली मारी दी। गोली लगते ही वह जमीन पर गिर गया। इधर, वारदात के बाद अपराधी वहां से फरार हो गए। स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना एयरपोर्ट थाने को दी। रात्रि के वक्त ही राकेश कुमार को एक अस्पताल में भर्ती कराया लेकिन इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। एयरपोर्ट थाना प्रभारी विनोद पीटर ने बताया कि घटनास्थल के आसपास के सीसीटीवी कैमरा को भी खंगाल जा रहा है। पुलिस सभी पहलुओं पर गहराई से छानबीन कर रही है। अपराधियों की तलाश में छापेमारी चल रही है।

महंगाई, बेरोजगारी के लिए डबल इंजन सरकार जिम्मेदार : एजाज

पटना। बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के प्रवक्ता एजाज अहमद ने केन्द्र व राज्य सरकार पर हमला बोला है। राजद प्रवक्ता ने कहा है कि डबल इंजन सरकार ने खाली पड़े नियुक्ति को भरने की दिशा में एनडीए सरकार कोई काम नहीं कर रही है। नौजवानों को भटकाव की दिशा में ले जा रही है। बिहार में सरकार नौकरियों में आरक्षण नहीं देना चाहती है, इसलिए खाली पड़े पदों के नियुक्तियों के विज्ञापन नहीं निकाले जा रहे है। एजाज ने आगे कहा कि बिहार में एनडीए सरकार ने जनता से हर मुद्दे पर झूठ बोला है। बिहार में स्मार्ट सिटी बनाने के नाम पर सिर्फ भ्रष्टाचार हुआ। नगरों का बुरा हाल है। सड़कों में हैं। जलभराव है। गड्ढों के कारण दुर्घटनाएं हो रही हैं। गाड़ियां नहीं चल पा रही हैं। लोगों की जान जा रही है। भ्रष्टाचार के आधार पर निर्मित पुल पुलिया गिर रहे हैं और सरकार के स्तर से इस पर कोई कार्रवाई नहीं हो रही है ऐसा लगता है कि बिहार में सरकार नाम की कोई चीज ही नहीं है। एजाज ने कहा कि बिहार में स्वास्थ्य सेवाएं बेकार हो गयी हैं और व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई है। जहां अब मरीज का ठीक ढंग से देखभाल नहीं हो रहा है और ना ही सही ढंग से इलाज हो रहा है जो दवाइयां तेजस्वी के कार्यकाल में हर अस्पताल में मुफ्त में मिलता था वहां पर अब दवाइयां मिलना बंद हो गया है। और पहले जहां हर अस्पताल में डॉक्टर उपलब्ध होते थे वहां अब डॉक्टर दिखाई नहीं दे रहे है। बेरोजगारी और महंगाई लगातार बढ़रही है। बड़ी संख्या में नौजवान बेरोजगार घूम रहा है। उसे नौकरी की तलाश है। डबल इंजन सरकार पूरी तरह से झूठ पर चल रही है। सरकार के लोग जमीनी हकीकत से दूर हैं। महंगाई के लिए नीतीश सरकार जिम्मेदार है। इनके साथ वाले लोग खूब मुनाफा कमा रहे हैं और किसान को उसकी फसल की कीमत नहीं मिल रही है। ऐसा लगता है कि बिहार में सरकार नाम की कोई चीज नहीं है। सरकार का इकबाल समाप्त हो गया है।

नीतीश कुमार कर रहे बिहार का तीव्र विकास : हिमराज

पटना। जदयू प्रदेश प्रवक्ता हिमराज राम ने मीडिया में एक बयान जारी कर कांग्रेस पर बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने के मामले पर ओछी राजनीति करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कांग्रेस से सवाल पूछते हुए कहा कि केंद्र में यूपीए वन और यूपीए टू की सरकार के दौरान बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की याद नहीं आयी? उन्होंने कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए कहा कि आज महज मीडिया में सुर्खियां पाने के मकसद से ही कांग्रेस नेता इस तरह का बेतुका बयान दे रहे हैं। पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी बिहार के विकास और राज्य की बेहतरी के लिए दिन रात काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विपक्षी पार्टियों को राज्य के लिए विशेष पैकेज और विशेष राज्य के दर्जे की चिंता नहीं करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी पार्टी और हमारे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सालों से बिहार के लिए विशेष दर्जे की जायज मांग की है। उन्होंने कहा कि बिहार के विकास के लिए हमारी पार्टी और हमारे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी ने कई बार इस मांग को दोहराया है। उन्होंने कहा कि बिहार की बेहतरी के लिए हमारे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी सजग हैं और बिहार के विकास के लिए जरुरी जायज मांगों पर वो आज भी कायम हैं। प्रदेश प्रवक्ता हिमराज राम ने इस दौरान आरजेडी पर भी निशाना साधा और कहा कि बिहार को विशेष राज्य के दर्जे के नाम पर केवल राजनीति करने वाली आरजेडी को ये बताना चाहिए कि जब यूपीए सरकार में आरजेडी खुद भागीदार थी और किंगमेकर की भूमिका में तभी उसने बिहार को विशेष राज्या का दर्जा क्यों नहीं दिलाया?

तलाकशुदा मुस्लिम महिला को भरण-पोषण भत्ता देने का फैसला स्वागत योग्य : निखिल

पटना। भाजपा ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय महासचिव डॉ निखिल आनंद ने मुस्लिम तलाकशुदा महिलाओं के लिए भरण-पोषण भत्ते की जरूरत को कानूनी तौर पर मान्यता देने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले की सराहना की है। निखिल आनंद ने कहा कि देशभर में तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं में से 90 फीसदी पिछड़े और अति पिछड़े समुदाय से हैं और इसलिए सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से सबसे बड़ा फायदा पसमांदा मुस्लिम महिलाओं को मिलेगा। निखिल आनंद ने कहा कि भारत के मुस्लिम धर्मगुरुओं का मौलाना-मौलवी तबका और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड जैसी संस्थाओं में बैठे लोग मूलतः सामंती मानसिकता वाले ऊंची जाति के मुसलमान हैं। ये लोग धर्म के नाम पर इन पिछड़े और अति पिछड़े मुसलमानों पर शासन व, तानाशाही करने के साथ ही उनका हर प्रकार से शोषण करना चाहते हैं। निखिल आनंद ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हर प्रगतिशील भारतीय, चाहे वह हिंदू हो या मुस्लिम, सभी को स्वागत करना चाहिए। तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं को गुजारा भत्ता देने संबंधी सुप्रीम कोर्ट का फैसला हर मुस्लिम महिला के मान- सम्मान और अधिकार के लिए जरूरी है, जिसका भारत के पसमांदा मुस्लिम समुदाय को खुलकर जरूर समर्थन करना चाहिए।

जनहित के काम में किसी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी : श्रवण

- समस्तीपुर समाहरणालय में आयोजित बीस सूत्री समिति की बैठक में बोलें मंत्री
- विकास योजनाओं के कार्यान्वन में तेजी लाने का दिए निर्देश

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

ग्रामीण विकास मंत्री-सह जिला प्रभारी मंत्री श्रवण कुमार ने समस्तीपुर समाहरणालय सभा कक्ष में जिला कार्यक्रम कार्यान्वयन (बीस सूत्री) समिति के बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में जिला के जिला पदाधिकारी एवं अन्यस जिला स्तरीय पदाधिकारी एवं सदस्य के रूप में जनप्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। बैठक में जिला स्तरीय सभी विभागों के एक-एक योजनाओं की सूक्ष्मतापूर्वक समीक्षा की गई। जिला में चल रही विकास योजनाओं के कार्यान्वन में तेजी लाने तथा उसे जनता के लिए सर्व सुलभ बनाने हेतु मंत्री ने आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में कुछ जनप्रतिनिधियों ने पदाधिकारी के उदासीन रवैया की ओर मंत्री का ध्यान आकृष्ट किया। इस विषय को मंत्री ने काफी गंभीरता से लेते हुए उन्हें हिदायत दी कि जनहित के काम में किसी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा करते हुए मंत्री ने जनता को स्वास्थ्य सुविधाओं को सुलभ कराने के लिए स्वास्थ्य विभाग के संबंधित पदाधिकारी को निदेशित किया गया। इसी प्रकार लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग की समीक्षा करते हुए पेयजल की समस्या उत्पन्न नहीं हो इस पर खास ध्यान रखने की ओर उन्हें कहा गया। संभावित बाढ़ की स्थिति का आकलन कर उससे उत्पन्न होने वाली खतरे के रोकथाम हेतु आवश्यक कदम उठाने के लिए भी पदाधिकारी को निदेशित किया गया। उक्त बैठक में समस्तीपुर जिला के जिला पदाधिकारी, उप विकास आयुक्त, निदेशक जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, अनुमंडल पदाधिकारी समस्तीपुर, प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचल अधिकारी एवं अन्य कई पदाधिकारी उपस्थित थे।

पर्यटन मंत्री ने ताज सिटी सेंटर को पर्यटन नीति के तहत आशय पत्र सौंपा

- होटल ताज सिटी सेंटर के जेनरल मैनेजर को दिया गया लेटर ऑफ इंटेंट
- पर्यटन नीति के तहत राज्य में हुआ है पहला बड़ा निवेश

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा ने गुरुवार को राजधानी में बनाए गए उच्च स्तरीय पांच सितारा होटल ताज सिटी सेंटर के नई पर्यटन नीति के तहत शुभारंभ का आशय पत्र (लेटर ऑफ इंटेंट) सौंपा। इस अवसर पर पर्यटन विभाग के सचिव अभय कुमार सिंह व निदेशक विनय कुमार राय भी उपस्थित थे। पर्यटन मंत्री ने होटल ताज सिटी सेंटर के जेनरल मैनेजर श्री सिद्धार्थ जैन को आशय पत्र (लेटर ऑफ इंटेंट) प्रदान किया। इस अवसर पर मंत्री नीतीश मिश्रा ने कहा कि राज्य की नयी पर्यटन नीति के तहत राज्य में किसी बड़े होटल समूह का यह पहला बड़ा निवेश है। कुल 236 करोड़ रुपये की लागत से बने उच्च सुविधा युक्त पांच सितारा होटल की अब शीघ्र ही शुरूआत होगी। ताज के आने के बाद राज्य में होटल उद्योग का और भी विस्तार होगा और पर्यटकों के साथ बिहार के निवासियों को राजधानी में उच्च गुणवत्ता युक्त होटल की सुविधाएं मिलेगी। पर्यटन सचिव अभय कुमार सिंह ने कहा कि नई पर्यटन नीति के तहत राज्य में पर्यटन उद्योग में निवेश करने पर कई प्रकार की सुविधाएं दी जा रही है। यह खुशी की बात है कि पहले प्रस्ताव को क्लियरेंस मिल गया है। उन्होंने देश भर के निवेशकों को बिहार के पर्यटन सेक्टर में निवेश करने के लिए आमंत्रित किया है।

महासंघ गोप गुट ने एएनएम का हौसला अफजाई किया : प्रेमचंद

पटना। कर्मचारी नेता एवं महासंघ गोप गुट के महासचिव प्रेमचंद कुमार सिन्हा ने कहा है कि लगभग पूरे प्रदेश में गुरूवार को चौथे दिन भी एफआरएएस के विरोध में संविदा एएनएम का कार्य बहिष्कार जारी रहा। विभिन्न जिलों में आंदोलनरत संविदा अठट की बैठक की गई एवं महासंघ (गोप गुट) के राज्य स्तरीय एवं जिला स्तरीय नेताओं ने हौसला अफजाई किया। नेताओं ने कहा कि कोई भी एनएचएम कर्मी अस्पताल देर से नहीं पहुंचना चाहता है लेकिन कहीं सार्वजनिक परिवहन देर से चलना कारण बनता है, कहीं रेल का बंद फाटक और कहीं घर से अस्पताल के बीच की कई किलोमीटर की दूरी क्योंकि एएनएम एवं एनएच एम कर्मियों के पास रहने के लिए अस्पताल में या अस्पताल के आसपास सरकारी आवास उपलब्ध नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में उप स्वास्थ्य केंद्रों के आसपास किराए का भी घर उपलब्ध नहीं होते हैं। नेताओं ने आगे कहा कि देर से अस्पताल जाने या जल्दी अस्पताल से वापस आने के अनेक वास्तविक कारण हो सकते हैं यहां तक की विद्युत आपूर्ति के बाधित होने या तकनीकी रूप से इंटरनेट जैसी सेवाओं के संचालन में प्रायः समस्या रहती है। इसलिए एफआरएएस द्वारा उपस्थिति बनाना वर्तमान में संभव नहीं है। इसलिए कर्मचारी नेताओं ने मांग किया है कि व्यावहारिक पक्ष को ध्यान में रखकर राज्य सरकार को अविलंब एफआरएएस वापस लेने का आदेश निर्गत करनी चाहिए अन्यथा कार्य बहिष्कार जारी रहेगा। भोजपुर में उमेश कुमार सुमन, बक्सर में महेंद्र प्रसाद, लवकुश सिंह, औरंगाबाद में सतेंद्र कुमार सुशील कुमार चतुवेर्दी, मुजफ्फरपुर में अरुण कुमार, महेंद्र महतो, बीरेंद्र चौधरी, मधेपुरा में सतेंद्र कुमार, विनोद कुमार बिमल, सहरसा में माधव प्रसाद सिंह, पूर्णिया में अरविन्द कुमार सिंह, सुभाष गुप्ता, खगड़िया में चंद्रशेखर मण्डल, मुंगेर में सतीश कुमार सतीश, भागलपुर में गोपाल पासवान, सिवान में भरत यादव, पूर्वी चम्पारण में जियालाल प्रसाद अठट की बैठक कर हौंसला अफजाई किया।

पूर्व मध्य रेल

ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति के तरफ से निम्न कार्य हेतु ई.निविदा आमंत्रित की जाती है।

1. कार्य का नाम एवं स्थान: उप मुख्य विद्युत अभियंता/निर्माण/उत्तर/समस्तीपुर के अधीन मुजफ्फरपुर–वाल्मीकिनगर दोहरीकरण परियोजना के संबंध में 33/11 केवी और एलटी लाइन क्रॉसिंग के ओवरहेड उल्लंघन, विभिन्न स्टेशन, FOB, समपार फाटक, circulating area के इलेक्ट्रिक कार्य और किसी अन्य जगह पर कार्य करने के लिए खुली निविदा।
e-Tender No. EL/C/N/MHX/ETEN/03/24-25
2. अनुमानित कार्य की लागत: रु. 11,26,52,813.49, 3. जमा किए जाने वाले बयाना राशि एवं निविदा प्रपत्र का मूल्य: NIT के अनुसार एवं रु. शून्य, 4. कार्य पूर्ण करने का समय: 12 माह, 5. निविदा बंद होने का तिथि एवं समय: 01.08.2024 दोपहर 12:00 बजे तक, 6. वेबसाइट विवरण, नोटिस बोर्ड का स्थान जहाँ निविदा की पूर्ण जानकारी देखा जा सकता है तथा कार्यालय का पता जहाँ से निविदा प्रपत्र खरीदा जा सकता है: आई.आर.इ.पी.एस. वेबसाइट www.ireps.gov.in पर निविदा डाउन लोड किया जा सकता है एवं सीईई/कॉन महेन्द्रूघाट, कार्यालय सीएओ/कॉन ईसीआर ऑफिस परिसर, पटना 800004 में निविदा पट पर देखा जा सकता है।

हिन्दी एवं अंग्रेजी की सूचना में किसी प्रकार की भिन्नता पाये जाने पर अंग्रेजी में प्रकाशित सूचना को सही माना जायेगा।

उप मुख्य विद्युत अभियंता/निर्माण/उत्तर
पूमरे/महेन्द्रूघाट/पटना

पीआर/00664/सीओएनएन/ईएलईसी/टी/24–25/40

संक्षिप्त खबरें

बीसीईसीई प्रवेश प्रतियोगिता परीक्षा 13से 24केन्द्रों पर

बिहार संयुक्त प्रवेश प्रतियोगिता परीक्षा पर्षद, के तहत बीसीईसीई परीक्षा का आयोजन 13 जुलाई को 24 परीक्षा केंद्रों पर किया गया है। परीक्षा का आयोजन चार पालियों में 9 बजे पूर्वाह्न से 10:30 बजे पूर्वाह्न, 11 बजे पूर्वाह्न से 12:30 बजे अपराह्न, 2 बजे अपराह्नसे 3:30 बजे अपराह्न एवं 4 बजे अपराह्न से 05:30 बजे अपराह्न तक होगी। यह जानकारी जिला प्रशासन द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में दी गई है। स्वच्छ, पारदर्शी एवं कदाचार मुक्त परीक्षा के संचालन तथा विधि-व्यवस्था संधारण हेतु जिला दण्डाधिकारी, मुजफ्फरपुर तथा वरीय पुलिस अधीक्षक, मुजफ्फरपुर द्वारा पर्याप्त संख्या में दण्डाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी एवं केन्द्राधीक्षक की प्रतिनियुक्ति की गई है। ड्यूटी पर तैनात सभी अधिकारियों को कदाचारमुक्त परीक्षा का संचालन करने तथा शांतिपूर्ण परीक्षा का आयोजन सुनिश्चित करने का सख्त निर्देश दिया गया है। परीक्षा के सफल एवं सुचारु संचालन सुनिश्चित करने हेतु अपर समाहर्ता विधि व्यवस्था श्री सुधीर कुमार सिन्हा एवं अपर समाहर्ता आपदा प्रबंधन श्री मनोज कुमार द्वारा अधिकारियों की ब्रीफिंग समाहरणालय सभागार में की गई। मनोज कुमार, अपर समाहर्ता, आपदा प्रबंधन, तथा राजेश कुमार, पुलिस उपाधीक्षक, मुख्यालय, पूरी परीक्षा के दौरान विधि-व्यवस्था के वरीय प्रभार में रहेंगे।

सभी थाने में की गई महिला हेल्प डेस्क की स्थापना

मुजफ्फरपुर।जिले के सभी थानों में महिला हेल्प डेस्क की स्थापना कर दी गई है। यह 24 घंटे काम कर रही है। इन महिला हेल्प डेस्क से सम्बंधित सभी महिला पुलिस पदाधिकारी का नाम एवं मोबाइल नंबर सार्वजनिक रूप से साझा कर दिया गया है। इसको लेकर राजकीय महिला पॉलीटेक्निक कॉलेज में महिला थाने और साइबर थाने की ओर से संयुक्त कार्यक्रम आयोजित कर महिला हेल्प डेस्क के महत्व के बारे में लोगों को जानकारी दी गई। एसएसपी राकेश कुमार ने बताया कि महिलाओं की सुरक्षा और सुविधा को ध्यान में रखते हुए महिला हेल्प डेस्क का गठन किया गया है। इसमें महिलाएं निर्भीक होकर अपनी बातों को यहां रख सकेंगी।

बिंदालाल गुप्ता की मौत का मामला पहुँचा मानवाधिकार आयोग

मुजफ्फरपुर । जिला कलेक्ट्रेट में आत्मदाह करने वाले बिंदालाल गुप्ता की एसकेएमसीएच में मौत का मामला मानवाधिकार आयोग पहुँच गया है। मानवाधिकार अधिवक्ता एस. के. झा ने बिहार राज्य मानवाधिकार आयोग व राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में याचिका दायर कर मामले में न्यायिक जाँच की माँग की है। विदित हो कि जमीन पर दखल-कब्जा नहीं मिलने से परेशान होकर छह दिन पूर्व कलेक्ट्रेट में आत्मदाह करने वाले कांटी कस्बा के बिंदालाल गुप्ता की बुधवार की देर रात करीब साढ़े 12 बजे एसकेएमसीएच में मौत हो गई। वर्ष 2014 में उसे तीन डिसिमल जमीन भू-हदबंदी से प्राप्त हुई थी। जिस पर वह घर बनाना चाहता था। लेकिन, पड़ोसी उक्त जमीन पर उसे दखल कब्जा नहीं करने दे रहे थे। वर्ष 2020 में उस पर घर बनाने का प्रयास किया तो आरोपी पड़ोसी ने झोपड़ी गिरा दी थी। आला अधिकारियों तक गुहार के बाद भी उसे जमीन पर कब्जा नहीं मिल रहा था। कई बार कार्यालयों का चक्कर लगाते-लगाते वह परेशान हो गया था। जिसके बाद शुक्रवार की दोपहर कलेक्ट्रेट पहुंच कर उसने शरीर पर ज्वलनशील पदार्थ डालकर आग लगा ली थी। मामले के सम्बन्ध में मानवाधिकार अधिवक्ता एस.के.झा ने कहा कि यह मामला मानवाधिकार उल्लंघन के अतिगंभीर कोटि का मामला है। साथ-ही-साथ यह मौजूदा प्रशासनिक व्यवस्था पर कुठाराघात है। मामले में माननीय आयोग के स्तर से उच्चस्तरीय जाँच की नितांत आवश्यकता है।

अनुसंधान परिषद की बैठक में की गई अनुसंधान परियोजनाओं की गहन समीक्षा

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में 17वें अनुसंधान परिषद (खरीफ) की बैठक के दूसरे दिन लगभग साठ से अधिक अनुसंधान परियोजनाओं की प्रगति की प्रस्तुति की गई। कुलपति डॉ पी एस पाण्डेय, बाह्य विशेषज्ञों डा ए आर पाठक, पूर्व कुलपति नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, डॉ एम वी चेट्टी, पूर्व कुलपति धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय एवं डॉ एस डी शर्मा पूर्व सहायक महानिदेशक आईसीएआर के साथ मिलकर सभी परियोजनाओं की गहन समीक्षा की और जरूरी दिशा-निर्देश दिए। जलवायु अनुकूल कृषि अनुसंधान परियोजना की समीक्षा करते हुए डॉ ए आर पाठक ने कहा कि जलवायु अनुकूल खेती के क्षेत्र में काफी अच्छा कार्य हुआ है। चालीस हजार से अधिक किसानों को प्रशिक्षण दिया गया है इसके साथ ही किसानों को डाटा इकट्ठा करने में भी जोड़ा गया है जो सराहनीय है। पूर्व कुलपति डॉ चेट्टी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन आज की सबसे बड़ी समस्या है। इसे लेकर विश्वविद्यालय में नवोन्मेषी अनुसंधान किया जा रहा है जो देश ही नहीं बल्कि दुनिया भर के लिए उपयोगी साबित होगा। कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने कहा कि जलवायु परिवर्तन को लेकर जो डाटा इकट्ठा किया गया है उसके गहन एनालिसिस की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अनुसंधान से जो निष्कर्ष निकले हैं उसके आधार पर एक पालिसी पेपर विकसित किया जाये ताकि नीति निर्माण करने वाले संस्थानों को एक उचित फीडबैक मिल सके। उन्होंने कहा कि डॉ रत्नेश झा जलवायु अनुकूल खेती को लेकर काफी अच्छा कार्य कर रहे हैं और उन्हें उम्मीद है कि इस अनुसंधान परियोजना से आने वाले समय में कई नई तकनीकें विकसित होंगी जो पूरी दुनिया के लिए लाभकारी होंगी। उन्होंने कहा कि जलवायु अनुकूल खेती को लेकर बिहार सरकार से काफी अच्छा सहयोग मिल रहा है। अनुसंधान परिषद की बैठक कल भी जारी रहेगी जिसमें कई नये प्रभेद और तकनीक रिलीज के लिए प्रस्तुत किए जायेंगे। यदि बाह्य विशेषज्ञों के साथ अनुसंधान परिषद के सदस्य प्रभेद और तकनीक से संतुष्ट होंगे तो उन्हें रिलीज किया जाएगा अन्यथा उसमें सुधार के सुझाव दिए जायेंगे। आपको बता दें कि किसी भी प्रभेद और तकनीक को रिलीज करने से पहले उसे कड़ी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है , यदि कहीं भी कोई कमी पाई जाती है तो उसे पूरा करने के लिए वैज्ञानिकों को सुझाव के साथ उसे रोक दिया जाता है।आज की बैठक के दौरान निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, कुलसचिव डा मृत्युंजय कुमार, निदेशक बीज डा डी के राय, डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा डीन इंजीनियरिंग डॉक्टर अम्बरीष कुमार, डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय, विश्वविद्यालय पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डीन फिशरीज डॉ पी पी श्रीवास्तव, डॉ नीलांजय, डॉ महेश कुमार, सूचना पदाधिकारी डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न वैज्ञानिक एवं शिक्षक उपस्थित थे।

भटके मुक बधिर को नेहरा थाना ने किया सेवा कुटीर के हवाले

प्रात: किरण संवाददाता

मनीगाछी(दरभंगा)। नेहरा थाना पुलिस ने भटके एक मुक बधिर युवक को समाज कल्याण विभाग दरभंगा के सेवा कुटीर विभाग के हवाले गुरुवार को कर दिया है। थानाध्यक्ष राज किशोर राय ने बताया कि 9 जुलाई 2024 को थाना क्षेत्र के पैठान कबई गाँव से सूचना मिली की एक मुक बधिर युवक भटक कर पैठान कबई गाँव आ गया है। सूचना उपरांत पैठान कबई गाँव से उस मुक बधिर युवक को थाने पर लाया गया। लिखकर उससे उनका जानकारी हांसिल करने की कोशिश की गई। उसने अपना नाम विशाल लिखकर बताया है। लेकिन पिता और पता लिखकर नहीं बता रहा है। इसकी सूचना विभागीय स्तर से सोशल मीडिया पर भी दिया गया है। जब 10 जुलाई तक कहीं से कोई जानकारी नहीं मिली तब 11 जुलाई को समाज कल्याण विभाग दरभंगा के सेवा कुटीर विभाग के हवाले कर दिया गया है। सेवा कुटीर विभाग के कॉसलर डा शंकर कुमार यादव एवं फिल्ड कॉडिनेटर जिशान अहमद ने नेहरा थाना पर से उस मुक बधिर युवक को अपने साथ दरभंगा लेकर गए हैं। इस संबंध में सेवा कुटीर विभाग के कॉसलर डा शंकर कुमार यादव ने बताया कि इसका(मुक बधिर) का काउंसलिंग कर इनसे पूरी जानकारी इकट्ठा कर इनके परिजनों के हवाले किया जाएगा।

जर्जर और बदहाल सड़क के जीर्णोद्धार को लेकर आंदोलन की चेतावनी

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के बंदरा प्रखंड की लाइफलाइन कहीं जाने वाली पिलखी पुल से लेकर सैदपुर तक की सड़क काफी जर्जर और बदहाल हो चुकी है। इस सड़क के जीर्णोद्धार के लिए पिछले कई वर्षों से सारे जन प्रतिनिधियों से आग्रह किया गया। लेकिन अबतक किसी ने इसके जीर्णोद्धार की पहल नहीं की। क्षेत्र की आम जनता इस सड़क के जीर्णोद्धार के मुद्दे पर जन आंदोलन को अंतिम विकल्प मानने लगी है। गायघाट सामाजिक मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुबोध कुमार सिंह ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए इस सड़क के जीर्णोद्धार के लिए जन आंदोलन करने की चेतावनी दी है। उन्होंने कहा है कि अगर अगस्त तक इसका कोई निदान नहीं निकलता है तो सितंबर के प्रथम सप्ताह से गायघाट सामाजिक मंच इस मामले को लेकर मुजफ्फरपुर जिलाधिकारी कार्यालय के समक्ष क्षेत्र की जनता के साथ निर्णायक आंदोलन किया जाएगा। वे बंदरा प्रखंड की पिलखी -सैदपुर मार्ग के जीर्णोद्धार के लिए नवनिर्वाचित सांसद सह केंद्रीय जल शक्ति मंत्री डॉ राजभूषण चौधरी निषाद से मुलाकात कर इस सड़क के जीर्णोद्धार कार्य को अपने एजेंट में प्रथम सूची में डालने की मांग कर चुके है। इस प्रखंड के तेज तर्रार ,युवा सामाजिक कार्यकर्ता धीरज कुमार बताते हैं कि बूढी गंडक के पिलखी घाट पर पुल निर्माण कार्य आज से 12साल पहले हुआ। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इस पुल का 2012 में उद्घाटन किया था।इस स्थल पर पुल निर्माण की मांग आधी सदी पुरानी थी।इसके पूरा होने से बूढ़ी गंडक के उत्तरी क्षेत्र की बड़ी आबादी को नाव से नदी पार करने से मुक्ति मिली लेकिन पुल के उत्तरी पहुंच पथ के हरपुर बांध से पियर ,रतबारा ,तेपरी,होते हुए समस्तीपुर जिला सीमा पर स्थित सैदपुर को जोड़ने वाली करीब 13किमी सड़क का जीर्णोद्धार आजतक नहीं हो पाया। सड़क में दर्जनों जगह पर बड़े बड़े गड्ढे बने हुए हैं जिसमे हमेशा घुटना भर पानी जमा रहता है। जिसकारण बैंक , स्कूल,डाकघर , सैदपुर हाट आदि आने -जाने बालों को काफी परेशानी होती है। बरसात के मौसम में सड़क पर काफी जलजमाव रहता है ,जिससे गुजरते हुए राहगीर दुर्घटना के शिकार होते रहते हैं।धीरज बताते हैं कि इस दिशा में वे अधिकारियों समेत सांसद और विधायक का भी अनेकों वार ध्यान आकृष्ट करा चुके हैं लेकिन अबतक सडक का जीर्णोद्धार नहीं कराया जा सका।इस सड़क कू मुद्दे पर जन आंदोलन के सिवा दुसरा कोई रास्ता नहीं बचा है।

दतुआर विद्यालय का निरीक्षण सदर एसडीओ अश्विनी कुमार ने किया

प्रात: किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली प्रखंड क्षेत्र के दतुआर पंचायत में गुरुवार को सदर एसडीओ अश्विनी कुमार ने जनवितरण प्रणाली दुकान प्राथमिक मध्य विद्यालय मनरेगा योजना आँगनबाड़ी केंद्र जलनल योजना सहित अन्य योजनाओं का जाँच पड़ताल किया गया. वही सदर एसडीओ ने जनवितरण प्रणाली दुकानदार रामफल सदाय की दुकान पर पहुँच कर स्ट्रॉक पंजी, वितरण पंजी को पाऊस मशीन से मिलान करने पर सही पाया गया.सदर एसडीओ ने उत्क्रमित मध्य विद्यालय दतुआर , राजकीय मध्य विद्यालय लक्ष्मीपुर, प्राथमिक विद्यालय दतुआर में निरीक्षण के दौरान विद्यालय में मध्याह्न भोजन चालू था। वच्चों की उपस्थित थी. उन्होंने आँगनबाड़ी केंद्र की निरीक्षण के दौरान आँगनबाड़ी केंद्र पर वच्चों की उपस्थित पाया गया। आईसीडीएस के नियमानुसार आँगनबाड़ी केंद्र पर वच्चों के बीच पोषाहार दी गयी. वही सदर एसडीओ ने दतुआर पंचायत सरकार भवन पर पंचायत सचिव,मुखिया बबलू महतो से पंचायत में चल रहे विभिन्न योजनाओं की जानकारी ली। उन्होंने पंचायत में स्थल पर पहुँच कर योजना की जांच पड़ताल की.इस मौके पर मुखिया बबलू महतो,पंसस श्रीनाथ नाग मणि, झौली पासवान, पंचायत सचिव सहित अन्य कर्मी मौजूद थे।

कमला बलान के पानी से चार पंचायत घीरा, लोगों को सिर्फ नाव का सहारा

प्रात: किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)(आससे)। प्रखंड के कुल नौ पंचायत में चार पंचायत कमला बलान तटबंध के पेट मे बसे बाढ़ से घिर गया है जिसे लोगों को सिर्फ नाव पर ही आश्रित होना पड़ रहा है। बता दें कि कोसी एवं कमला बलान नदी का जलस्तर में अचानक तेजी से वृद्धि होने लगी है। जिससे कमला बलान नदी के पश्चिमी तटबंध से पूरब बसे प्रखंड के चार पंचायतों में बाढ़ की स्थिति गंभीर होती जा रही है। कमला बलान नदी का पानी उछाल लेकर अब गांव में प्रवेश करने लगी है। जिससे लोग एक बार फिर संभावित बाढ़ को लेकर दहशत में आ गया है। बीती बुधवार को लगातार 24 घंटे तक दोनों नदी के जलस्तर में कमी होने के बाद अचानक रात से जलस्तर बढ़ने लगी। जिससे कमला बलान नदी का पानी चौकीया,लक्ष्मीनिया, इटहर इटहर पोखर बिसुनिया, जिमराहा बलथरवा गांव में घुसने लगा है।चौकीया इटहर गांव तक जाने वाली पीसीसी ढ़लाई सड़क पर ढ़ाई फीट से अधिक पानी बह रहा है। जिससे लोगों को एक गांव से दूसरे गांव तक जाने में अब बाढ़ के पान में धस कर जाना पड़ता है। इटहर पंचायत के चौकीय, बलथरवा, इटहर, इटहर पोखर, बिसुनिया, जिमराहा गांव के किनारे बसे लोगों के घरों में बाढ़ का पानी घुसने की संभावना बन गया है। जिससे गांव के किनारे बसे लोगों को विस्थापित होने की चिन्ता सताने लगी है। इन गांवों के लोगों को गांव से बाहर निकलने के लिए नाव एक मात्र साधन है। इधर कोसी नदी का जलस्तर भी तेजी से बढ़ रही है। जिससे झाझा, कोदरा, सिमरटोका बुढ़िया सुकराती, तिलकेश्वर मुशहरी तथा सिमराही गांव के सड़क पर बाढ़ का पानी चढ़ गया है। उजुआ सिमरटोका पंचायत के ग्रामीण बिपिन कुमार , शिवनारायण मुखिया प्रमोद सदा, सचिन यादव, सहित दर्जनों लोगों का कहना है कि गांव से मुख्यलय जाने के लिए निजी नाव से जाने आने जाने में 50 से 60 रुपये खर्च पर जाता है। अगर कोई रात विरात जातुरी ओढ़ जाय तो लोगो को गाँव मे ही ग्रामीण चिकित्सक से इलाज कराने को मजबूर होते हैं। लोगों को गांव से निकलने के लिए नाव के सिवा अन्य कोई साधन नहीं है। छोटकी कोनिया, बड़की कोनिया,हरिनाही, उसरी, सगरदीना, सिमरटोका, झाझा, बुढ़िया सुकराती,अरथुआ, महादेव मठ, तेगच्छा, गोलमा, बहाव, सिमराही तथा तिलकेश्वर मुशहरी गांव के चौर में बाढ़ का पानी फैला हुआ है। जिससे धान की फसल पानी में डुब गई है। दोनों नदी के जलस्तर अचानक तेजी से बढ़ने की वजह से एक फिर पश्चिमी तटबंध से पूरब प्रखंड के चार पंचायतों के अलावा भिण्डुआ पंचायत के गोबराही तथा सुघराईन पंचायत के भरैन मुशहरी पर बाढ़ का खतरा मंडराने लगा है। इस संबंध में पूछे जाने पर पूर्वी सीओ गोपाल पासवान ने बताया कि दोनों नदी के जलस्तर में तेजी से वृद्धि हो रही है। विभिन्न मार्गों पर 19 नावें चलाया जा रहा है। नदी के जलस्तर में वृद्धि का रफ्तार जारी रहा तो विस्थापित होने की समस्या उत्पन्न हो सकती है। उन्होंने लोगों से नदी में स्नान सहित अन्य कार्य करने नहीं जाने की अपील किया है।

मिथिलांचल को मैं कभी भूल नही सकता : कीर्ति

प्रात: किरण संवाददाता

बेनीपुर(दरभंगा)। तृणमूल कांग्रेस के दुगार्पुर से सांसद कीर्ति झा आजाद का 10 जुलाई की शाम को बेनीपुर नगर परिषद कार्यालय में जोरदार स्वागत मुख्य पार्षद, पार्षद सहित आमलोगों ने किया। उन्हें पाग, चादर, माला पहनाकर सम्मानित किया गया तथा मिथिला पेंटिंग आदि भेंट की गई। श्री आजाद ने कहा कि मिथिला को मैं कभी भूल नहीं सकता। दरभंगा से पहली बार सांसद बना और तीन बार तक जनता का स्नेह मिलने से सांसद बनता रहा। दरभंगा मेरा परिवार है। इससे अलग नहीं रह सकता। क्षेत्र के लोगों को जब भी मेरी आवश्यकता पड़ेगी मैं उनके लिए खड़ा रहूंगा। सांसद ने कहा कि राजनीतिक परिवेश बदल गया है। जुझारू सांसद ने कहा कि मुझे इस बात का फख्र है कि मैं चादर पाग और माला पहनने वाला सांसद नहीं बना। जन समस्या को लेकर मैं उंगली उठाने वाला था। जनता का ईमानदारी के साथ काम करने वाला ईमानदार व्यक्तित्व का सांसद राजनेताओं को नहीं पच सका । उन्होंने कहा कि जनमानस से लगाव रखने वाले नेता को जनता हमेशा चाहता और अपना प्रतिनिधि बनाते हैं। उन्होंने कहा राजनीतिक परिवेश बदल गया है। भगवा पार्टी की उल्टी गिनती जनता ने शुरू कर दी है।श्री आजाद को वार्ड पार्षद इंदु देवी, सामाजिक कार्यकर्ता आशीष रंजन दास, मुख्य पार्षद आदि पार्षदों ने माला, पाग, चादर, मिथिला पेंटिंग आदि से सम्मानित किया।

सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी के नेतृत्व में विश्व जनसंख्या दिवस मनाया गया

प्रात: किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली सामुदायिक स्वास्थ केंद्र खजौली में गुरुवार को सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी के नेतृत्व विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर मेला का आयोजन किया गया.इस मेला कार्यक्रम का फीता काटकर सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डा. ज्योतिंद्र नारायण द्वारा किया गया.इस मेला के दौरान उपस्थित चिकित्सक जीएनएम एएनएम काउंसलर के द्वारा उपस्थित पात्र लाभार्थियों को परिवार नियोजन से संबंधित स्थायी, अस्थायी साधनों के बारे में विस्तार पूर्व बताया गया.वही एएनएम रानी कुमारी एव जीएनएम सबनम सिन्हा ने उपस्थित पात्र लाभार्थियो को परिवार नियोजन पखवारा का किस वर्ष की थीम , विकसित भारत कि नई पहचान,परिवार नियोजन हर दांम्पत्ति शान थीम के तहत मनाया जाएगा. परिवार नियोजन के लिए सामुदायिक स्तर पर अलख जगाने के लिए 1889 से 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जा रहा है. प्रज्जन स्वास्थ ,गर्भधारण को रोकने के लिए मातृ और शिशु स्वस्थ कल्याण के लिए भी महत्व रखता है. इस विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर इस प्रतिकूल परिद्दश्य में पूरे माह जनसंख्या पखवारा सीएचसी के पोषक क्षेत्र चलाया जाएगा. उन्होंने सभी लाभुक को विस्तार पूर्व समझाया गया.वही परिवार नियोजन काउंसलर पिंकू कुमारी ने उपस्थित लोगों को परिवार नियोजन सहित जनसंख्या वृद्धि के बारे में जानकारी दी. इस मेला के अवसर कोपर्टी, माला एन, अंतरा छाया, कंडोम,पुरुष नसबंदी,महिला नस बंदी के बारे में विस्तार से पात्र लाभार्थियो को जानकारी दी. मौके पर दंत चिकित्सक डा. साहिद इकवाल, आयुष चिकित्सा पदाधिकारी डा. एजाज अहमद,डा. मुस्ताक अहमद,बीसीएम शंम्भू कुमार, पिरामल पीए पंकज कुमार,एएनएम संगम कुमारी, यादव रिकू राजदेव, पीसीआई के प्रखंड कोडिनेटर , आशा फेसिलेटर रिंकू देवी,रूपम देवी, लेखा पाल पलव्वी कुमारी, बीएमई राजन प्रसाद रजत, डाटा ऑपरेटर बबलू कुमार, रामसुंदर यादव, अमरनाथ पंडित,एलटी राघवेंद्र कुमार, स्वास्थ कर्मी उपेंद्र यादव, विनोद राम सहित सभी स्वास्थ कर्मी,पुरुष, महिला सुरक्षा गार्ड उपस्थित थे।

एनसीसी कैडेट्स ने विश्व जनसंख्या दिवस मनाया गया

प्रात: किरण संवाददाता

लालगंज। जी ए हाई स्कूल लालगंज में एनसीसी कैडेट्स द्वारा विश्व जनसंख्या दिवस मनाया गया। एनसीसी पदाधिकारी टी ओ संजय कुमार ने जनसंख्या वृद्धि से होनेवाले समस्याओं के बारे में सभी कैडेट्स को बताया। उन्होंने बताया कि जनसंख्या वृद्धि से शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, कृषि, आवास और भोजन पर असर पड़ता है। अब भारत समेत दुनिया के सभी देश जनसंख्या नियंत्रण के अनेक तरीके अपना रहे हैं और प्रतिबंध लगा रहे हैं ताकि जनसंख्या को नियंत्रित किया जा सके। कैडेट पिंकी कुमारी,सत्यम कुमार और निशा कुमारी द्वारा पेंटिंग प्रदर्शनी लगाई गई। कैडेट अदन राजा, विशाल कुमार तिवारी, हसन राजा, चंचल कुमारी, सोनाली कुमारी द्वारा भाषण दिया गया। इस अवसर पर प्रधानाध्यापक पारसनाथ यादव शिक्षक दिलीप कश्यप,कमलजीत कुमार, सौरभ कुमार, अर्चना कुमारी, स्मिता कुमारी उपस्थित रहे।

अभाविप के प्रो जयशंकर नगर अध्यक्ष व शाश्वत स्नेहिल बने मंत्री

प्रात: किरण संवाददाता

दरभंगा।अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ,दरभंगा नगर सत्र 2023-24 का इकाई पुनर्गठन किया गया। जिसमें मुख्य रूप से अभाविप के विभाग प्रमुख प्रो अमृत कुमार झा, जिला प्रमुख प्रो बिंदु चौहान, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य पूजा कश्यप, प्रदेश सह मंत्री उत्सव पराशर, विभाग संयोजक राहुल सिंह, जिला संयोजक वागीश झा , प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य हरिओम झा एवम जिला सह संयोजक रवि यादव उपस्थित रहे। जिला संयोजक वागीश झा ने नवीन दायित्व की घोषणा करते हुए नए दरभंगा नगर अध्यक्ष प्रो. जयशंकर ,नगर उपाध्यक्ष हेतु प्रो आदर्श कुमार, प्रो. विपुल स्नेही, प्रो अंजनी कुमार चौधरी एवम प्राध्यापक अश्वनी कुमार झा के नाम की घोषणा की.. नगर मंत्री शाश्वत स्नेहिल, नगर सह मंत्री के रूप में मनोहर मिश्रा, नीली रानी, मृत्युंजय कुमार, कुमारी खुशी, युवराज कुमार, शिव सुन्दर सिंह,आकाश कुमार के साथ नगर कोषाध्यक्ष के रूप में रौशन कुमार को दायित्व की घोषणा की गई। अभाविप के आयाम स्टूडेंट्स फॉर डेवलपमेंट (एसएफडी) के नगर प्रमुख सोनम कुमारी, सह प्रमुख आदित्य राज ,नगर एसएफएस प्रमुख मदन मोहन कुमार,सह प्रमुख नेहा पल्लवी ,नगर राष्ट्रीय कला मंच संयोजक आस्था निगम, सह कला मंच प्रणव कुमार झा,नगर सोशल मीडिया प्रमुख रौनक सर्राफ,सह सोशल मीडिया कल्पना कुमारी, कार्यालय मंत्री राकेश साहू , कार्यालय प्रमुख शिव सुंदर को दायित्व दिया गया। नगर एनसीसी प्रमुख श्वेता कुमारी,सह प्रमुख सुशील कुमार,नगर एनएसएस प्रमुख करिश्मा कुमारी,शोध प्रमुख बालकृष्न कुमार वहीं नगर मेडिविजन प्रमुख के रूप में राहुल कुमार,सह प्रमुख आनीश पटेल, विवेक पटेल के नाम की दायित्व की घोषणा हुई। नगर कार्यकारिणी सदस्य के रूप में संजना ठाकुर,आदर्श कुमार ,केशव कुमार ,पिंटू कुमार ,राज कुमार मुखिया ,संजीव कुमार, मानस झा ,अविनाश कुमार, नीलेश मिश्रा, रूपेश कुमार, चंद्रकांत कुमार, सुंदरम ठाकुर, वशिष्ठ कुमार, आदित्य झा, श्याम कुमार, आकाश सहनी, मुकुंद चौधरी,सुमित मिश्र, आलोक कुमार मिश्र , पियूष कुमार के साथ विशेष आमंत्रित सदस्य प्रो. मुन्ना साह, प्रो. विनय कुमार, रितेश राज ,आदर्श आनंद मनोनित हुए। विभाग प्रमुख प्रो अमृत कुमार झा एवम जिला प्रमुख प्रो. बिंदु चौहान ने दरभंगा नगर के सभी नवीन दायित्वधारी कार्यकताओं को शुभकामनाएं और बधाई दी एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। प्रदेश सह मंत्री उत्सव पराशर,राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य पूजा कश्यप ने सभी को शुभकामना दी। कार्यक्रम में प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य विकाश झा,नवनीत रंजन, मनोज मिश्रा , राष्ट्रीय कला मंच संयोजक रौशनी झा, कला मंच जिला सुमेधा श्रीवास्तव, खेलो भारत जिला संयोजक सत्यम झा, एसएफडी संयोजक शशि भूषण यादव सहित दर्जनों कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

मोहर्रम में मनचले व उत्पाद मचाने वाले कि खैर नही : डॉ. मुन्ना खान

प्रात: किरण संवाददाता

दरभंगा।कोतवाली थाना द्वारा आयोजित शांति समित का बैठक थाना अध्यक्ष राहुल कुमार की अध्यक्षता में हुई जिसमें दरभंगा जिला मुहर्रम कमिटी के अध्यक्ष डॉ मुन्ना खान, महासचिव तनवीर आलम ऑफिस बियर्र मो०आफताब आलम, पप्पू सरदार, शांति समिति सदस्य, सरफेआलम तमन्ने, मो० उमर, मो० दिलशाद , मिनतुल्लाह अंसारी, कासिफ इकबाल, इस्माइल अख्तर, सोनू खान, नौशाद अहमद, आसिफ हसनैन, मोहम्मद अरमान, नफीस खान, डॉक्टर वारिस, मोहम्मद मासूम, फैज खान, के साथ साथ दूसरे समुदाय के लोग कई पार्षद उपस्थित रहे, उसी दौरान डॉ मुन्ना खान ने कहा किसी भी तरह के अप्रिय घटना को अंजाम देने वाले बक्शे नही जायेंगे प्रशासन एवं जिला कमिटी की पैनी नजर हर एक वैसे लोगो पर रहेंगी इसीलिए ये त्योहार शांति और सद्भाव का त्योहार है जिसको हम लोग को एक दूसरे के साथ मिलकर शांति के साथ सम्पन्न कराना है हम जिला प्रशासन को सहयोग के लिए ततपर हैं और उनसे सहयोग का आशा करते है मौके पर कमिटी के सचिव तनवीर आलम ने कहा कि दूसरे देश का झंडा लहराना सख्त मना है पकड़े जाने पर जिला मोहर्रम कमेटी के साथ-साथ जिला प्रशासन भी कानूनी कार्रवाई करेगी।

चाचा का बरात निकलना था,वहाँ भतीजा का निकला अर्थी

प्रात: किरण संवाददाता

लालगंज। जिस घर से निकली थी बारात, उस घर से निकली अर्थी, जहाँ मंगल गीत हो रहा था वहाँ चारो तरफ चितकार गुंजने लगा। कल यानी शुक्रवार चाचा का बरात निकलता उससे पहले भतीजा का निकला अर्थी, खुशी माहौल गम में बदल गया लालगंज थाना क्षेत्र के भगवानपुर पकड़ी गॉव के वार्ड 13 निवासी स्वर्गीय अकलू रजक के लड़का 13 वर्षीय मंजेश कुमार की करेंट लगने से मौत हो गयी। स्वर्गीय अकलू रजक के छोटे बेटे सह मृतक मंजेश कुमार का चाचा मनीष रजक का मटकोर था और कल मुजफ्फरपुर बारात जाना था। मरवा मटकोर को लेकर घर में टेंट बाजा लगा था। इसी बीच टेंट वाला कही बाहर निकल गया और मंजेश किसी काम से उस जगह पहुंचा जहाँ टेंट वाला नंगा तार का जाल बिछाए हुए था। बच्चा अचानक उस तार की चपेट में आ गया और उसे करेंट लग गया। बच्चे को करेंट लगा देख उसका चाचा बचाने आया तो उसे भी करेंट का झटका लगा,हालांकि वह बाल बाल बच गया,जबकी बच्चे उसी तार में सटा रह गया। मेन स्विच से लाइन काट कर बच्चे को तार से अलग किया गया,जिसके बाद लोग आनन फानन में उसे लेकर रेफरल अस्पताल लालगंज पहुंचे,जहाँ डाक्टर ने भी उसे मृत घोषित कर दिया। इस हृदय विदारक घटना की जानकारी मिलते हीं काफी संख्या में लोग जुट गये। हंसी खुशी का माहौल अचानक गमगीन हो गया। चारो तरफ चितकार गुंजने लगा। परिजनों का रो रोकर बुरा हाल था। मृतक के पड़ोसी लालगंज प्रखंड उपप्रमुख उषा देवी ने कहा कि घटना की जानकारी स्थानीय प्रशासन को देते हुए परिजनों को आर्थिक मदद दिलाने का प्रयास किया जाएगा। मृतक दो भाईयों में बड़ा भाई था।

संक्षिप्त खबरें

शराब के नशे में देवर ने भाभी के साथ ईट से प्रहार कर गंभीर रूप से किया घायल

जमुई [झाझा] शराब के नशे में एक देवर ने अपनी ही भाभी पर बेरहमी से ईट से प्रहार कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया। मामला थानाक्षेत्र के धोबियाकुरा गांव का है। घायल महिला को उसके पति एवं पुत्री के द्वारा आनन फानन में इलाज के लिए रेफरल अस्पताल में भर्ती करवाया गया जहां डॉक्टर के द्वारा घायल महिला का इलाज किया गया। घायल महिला की पहचान धोबियाकुरा गांव के रहने वाले विनोद मंडल की पत्नी संजू देवी के रूप में हुई है। घायल महिला के पति ने बताया कि मां की तबीयत खराब रहने के कारण मै मां की दवाई लेने के लिए बाजार गया था तभी मेरा छोटा भाई उपेंद्र मंडल ने मेरी पत्नी के साथ मारपीट किया। घायल महिला के पति ने आगे बताया कि एक बीघा मेरे पास जमीन है और मेरी दो पुत्री है जबकि मेरे भाई को भी बंटवारा का उतना ही जमीन मिला है और उसका दो पुत्र है। मेरा भाई मेरी जमीन को हड़पने की कोशिश कर रहा है और इसी बात को लेकर मेरी पत्नी के साथ मेरा भाई नशे में धुत होकर मारपीट कर ईट से प्रहार कर घायल कर दिया। घटना की जानकारी पुलिस को भी दिया गया।

144.17 करोड़ आबादी के साथ भारत बना विश्व चैंपियन : प्रो. शंकर

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष रिपोर्ट- 2024 के अनुसार भारत की जनसंख्या 144.17 करोड़ तो चीन की जनसंख्या 142.5 करोड़ है

प्रात : किरण, संवाददाता

परिचर्चा कार्यक्रम में सम्मिलित प्राध्यापक बृंद

जमुईः-विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर केकेएम कॉलेज के स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग के तत्वाधान में जनसंख्या वृद्धि देश और समाज के लिए वरदान अथवा अभिशाप विषय पर एक परिचर्चा आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता पीजी हेड डॉ. गौरी शंकर पासवान ने की। अपने अध्यक्षीय प्रबोधन में प्रो. (डॉ.) गौरी शंकर पासवान ने कहा कि भारत जनसंख्या की दृष्टिकोण से 144.17 करोड़ के साथ चीन को पीछे छोड़ते हुए विश्व चैंपियन बन गया है। यह देशवासियों के लिए खुशी की बात नहीं बल्कि चिंता और चिंतन का विषय है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष रिपोर्ट के अनुसार पूरे विश्व में भारत की आबादी 144.17 करोड़ तो चीन की 142.5 करोड़ है। सन 1921 में भारत की जनसंख्या 25.1 करोड़ थी। आज देश की अप्रत्याशीत जनसंख्या वृद्धि को देखकर ऐसा लगता है कि परिवार नियोजन के प्रचार प्रसार का देश की जनता पर कोई असर नहीं हुआ है।

2011 की जनगणना के बाद देश में 2021 में जनगणना का नहीं होना देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। नई जनसंख्या नीति बनाने और बाल विवाह पर पूर्ण रोक लगाने की सख्त आवश्यकता है। भारत में सन 1961 में 15 से 19 वर्ष की उम्र की 70% लड़कियां विवाहित थी, जबकि स्वीडन में 3.7 प्रतिशत ही लड़कियां विवाहित थी। आज लड़के और लड़की की शादी की उम्र में वृद्धि कर 25 से 30 वर्ष कर देनी चाहिए। साथ ही आत्म संयम, देर से विवाह आदि कृत्रिम रोक जैसे नियमों का अक्षरशः पालन करना चाहिए। इससे जनसंख्या वृद्धि में कमी आएगी। अन्यथा प्रकृति खुद बा खुद रोक लगा देगी और जनसंख्या नियंत्रित व संतुलित कर देगी। प्रो सरदार राम ने कहा कि जनसंख्या और खाद्यान्न उत्पादन संतुलित है, तो जनसंख्या देश और समाज के लिए वरदान है, लेकिन असंतुलन की स्थिति में यही जनसंख्या अभिशाप बन जाती है। भारत में जनसंख्या विस्फोट की समस्या भयावह है। आज जिस गति से भारत की जनसंख्या बढ़ रही है, वह वरदान नहीं, बल्कि अभिशाप अथवा बोझ है। क्योंकि विकास के जो भी प्रयत्न कियासी जा रहे हैं, वे जनसंख्या वृद्धि के कारण अपर्याप्त सिद्ध हो रहे हैं। डॉ अजीत कुमार भारती ने कहा जनसंख्या वृद्धि एक अंतरराष्ट्रीय समस्या है। इस पर सख्त कानून बनाया जाना चाहिए। भारत में 10 वर्ष पर जनगणना कराने का प्रावधान है, परंतु विडंबना है की 2011 की जनगणना के बाद भारत ने अभी तक अगला जनगणना (2021) नहीं करा पाई है। हमारे देश में 1921 में जनसंख्या वृद्धि में कमी पाई गई थी, और 1921 के बाद वृद्धि में तेजी पाई गई। इसलिए सन 1921 को महान विभाजक रेखा कहा गया. 1921 में भारत की जनसंख्या 25.1 करोड़ थी लेकिन इसके बाद जनसंख्या बेलगाम बढ़ती गई. फलतः आज देश की आबादी 144.17 करोड़ तक पहुंच गई है। इस वृद्धि से देशवासियों को खुश नहीं, बल्कि चिंतित होने की आवश्यकता है। डॉ सत्यार्थ प्रकाश ने कहा कि भारत आज जनसंख्या संक्रमण की दूसरी अवस्था से गुजर रहा है। इस अवस्था में उच्च जन्म दर और निम्न मृत्यु दर तथा जनसंख्या वृद्धि तीव्र होती है। आज देश में जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई है। पुरुषों का जीवन प्रत्याशा 71 वर्ष है तो महिलाओं का 74 वर्ष। जो भी हो देश में एक नई सख्त जनसंख्या नीति होनी चाहिए। भारत चीन की तरह एक बच्चा सबसे अच्छा की नीति लागू करें, तो जनसंख्या वृद्धि पर लगाम लग सकती है। प्रो.डॉ. रूपम कुमारी ने कहा कि जनसंख्या विस्फोट वाकई में आर्थिक सामाजिक विकास के लिए खतरा है। देश के कई प्रदेश जनसंख्या असंतुलन की समस्या से जूझ रहे हैं। जैसे बंगाल, बिहार, असम और उत्तराखंड आदि। आज देश की आबादी 144.17 करोड़, तो विश्व की आबादी 800 करोड़ को पार कर गई है। यदि जनसंख्या वृद्धि की रफ्तार यही रही, तो भविष्य में धरती पर पैर रखने के लिए जगह नहीं मिलेंगे फलतः भोजन हेतु फसल अपने सिर पर उगाना सीखना पड़ेगा। डॉ प्रीति कुमारी ने कहा कि जनसंख्या किसी राष्ट्र के लिए संपति और दायित्व दोनों ही होती है। जनसंख्या राष्ट्र की संपत्ति है तो इसके साथ-साथ दायित्व भी है। क्योंकि जनसंख्या के द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग होता है। वही जनसंख्या के लिए भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, चिकित्सा की व्यवस्था करना तथा रोजगार और संदेश वाहन की सुविधाएं उपलब्ध कराना सरकार का दायित्व होता है। बशर्ते कि जनसंख्या और खाद्यान्न उत्पादन में संतुलन होना चाहिए। मौके पर परिचर्चा कार्यक्रम में श्री रवीश कुमार सिंह, सुशील कुमार, कृष्णागिरी ने जनसंख्या वृद्धि को देश और समाज के आर्थिक- सामाजिक विकास के लिए खतरा बताया है।

प्रसव के बाद महिला की हुई मौत पर दो परिचारिका ने दिया स्पष्टीकरण

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई [झाझा] बीते 5 जूलाई को रेफरल अस्पताल में प्रसव के बाद एक महिला की स्थिति नाजुक होने पर उसकी मौत मामलें में अस्पताल के लेबर रूम के प्रथम श्रेणी परिचारिका पर लापरवाही के लगे आरोप में तीनो परिचारिका से मांगे का स्पष्टीकरण पर दो परिचारिका ने अपना स्पष्टीकरण दिया है। जिसमें सुबह आठ बजे से दो बजे तक कार्यरत परिचारिका सिम्पी कुमारी ने बताया कि संजू कुमारी 12:30 बजे अस्पताल आई थी और 1:58 उसका सामान्य प्रसव हुआ जिसके बाद महिला और उसकी नवजात शिशु की स्थिति सामान्य था। फलस्वरूप आवश्यक दवा आदि देने के बाद अपना प्रभार पारिचारिका सुमित्रा कुमारी सौंपकर चली गई। वही दो बजे से कार्यरत पारिचारिका सुमित्रा कुमारी ने बताया कि उस दिन पारिचारिका सुलेखा कुमारी की डयूटी थी लेकिन वे छुटटी पर रहने के कारण मेरी डयूटी थी वही 7:30 बजे महिला तबीयत अचानक खराब होने के कारण उसे चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर बीके राय के द्वारा सदर अस्पताल रेफर कर दिया। परिचारिका सुलेखा कुमारी ने यह भी बताया कि प्रभारी महोदय द्वारा कहा गया था कि सुमित्रा कुमारी बिना स्वीकृति के कार्य कर रही थी जो बिल्कुल गलत है। कमेटी के जांच रिपोर्ट पर अस्पताल प्रबंधक नवनीत कुमार ने बताया कि कुछ जरूरी कार्य होने के कारण सुमित्रा कुमारी का स्पष्टीकरण अभी नही दिया गया है।

वन महोत्सव सप्ताह पर किया पौधरोपण

गिद्धौर प्रखंड मुख्यालय के परिसर में मनरेगा पीओ ने लगाए दर्जनों फलदार पौधे

प्रात : किरण, संवाददाता

- प्रखंड मुख्यालय परिसर में वन महोत्सव में शमिल मनरेगा कर्मी व अन्य

गिद्धौर। वन महोत्सव सप्ताह 2024 के अवसर पर गिद्धौर प्रखंड मुख्यालय के परिसर में मनरेगा कार्यालय की ओर से पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी विपिन कुमार ने इस मौके पर कर्मियों तथा उपस्थित पदाधिकारी को एक-एक आम का पौधा भेंट कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में हमने पर्यावरण के बदलाव को भयानक गर्मी के रूप में महसूस किया है। जिसका समाधान पौधरोपण है।कार्यक्रम पदाधिकारी विपिन कुमार ने कहा कि गिद्धौर प्रखंड मुख्यालय के परिसर में वन महोत्सव सप्ताह पौधरोपण कार्यक्रम के अनुसार दर्जनों फलदार व औषधी के पौधे लगाए। इस बरसात और भी फलदार पेड़ लगाए जाएंगे। प्रखंड मुख्यालय को हरित कैंपस बनाने में प्रखंड प्रमुरव पंकज कुमार यादव,वीडिओं सुनील कुमार,अंचलाधिकारी आरती भूषण आदि का योगदान रहा। इस मौके पर रिटायर शिक्षक सुशील मनरेगा कर्मी प्रभात कुमार,वर्मा जी,श्याम प्रसाद,सुनील कुमार,ठकुरी मांझी,महेश रावत,मयंक मधुकर,दिनेश कुमार,अजीत कुमार ताँती,अरविन्द सिंह आदि मौजूद थे।

मधेपुरा के बाबा सिंहेश्वर धाम एवं चौसा के बाबा विशु राउत धाम भी राजकीय मेले में शामिल

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा बिहार का देवघर कहे जाने वाले मधेपुरा के बाबा सिंहेश्वर धाम के साथ साथ चौसा के बाबा विशु राउत धाम में भी अब राज्य सरकार द्वारा भव्य मेला का आयोजन किया जायेगा। दरसल राज्य में 14 जगहों पर लगाए जाने वाले श्रावणी मेले की सूची में सिंहेश्वर धाम का नाम नहीं रहने से स्थानीय लोग और श्रद्धालु क्षुब्ध थे। वही इस मामले में राजस्व और भूमि सुधार मंत्री द्वारा सकारात्मक पहल करते हुए इन दोनों जगहों को राजकीय मेला घोषित करते हुए सिंहेश्वर धाम मेला को 15 लाख और विशु राउत धाम, चौसा को 4.50 लाख रुपये की राशि का आवंटन कर दिया गया है। राजस्व और भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल सिंहेश्वर स्थान पहुँचे और भोलेनाथ की पूजा अर्चना करने के बाद राशि के आवंटन की घोषणा की। मंत्री ने कहा कि बिहार और झारखंड अलग होने के बाद सिंहेश्वर धाम मंदिर का अपना अलग महत्व है और बिहार के लिए सिंहेश्वर धाम मंदिर दूसरा बैद्यनाथ धाम मंदिर माना जाता है। राजस्व विभाग द्वारा श्रावणी मेले को लेकर बिहार के कुछ बाबा के धाम के लिए स्पेशल पैकेज का घोषणा किया था जो कि सरकार की सूची में दर्ज है। इसके बाद उन्हें मालूम हुआ कि इसमें सिंघेश्वर धाम का नाम नहीं है। जिसको लेकर सांसद पप्पू यादव, विधान पार्षद ललन सर्राफ, भाजपा नेता स्वदेश कुमार सहित कई लोगों द्वारा उन्हें अवगत कराया गया। वहीं मधेपुरा के डीएम द्वारा भी सिंघेश्वर को इस सूची में जोड़ कर राशि आवांटित करने का आग्रह किया गया था। इसके बाद उन्होंने पटना में स्पेशल बैठक बुलाकर बाबा सिंघेश्वर धाम और विशु राउत धाम, चौसा को राजकीय मेला की सूची में जोड़कर कुल 19.5 लाख रुपये का उप आवंटन किया है।

चलो कलेक्ट्रेट अभियान के तहत निकाली तिरंगा यात्रा

- स्कूली बच्चे, एडीएम को ज्ञापन सौंपते जनसंख्या समाधान फाऊंडेशन के सदस्य

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुईः पूरे देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून लागू करने की मांग को लेकर चलो कलेक्ट्रेट अभियान के तहत जनसंख्या समाधान फाउंडेशन के सदस्यों ने जिलाध्यक्ष शंभू चौधरी उर्फ राकेश चौधरी के नेतृत्व में तिरंगा यात्रा निकाला। यह यात्रा नगर क्षेत्र के पुरानी बाजार मोहल्ला स्थित नरसिंह मंदिर से प्रारंभ होकर पुरानी बाजार, थाना चौक, महाराजगंज, कचहरी चौक होते हुए श्रीकृष्ण सिंह स्टेडियम पहुंच कर समाप्त हो गया। इसके पश्चात फाउंडेशन के सदस्यों ने प्रधानमंत्री के नाम से अपर समाहर्ता सुभाषचंद्र मंडल को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान विभिन्न विद्यालय के छात्र-छात्रा तिरंगा झंडा ओढ़कर, अपने हाथों में तिरंगा झंडा लेकर और जनसंख्या नियंत्रण कानून के लिखे गए तख्ती को लेकर चल रहे थे। जिलाध्यक्ष शंभू चौधरी ने कहा कि वर्तमान समय में बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण हमारा देश गृह युद्ध की ओर बढ़ रहा है। इस देश में बढ़ती हुई महंगाई, गरीबी और बेरोजगारी का सबसे बड़ा कारण सबसे बड़ा कारण असंतुलित आबादी है। सरकार को तुरंत ही जनसंख्या नियंत्रण कानून को पारित करके हम दो सबके दो बच्चों के नियम को लागू करना चाहिए। सभी लोगों को इस कानून का हर हाल में समर्थन करना चाहिए। प्रांतीय सहसंयोजक शंकर प्रसाद और डा.विभूति भूषण ने कहा कि बढ़ती हुई आबादी के कारण हमारे देश का विकास सही तरीके से नहीं हो पा रहा है। इस कानून को लागू करने के लिए केंद्र सरकार को तुरंत पहला करना चाहिए और सभी राज्य को एकजुट होकर इसका समर्थन करना चाहिए। इस देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए यह सबसे सटीक उपाय है। इस मौके पर नगर परिषद उपाध्यक्ष नीतीश शाह, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष उर्मिला देवी, शुभम कलवार,डा राजेश कुमार, नितेश केसरी समेत दर्जनों सदस्य मौजूद थे।

खुटीरही वार्ड 8 में शादी में हर्ष फायरिंग के दौरान एक युवक गंभीर रूप से घायल

प्रात : किरण संवाददाता

कुमारखंड (मधेपुरा) श्रीनगर थाना क्षेत्र के खुटीरही वार्ड 8 में गुरुवार को अल सुबह तकरीबन तीन बजे शादी समारोह के मौके पर डीजे में बज रहे गाने के धुन पर शराती पक्ष से शामिल युवक के द्वारा हर्ष फायरिंग की गई। हर्ष फायरिंग के दौरान एक युवक को जांघ में गोली लगने से खुशी मातम में बदल गई। शादी समारोह में शामिल लोगों के बीच अफरा-तफरी मच गया।गोली लगने से घायल युवक को परिजनों ने इलाज के लिए कुमारखंड सीएचसी में भर्ती कराया।जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार कर बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल मधेपुरा रेफर कर दिया। बताया गया कि श्रीनगर थाना क्षेत्र के खुटीरही वार्ड 8 में सिकेन पासवान की पुत्री की शादी में बुधवार की रात सुपौल जिले के जदिया थाना क्षेत्र के लबधी गुड़िया गांव से बरात आया था। बराती और शराती पक्ष के कुछ युवक डीजे में बज रहे गाने के धुन पर डांस कर रहे थे। इसी दौरान एक युवक हथियार निकाल कर हर्ष फायरिंग करने लगे। हर्ष फायरिंग के दौरान गांव के ही शराती पक्ष के धीरेंद्र सरदार के पुत्र अंकित कुमार को डांस के दौरान गोली दायां जांघ में लगी। थानाध्यक्ष राघवेंद्र नारायण ने बताया कि गुरुवार को अल सुबह कुमारखंड सीएचसी पहुंचकर घायल अंकित कुमार के फर्द बयान लेकर थाने में अज्ञात युवक के विरुद्ध केस दर्ज कर अग्रेतर समुचित कार्यवाई की जा रही हैं।

सीएचसी गिद्धौर की एनएचएम कर्मियों ने फेस ऐप का विरोध कर किया प्रदर्शन, विभाग के खिलाफ की नारेबाजी

प्रात : किरण, संवाददाता

गिद्धौर/जमुई। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गिद्धौर में एनएचएम कर्मियों ने गुरुवार को फेस ऐप का विरोध करते हुए जमकर प्रदर्शन किया। इस दौरान विभाग के साथ-साथ स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय के खिलाफ नारेबाजी की। वहीं एनएचएम कर्मियों ने सिविल सर्जन को आवेदन देकर विभिन्न मांगों को लेकर अनिश्चितकालीन हड़ताल पर जाने की जानकारी दी है। एनएचएम कर्मियों ने एफआरएएस के द्वारा लागू नियम का विरोध करते हुए कहा कि जब तक हम लोगों को सामान काम का सामान वेतन, बैठने की व्यवस्था, शौचालय, पीने के पानी एवं बिजली की समुचित व्यवस्था नहीं की जाती है, तब तक एफआरएएस यानि फेस ऐप द्वारा हाजिरी नहीं दिया जाएगा। हमलोगों के साथ दोहरी नीति अपनाई जा रही है जिससे हमारी परेशानी बढ़ गई है एवं शोषण भी चरम सीमा पर है। कर्मियों ने बताया कि बीते चार माह से वेतन का भुगतान नहीं किया गया है। सामान काम का सामान वेतन नहीं मिल रहा है। ऑनलाइन वर्क का सारा काम एएनएम से करवाया जाता है। नेटवर्क नहीं होने पर घर जाकर विभिन्न कार्यो को करना पड़ता है। इसके बावजूद सभी कार्य के अनुसार वेतन नहीं मिल रहा है। आगे कर्मियों ने कहा कि हमारी जरूरतों को देखते हुए स्वीकृति प्रदान कर हम सभी एनएचएम कर्मियों को स्थाई किया जाए। मौके पर एनएचएम कर्मी माधवी कुमारी, रानी कुमारी, अमृता रानी, दीपाली भारती, आरजू परवीन, निशा कुमारी, श्वेता मेहता, सीता कुमारी, संगीता कुमारी, स्वर्णलता कुमारी, विनीता कुमारी, रुबी कुमारी, सरिता कुमारी सहित अन्य मौजूद रहे।

मौरा गांव निवासी किसान का पुत्र का सब इंस्पेक्टर पद पर हुआ चयन, ग्रामीणों में हर्ष

प्रात : किरण, संवाददाता

गिद्धौर। शिक्षा के प्रति दृढ़ता अगर इंसान में हो तो लाख बाधाएं भी उस इंसान के कामयाब बनने का रास्ता नही रोक सकती उक्त वाक्ये को चरितार्थ कर दिखाया है, गिद्धौर के मौरा गांव निवासी किसान अभिमन्यु यादव के पुत्र अमित कुमार ने। बताते चलें कि बिहार अवर सेवा आयोग के सब इंस्पेक्टर की परीक्षा में अमीत कुमार ने चयनित हो गिद्धौर के मौरा गांव का नाम जिले में रौशन कर दिया है। अमीत कुमार ने मैट्रिक हाई स्कूल धोबघट परीक्षा से उतीर्ण की है। वहीं इंटरमीडिएट एकलव्य कॉलेज जमुई में उतीर्ण की है, वहीं स्नातक की शिक्षा में के एसएस कॉलेज लखीसराय से उतीर्ण कर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगे रहे, जिसमें उन्हें यह सफलता हासिल हुई है।इस सफलता से उत्साहित अमीत कुमार ने जानकारी देते हुए बताया की मेरी सफलता का श्रेय मेरे माता पिता के कड़ी मेहनत को जाता है जिन्होंने मुझे इस मुकाम तक पहूंचाने में काबिल बनाया। वहीं अमीत की इस सफलता पर मौरा पंचायत के मुखिया धनराज यादव के द्वारा फूल माला पहनाकर बधाई दिया मौके पर पंचायत समिति सदस्य दुखन यादव, समाज सेवी देवेंद्र यादव, रामप्रसाद यादव ,पिंटू कुमार यादव, मथुरा यादव, मोहम्मद मुस्ताक अंसारी सहित दर्जनों ग्रामीणों एवं युवाओं में हर्ष व्याप्त है।

तिथि भोजन-बदलेगा मध्याह्न भोजन का टेस्ट, जनप्रतिनिधियों की भूमिका बढ़ी

- स्कूलों में खास अवसरों व पर्व पर विशेष भोजन

प्रात : किरण, संवाददाता

गिद्धौर। अब बिहार के सरकारी विद्यालयों में महाराष्ट्र के स्नेह भोजन, असम के संप्रीती भोजन,आंध्र प्रदेश एवं पंजाब का प्रीति भोजन,कर्नाटक के शैलेगागी नावु नीवु और पांडिचेरी के अन्न दानम की दर्ज पर अब बिहार के सरकारी स्कूलों भी तिथि,भोजन का आयोजन किया जाएगा। इससे बच्चों को परोसे जाने वाले मध्याह्न भोजन का टेस्ट बदलेगा। इस योजना के तहत मुखिया या दूसरे जनप्रतिनिधि के साथ-साथ सामाजिक संगठनों की भागीदारी से बच्चों को विशेष खाना खिलाया जाएगा। 100 दिनों के कार्यक्रम के दौरान कम से कम एक दिन तिथि भोजन का आयोजन किया जाना है। तिथि भोजन का आयोजन विद्यालयों में किसी विशेष अवसर पर राज्य स्थापना दिवस, राष्ट्रीय नायकों का जन्मदिन,विशेष रूप से छात्र व शिक्षक के जन्मदिन एवं अन्य महत्वपूर्ण तिथियों पर किया जा सकता है। बच्चों को खाना परोसने से पहले शिक्षक व रसोईया का पका हुआ खाना खुद चखेंगे।मध्याह्न भोजन योजना के निर्देशक मिथिलेश मिश्र ने डीईओ और डीपीओ एमडीएम को 100 दिन में काम से कम एक दिन तिथि भोजन का आयोजन जरूर कराने का निर्देश दिया है। विद्यालय शिक्षा समिति के बैठक के दौरान तिथि भोजन के आयोजन के संबंध में जनप्रतिनिधियों की भागीदारी को लेकर चर्चा की जाएगी। इसकी संभावनाओं का पता लगाने को भी कहा गया है। इसके बाद तिथि भोजन की जानकारी डीईओ को देनी है। डीईओ इसकी जानकारी निदेशालय को देंगे। इन निदेशों का करना होगा पालन प्राथमिक स्तर पर साढे चार सौ कैलोरी एवं 12 ग्राम प्रोटीन उच्च प्राथमिक स्तर पर 700 कैलोरी एवं 20 ग्राम प्रोटीन स्थानीय रूप से उपलब्ध हरी पत्तेदार सब्जियों से बना खाना मौसमी फल मेनू का करना होगा पालनः तिथि भोजन के मेनू में चावल, गेहूं,श्री अन्न(मिलेट्स), दालों के साथ-साथ हरी पत्तेदार सब्जियों से बना हुआ ताजा पौष्टिक खाना बच्चों के बीच परोसा जा सकता है। जंक फूड एवं बासी खाना नहीं परोसने की विशेष हिदायत दी गई है। इसके अलावा तिथि भोजन के दौरान बच्चों को जंक फूड से होने वाले हानिकारक प्रभावों की जानकारी दी जाएगी ।

श्रीकृष्णा विश्वविद्यालय के संस्थापक सुनीता झा का निधन, शिक्षा जगत में शोक की लहर

प्रात : किरण संवाददाता

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा) उदाकिशुनगंज अनुमंडल मुख्यालय स्थित श्रीकृष्णा विश्वविद्यालय (डिम्ड) के संस्थापक सदस्य प्रो. सुनीता झा का बुधवार की रात्रि निधन हो गया। वह यूभीके कॉलेज के प्राचार्य सह अनुदानित डिग्री कालेज प्रधानाचार्य महासंघ के प्रदेश महासचिव डॉ. माधवेंद्र झा की पत्नी और कम्यूनिटी कॉलेज के निदेशक ई. डॉ. शिप्पू कुमार की माता थी। उनके निधन की खबर से शिक्षा जगत में शोक की लहर छा गया। सुबह होते ही दिवंगत के अंतिम दर्शन के लिए उनके उदाकिशुनगंज स्थित आवास पर इलाके के लोगों की भाड़ी भीड़ जमा हो गई। बीएन मंडल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. अवध किशोर राय, श्रीकृष्णा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अशोक कुमार, बिहार विधानसभा के उपाध्यक्ष सह आलमनगर के जदयू विधायक नरेंद्र नारायण यादव, बिहारीगंज के विधायक निरंजन कुमार मेहता सहित सैकड़ों लोगों ने संवेदना जाहिर की है। बीएन मंडल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ अवध किशोर राय ने अपनी संवेदना में कहा है कि इस दुखद घटना को जानकर मैं स्तब्ध रह गया। सुनीता झा अब नहीं हैं लेकिन शैक्षणिक संस्थान, एस एके विश्वविद्यालय की स्थापना में उनके योगदान को कोई नहीं भूल सकता। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना कि वह दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और शुभचिंतकों को यह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। श्रीकृष्णा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अशोक कुमार ने संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि मौत की गति इतनी तीव्र होगी कभी सोच भी नही पाया।उनके विचारो के सपनो को साकार करने की ताकत हम सबो को प्रदान करे। बिहार विधानसभा के उपाध्यक्ष सह विधायक नरेंद्र नारायण यादव ने कहा कि मौत की खबर सुनकर मन व्यथित है। दुख की घड़ी में इश्वर दिवंगत स्वजन को सहने की शक्ति प्रदान करें।

आलमनगर थाना परिसर में मोहर्रम पर्व को लेकर की गई शांति समिति की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

आलमनगर (मधेपुरा) विधि व्यवस्था बनाए रखने एवं शांतिपूर्ण मुहर्रम पर्व संपन्न हो इसको लेकर थाना परिसर में अनुमंडल पदाधिकारी एसजेड हसन की अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। इस दौरान अनुमंडल पदाधिकारी एस जेड हसन कहा कि मोहर्रम पर्व एवं ताजिया जुलूस के दौरान पारंपारिक बाजे का ही उपयोग कर सकते हैं जुलूस के दौरान अभद्र गाने डीजे बजाना यह सभी पूर्ण रूप से प्रतिबंधित है किसी भी कीमत पर यह जुलूस के दौरान नहीं बजना चाहिए अगर ऐसा होता है तो अगली बार से मोहर्रम का लाइसेंस भी नहीं मिलेगा और साथ ही मोहर्रम कमेटी के सदस्य पर कार्रवाई होगी। इसके अलावा वाहन सहित डीजे जप्त कर ली जाएगी। वहीं इस दौरान उन्होंने वैसे मेला कमेटी को जमकर खरी-खोटी सुनाया जो जागरण कव्वाली सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर भोजपुरी डांस के साथ-साथ अभद्र गाने पर नाच का आयोजन करते है। उन्होंने कहा कि इससे हमारे समाज पर बुरा असर पड़ता है, इससे बचने की जरूरत है। प्रखंड विकास पदाधिकारी निशांत कुमार ने बताया कि आलमनगर प्रखंड क्षेत्र में मोहर्रम कमेटियों के द्वारा लाइसेंस ली जा रही है लाइसेंस मिलने के बाद जिस जिस क्षेत्र में मोहर्रम पर्व मनाया जाएगा मुहर्रम के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को लेकर मजिस्ट्रेट के साथ पुलिस बल तैनात की जाएगी। मोहर्रम पर्व शांतिपूर्ण संपन्न हो विधि व्यवस्था बना रहे इसमें आपकी सहयोग की आवश्यकता पड़ती है और प्रशासन यह आप से अपेक्षा रखता है कि आप नियम के साथ पर्व मनाएंगे और सौहार्द वातावरण में मेला एवं ताजिया जुलूस का आयोजन करेंगे। इस दौरान दरोगा आशुतोष त्रिपाठी, अंचलाधिकारी दिव्या कुमारी, पंचायती राज पदाधिकारी समीक्षा झा, नगर पंचायत कार्यपालक पदाधिकारी रागिनी कुमारी, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर संतोष कुमार एवं कई विभाग के पदाधिकारी व कर्मी के सहित कई लोग मौजूद थे।

सम्पादकीय

नए खुदाओं का प्रशस्तिगान

कलम को बेचो हमें रोटी चाहिए। जब होश संभाली और सबसे पहला नाटक हमने देखा तो इस नाटक में एक भूखा-प्यासा परिवार अपने मुखिया एक लेखक महोदय को यह कहता नजर आता है। तब बहुत असमंजस उस लेखक महोदय को अपनी कलम बेचने पर हुआ था। जमाना पुराना था, वह कलम नहीं बेच पाए। नाटक का अंत हो गया। जब तक उन्होंने कलम बेचने का फैसला किया, लीजिए परिवार ही नहीं रहा। सिसक-सिसक कर दम तोड़ गया। आज किसी को इस नाटक की कथा सुना दें, तो वह लेखक के असमंजस को मूर्खता कहेगा। भई, इंस्टेंट कॉफी का जमाना है। आप कलम बेचने की बात कहते हैं, लोग तो अपना धर्मो-ईमान बेचते हुए दो मिनट नहीं लगाते। पहले मंदिर में सिर झुका कर ईश्वर की साकार प्रतिमा को नवाजते थे, उससे कुछ मांगते हुए भी कतराते थे। अपनी भक्ति, अपना धर्म बेचने की तो बात ही छोड़िए। लेकिन आजकल कृपा निधान की परिभाषा ही बदल गई। जो बहुमंजिली इमारत के ऊंचे मालिकाना चैंबर में बैठा है, वही रोटी तलाशते लोगों को कृपा निधान लगता है। उसके पांव पखारते हुए कितना आत्मतोष मिलता है।

ऊंची कुर्सी पर बैठा आदमी अपने सामने लोगों का झुकना अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है। उनकी घिघियाती हुई आवाज जब उसे किसी गिड़गिड़ाहट की तरह लगती है, तो उसे लगता है, ऐसा तो होना ही चाहिए। आखिर उसने महामारी से प्रकम्पित इस माहौल में भी उनका अन्न दाना नहीं छीना। उनके परिवार के वसीले की आय आधी कर दी। घिघियाते आदमी की नौकरी छीन उसे सडक पर तो नहीं फेंका। अब वह उसे कोर्निश बजा इतना भी न करे, तो भला महाशय का इतना लम्बा-चौड़ा औद्योगिक साम्राज्य किस काम का? पहले जिन कामों को लोग चाटुकारिता कह नीची दृष्टि से देख लेते थे, आज उसे जमाने के अनुसार व्यवहार सिद्ध कहा जाता है। जो कर सकेगा वह कामयाबी की सीढ़ी फलांग लेगा, परंतु सीढ़ी कमंद नहीं कि उसे भी इसी मंजिल के किसी ऊंचे तले पर पहुंचा दे। रहेगा तो वह अपने तले पर ही, पर उसके बारे में ऐसा कोई भुखमरा नाटक लिखने की नौबत नहीं आएगी कि लेखक हो तो अपनी कलम को बेचो, साधारण जन हो तो अपनी आत्मा को बेचो, हमें रोटी चाहिए। रोटी मिलेगी साहिब, जरूर मिलेगी, केवल मालिक के लिए नित्य नई प्रशंसा के विशेषणों का शब्दकोष बनाते रहिए। परंतु इन बातों में आज, कुछ भी अजब नहीं लगता कि जिसके बारे में एक नाटक लिखा जाए। बात इतनी सार्वजनिक हो गई है कि अब इसे देख कोई चिहुंकता भी नहीं।

देखते ही देखते प्रगति और विकास का चेहरा बदल गया। कभी समाजवाद के नाम पर इस देश को मिश्रित अर्थव्यवस्था बना देने का सपना देखा गया था। कहा गया था कि यहां सरकारी क्षेत्र और निजी क्षेत्र सहोदर भाइयों की तरह रहेंगे। सरकारी क्षेत्र का लक्ष्य होगा जनकल्याण और निजी क्षेत्र करेगा देश का द्रुत विकास। जा रे जमाना। यह कैसी नौटंकी जीवन का सच हो गई, विकास की मंजिल हो गई। सरकारी क्षेत्र का जनकल्याण बन गया स्व-कल्याण। देश को प्रगति उपहार के नाम पर मिला परिवारवाद, जो लालफीताशाही के पंखों पर सवार हो नौकरशाही को प्रस्तर प्रतिमा बनने का ऐसा संदेश दे गया कि अपना काम करवाने आए लोगों को अपनी फाइलों के नीचे चांदी के पहिए लगा मधुर स्वर में गायन करना पड़ा कि तेरे पूजन को भगवान मन मंदिर आलीशान। सवाल जब मंदिर को आलीशान बनाने का था, तो जीर्ण-शीर्ण लोगों के मन में कभी आलीशान मंदिर नहीं होते। वहां तो केवल टप्परवास गिरती पड़ती झोंपड़पट्टी है, जो अपने आप को बेच कर बाबू से लेकर अफसरशाही तक की अट्टालिका बना उसे मंदिर का नाम देती है और देश को दुनिया के सबसे अधिक दस भ्रष्टाचारी देशों में स्थान दिला देती है।

जनता के मूड में अचानक बदलाव सारा विश्व चकित

श्रुति व्यास

केवल एक हफ्ते में फ्रांस में जनमत का पेंडुलम अति दक्षिणपंथ से वामपंथ की ओर खिसक गया है। यह बदलाव चौंकाने वाला और अनापेक्षित है। संसदीय चुनाव का अंतिम दौर रविवार को खत्म हुआ और ऐसा लगता है कि जोनिक मिनोशों के वर्चस्व वाला वामपंथी न्यू पॉपुलर फ्रंट यानी एनएफपी संसद में सबसे बड़ा गठबंधन बनने की ओर बढ़ रहा है। फ्रांस, यूरोप और सारा विश्व, जनता के मूड में आए इस अचानक बदलाव से चकित है। पिछले हफ्ते तक यह तय माना जा रहा था कि मरिन ले पेन सत्ता हासिल कर लेंगीं। जनमत संग्रहों से ऐसा अनुमान लगाया जा रहा था कि उनकी अति दक्षिणपंथी नेशनल रैली और उसके सहयोगी दलों को सबसे ज्यादा वोट मिलेंगे। लेकिन अब यह साफ है कि वे संसद में तीसरा सबसे बड़ा गठबंधन ही बन पाएंगी। किस्मत उन पर मेहरबान नहीं है। मतदान समाप्त होने के कुछ ही समय बाद इप्सोस ने बताया कि उसका अनुमान है कि 577 सदस्यों की नेशनल असेम्बली में एनएफपी को 171-187 सीटें मिलेंगीं। राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, जिन्होंने पिछले महीने देश में मध्यावधि चुनाव की घोषणा करके खलबली मचा दी थी, के मध्यमार्गी गठबंधन के 150 सीटों के साथ दूसरे नंबर पर रहने का अनुमान लगाया गया है। लेकिन एनएफपी फिर भी बहुमत के लिए जरूरी 289 सीटों से बहुत पीछे रह जाएगा। पिछले हफ्ते ल पेन की नेशनल रैली के अच्छी-खासी बढ़त हासिल कर लेने के बाद, मध्यमार्गियों एवं वामपंथियों ने हाथ मिला लिया और मतदान के दूसरे दौर में नेशनल रैली का मुकाबला करने के लिए रिपब्लिकन फ्रंटइ बना लिया। पूरे देश में त्रिकोणीय मुकाबले वाली सीटों पर उम्मीदवार मैदान से हट गए और उन्होंने ल पेन के दल के विरूद्ध अन्य सभी दलों को मिलकर लडे का आह्वान किया। यह रणनीति सफल रही। ल पेन के सत्ता में आने पर जो उथल पुथल होती, वह तो टल गई है लेकिन देश में राजनीतिक अनिश्चितता के हालात बन गए हैं। मतदान की रात वामपंथी नेता जोनिक मिनोशों, जो आकर्षक व्यक्तित्व के धनी हैं मगर अपने अतिवाद के कारण वामपंथी गठबंधन के खिलाफ ध्रुवीकरण का कारण भी बन जाते हैं, ने जीत की घोषणा की। उन्होंने मैक्रों से कहा कि वे एनएफपी को सरकार बनाने का प्रयास करने के लिए आमंत्रित करें और उनके गठबंधन के किसी नेता को प्रधानमंत्री नियुक्त करें। उन्होंने जोर देकर कहा कि चुनावों के दौरान आमूलचूल बदलाव की जिन योजनाओं की घोषणा की गई थी, उन पर अमल किया जाएगा। फ्रांस का संविधान राष्ट्रपति को अधिकार देता है कि वे जिसे चाहें उसे प्रधानमंत्री नियुक्त कर सकते हैं। लेकिन व्यवहार में राष्ट्रपति हमेशा ऐसे व्यक्ति को प्रधानमंत्री नियुक्त करते हैं जो संसद को स्वीकार्य हो। कारण यह कि संसद कभी भी सरकार को इस्तीफा देने के लिए बाध्य कर सकती है। लेकिन जब किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत हासिल न हुआ हो और गठबंधन सरकार बनाई जानी हो तब चीजें कितनी मुश्किल और पेचीदा हो जाती हैं, हम भारतीय यह अच्छी तरह से जानते हैं! इसके अलावा, इतिहास गवाह है कि फ्रांस को फोर्थ रिपब्लिक के उथल पुथल भरे दौर के बाद से अलग अलग विचारधारा वाले कई दलों के गठबंधनों की सरकार चलाने का कोई अनुभव नहीं रहा है।

पुलों का ढहना शासन-तंत्र की भ्रष्टता का प्रमाण

इस हादसे के कारण अनेक वाहन क्षतिग्रस्त हुए एवं एक व्यक्ति की मौत हो गई और 8 लोग घायल हुए थे। सभी को इस बात की हैरानी हो रही है कि देश के सबसे प्रमुख हवाईअड्डे पर इस तरह का हादसा कैसे हो सकता है? मुंबई में भी घाटकोपर का होर्डिंग गिरना 14 लोगों की मौत का कारण बना था। इन पुलों के गिरने एवं अन्य सरकारी निमार्णों के ध्वस्त होने की घटनाओं ने एक बार फिर यही साबित किया है कि निर्माण कार्यों में फैले व्यापक भ्रष्टाचार और शासन तंत्र में बैठे लोगों की मिलीभगत के बीच ईमानदारी, नैतिकता, जिम्मेदारी या संवेदनशीलता जैसी बातों की जगह नहीं है। आज हमारी व्यवस्था चाहे राजनीति की हो, सामाजिक हो, पारिवारिक हो, धार्मिक हो, औद्योगिक हो, शैक्षणिक हो, चरमरा गई है, दोषग्रस्त हो गई है। उसमें दुराग्रही इतना तेज चलते हैं कि ईमानदारी बहुत पीछे रह जाती है। जो सद्प्रयास किए जा रहे हैं, वे निष्फल हो रहे हैं। पुल के गिरने से जितने पैसों की बबार्दी हुई, उसकी भरपाई आखिर किससे कराई जाएगी? बिहार में पुल गिरने की ताजा घटनाएं कोई पहली नहीं है। इससे पहले पिछले साल भर में सात पुलों के ढह जाने की खबरें आईं थी। जाहिर है, इन पुलों के ढहने एवं गिरने से कई गांवों का आपस में सीधा संपर्क टूट गया है और मानसून के मौसम में उनकी परेशानियां बढ़ गई हैं। बरसात के मौसम में जर्जर ढांचों के गिरने की घटनाएं ज्यादा घटती हैं और इसीलिए सभी राज्यों में स्थानीय प्रशासन मानसून आने से पहले ही उनकी पहचान कर उनका इस्तेमाल प्रतिबंधित कर देता है। मगर पुल कोई रिहाइशी इमारत नहीं, जिसमें चंद परिवार या कुछ लोग रहते हों, और जिसे एहतियातन खाली करा लिया जाए। ये पुल ग्रामीण लोगों के जीवन की अनिवार्यता एवं जीवनरेखाएं हैं। उच्च तकनीक और प्रौद्योगिकी के मौजूदा समय में उच्च लागत के बावजूद छोटी नदियों और नहरों पर बनने वाले पुल भी यदि चंद वर्षों में या बनते ही धराशायी हो जाएं

ललित गर्ग
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

बिहार में एक पखवाड़े के भीतर लगभग एक दर्जन छोटे-बड़े पुलों के ध्वस्त होने की घटनाएं हैरान करने के साथ-साथ चिंतित करने वाली हैं। जैसी खबरें हैं, अकेले बुधवार, यानी 3 जुलाई को ही राज्य के विभिन्न हिस्सों में पांच पुल-पुलिया धराशायी हो गए। इनमें सिवान में छाड़ी नदी पर बने दो पुल शामिल हैं। इससे पहले दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर टर्मिनल-1 पर छत गिरने की घटना से भी हर कोई हैरान है। इस हादसे के कारण अनेक वाहन क्षतिग्रस्त हुए एवं एक व्यक्ति की मौत हो गई और 8 लोग घायल हुए थे। सभी को इस बात की हैरानी हो रही है कि देश के सबसे प्रमुख हवाईअड्डे पर इस तरह का हादसा कैसे हो सकता है? मुंबई में भी घाटकोपर का होर्डिंग गिरना 14 लोगों की मौत का कारण बना था। इन पुलों के गिरने एवं अन्य सरकारी निमार्णों के ध्वस्त होने की घटनाओं ने एक बार फिर यही साबित किया है कि निर्माण कार्यों में फैले व्यापक भ्रष्टाचार और शासन तंत्र में बैठे लोगों की मिलीभगत के बीच ईमानदारी, नैतिकता, जिम्मेदारी या संवेदनशीलता जैसी बातों की जगह नहीं है। आज हमारी व्यवस्था चाहे राजनीति की हो, सामाजिक हो, पारिवारिक हो, धार्मिक हो, औद्योगिक हो, शैक्षणिक हो, चरमरा गई है, दोषग्रस्त हो गई है। उसमें दुराग्रही इतना तेज चलते हैं कि ईमानदारी बहुत पीछे रह जाती है। जो सद्प्रयास किए जा रहे हैं, वे निष्फल हो रहे हैं। पुल के गिरने से जितने पैसों की बबार्दी हुई, उसकी भरपाई आखिर किससे कराई जाएगी? बिहार में पुल गिरने की ताजा घटनाएं कोई पहली नहीं है। इससे पहले पिछले साल भर में सात पुलों के ढह जाने की खबरें आईं थी। जाहिर है, इन पुलों के ढहने एवं गिरने से कई गांवों का आपस में सीधा संपर्क टूट गया है और मानसून के मौसम में उनकी परेशानियां बढ़ गई हैं। बरसात के मौसम में जर्जर ढांचों के गिरने की घटनाएं ज्यादा घटती हैं और इसीलिए सभी राज्यों में स्थानीय प्रशासन मानसून आने से पहले ही उनकी पहचान कर उनका इस्तेमाल प्रतिबंधित कर देता है। मगर पुल कोई रिहाइशी इमारत नहीं, जिसमें चंद परिवार या कुछ लोग रहते हों, और जिसे एहतियातन खाली करा लिया जाए। ये पुल ग्रामीण लोगों के जीवन की अनिवार्यता एवं जीवनरेखाएं हैं। उच्च तकनीक और प्रौद्योगिकी के मौजूदा समय में उच्च लागत के बावजूद छोटी नदियों और नहरों पर बनने वाले पुल भी यदि चंद वर्षों में या बनते ही धराशायी हो जाएं, तो इसको कुदरती कहर का नतीजा नहीं, आपराधिक मानवीय लापरवाही, भ्रष्टाचार एवं सरकारी धन का दुरुपयोग ही मानना चाहिए। बिहार में सिवान की जिस नदी पर दो पुलों के ढहने की घटना घटी है, वह मृत हो चुकी थी और उसे जल-जीवन हरियाली अभियान के तहत पुनर्जीवित किया गया था। निस्संदेह, इसके लिए राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन सराहना के पात्र हैं। आखिर इस नदी के जिंदा होने से हजारों एकड़ भूमि की सिंचाई को बल मिला है। मगर क्या उसी तंत्र को यह भी नहीं सुनिश्चित करना चाहिए था कि जो पुल जर्जर अवस्था में हैं, उनका विकल्प भी साथ-साथ तैयार किया जाए? इस तरह बार-बार पुलों का गिरना एवं ध्वस्त होना सरकार में गहरे पैठ चुके भ्रष्टाचार, लापरवाही एवं रिश्वतखोरी को उजागर करता है। आजादी के अमृत-काल में पहुंचने के बाद भी भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेईमानी हमारी व्यवस्था में तीव्रता से व्याप्त है, अनेक हादसों एवं जानमाल की हानि के बावजूद भ्रष्ट हो चुकी मोटी चमड़ी पर कोई असर नहीं होता। ये पुल हादसें एवं ध्वस्त होने की घटनाएं बिहार में सरकारी भ्रष्टाचार के चरम पर होने को ही बल देती है। ऐसा नहीं है कि बिहार में ही ऐसे हादसें हो रहे हैं। गुजरात के मोरबी पुल हादसे को लोग अब भी नहीं भूले हैं। इस हादसे में 135 लोगों की मौत हो गई थी। सात साल पहले कोलकाता में विवेकानंद पुल के ढहने से 26 लोगों की मौत की घटना भी सबको याद होगी। सिर्फ बिहार में पुलों का यूं ढहते जाना ही चिंता की बात नहीं है, दूसरे तमाम राज्यों से भी चमचम सड़कों पर बनते गड्ढ़ों और नए निर्माण के दरकने की खबरें लगभग रोजाना सुर्खियां बटोर रही हैं। इसलिए बेहतर होगा कि तमाम सार्वजनिक निर्माण में पारदर्शिता, ईमानदारी एवं आधुनिक स्थापित मानकों की गारंटी सुनिश्चित की जाए और इसमें किसी किस्म की कोताही बरतने वाले की जिम्मेदारी तय हो। देश भर में तमाम पुराने पुलों की समीक्षा के साथ-साथ उनके रखरखाव या वैकल्पिक पुल के निर्माण को लेकर ठोस कदम उठाए जाने चाहिए।

इतना तय है कि ये सभी पुल अगर भरभरा कर गिर रहे हैं तो इनकी डिजाइन गलत होने से लेकर उसमें उपयोग होने वाली सामग्री के घटिया होने का भी साफ संकेत है। लेकिन जिस तरह सरकार इन एवं ऐसे पुलों की गुणवत्ता और जोखिम का अध्ययन करा रही थी, क्या उसके निर्माण के दौरान या उससे पहले डिजाइन सहित उसके हर कसौटी पर बेहतर होने के लिए जांच कराना सुनिश्चित नहीं कर सकती थी? यह तय है कि इन पुलों के निर्माण में व्यापक खामियां थीं और वे भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गये। सवाल है कि जब सरकार किसी कंपनी को पुल निर्माण की जिम्मेदारी सौंपती हैं, उससे पहले क्या गुणवत्ता की कसौटी पर पूरी निर्माण योजना, डिजाइन, प्रक्रिया, सामग्री, समय-सीमा और संपूर्णता को सुनिश्चित किया जाना जरूरी समझा जाता? देश में भ्रष्टाचार सर्वत्र व्याप्त है, विशेषतः राजनीतिक एवं प्रशासनिक भ्रष्टाचार ने देश के विकास को अवरूद्ध कर रखा है। यही कारण है कि पुल या दूसरे निर्माण-कार्यों के लिए रखे गए बजट का बड़ा हिस्सा कमीशन-रिश्वतखोरी की भेंट चढ़ जाता है। इसका सीधा असर निर्माण की गुणवत्ता पर पड़ता है। निर्माण घटिया होगा तो फिर उसके धराशायी होने की आशंका भी बनी रहती है। हादसों का एक बड़ा कारण जांच में दोषी और जिम्मेदार ठहराए गए अधिकारियों एवं ठेकेदारों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का न होना भी है। बिहार, दिल्ली, मुम्बई, गुजरात हादसों के दोषियों को बचाने के प्रयास भी सबके सामने हुए हैं। हर हादसे के बाद लीपापोती के प्रयास खूब होते हैं। हादसे में मरने वालों के परिजनों को मुआवजा बांटकर ही अपनी जिम्मेदारी पूरी समझने वाली सरकारों को इससे आगे बढ़ना होगा। निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर निगरानी रखने की पारदर्शी नीति नियामक केन्द्र बनाने के साथ उस पर अमल भी जरूरी है। विकसित देशों में भी ऐसे हादसे होते हैं, लेकिन अंतर यह है कि भारत में ऐसे हादसों से सबक नहीं लिया जाता। यह प्रवृत्ति दुर्भाग्यपूर्ण है। विडम्बना देखिये कि ऐसे भ्रष्ट शिखरों को बचाने के लिये सरकार कितने सारे झूठ का सहारा लेती है। हादसों की जांच से काम नहीं चलने वाला। ऐसे निर्माण कार्यों में कमीशन-रिश्वतखोरी रोकने पर खास ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि जब ठेकेदार एक बड़ी राशि कमीशन के तौर पर दे देता है, तो फिर वह निर्माण कार्य में भी गुणवत्ता बनाए रखने के प्रति लापरवाह हो जाता है। लापरवाही की परिणति ऐसे हादसों के रूप में सामने आती है। प्रगतिशील कदम उठाने वाले नेतृत्व ने अगर भ्रष्ट व्यवस्था सुधारने में मुक्त मन से सहयोग नहीं दिया तो कहीं हम अपने स्वार्थी उन्माद एवं भ्रष्टता में कोई ऐसा धागा नहीं खींच बैठें, जिससे पूरा कपड़ा ही उधड़ जाए। राजनीति के क्षेत्र में भ्रष्टाचार के मामले में एक-दूसरे के पैरों के नीचे से फट्टा खींचने का अभिनय तो सभी दल एवं नेता करते हैं पर खींचता कोई भी नहीं। रणनीति में सभी अपने को चाणक्य बताने का प्रयास करते हैं पर चन्द्रगुप्त किसी के पास नहीं है। घोटालों और भ्रष्टाचार के लिए हल्ला उनके लिए राजनैतिक मुद्दा होता है, कोई नैतिक आग्रह नहीं। कारण अपने गिरेबार में तो सभी झांकते हैं वहां सभी को अपनी कमीज दागी नजर आती है, फिर भला भ्रष्टाचार से कौन निजात दिरायेगा?

भारतीय राष्ट्रवाद के बीजारोपण का मुख्य कारण

13 अप्रैल 1919 को भारत के पंजाब प्रान्त के अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर के निकट जलियाँवाला बाग में एक शांतिपूर्ण सभा के लिए जमा हुए हजारों भारतीयों पर अंग्रेज हुक्मरान जनरल डायर ने अंधाधुंध गोलियां बरसाई थीं। ऐ नरसंहार ज्यादा भयावह था उसके बाद भारत को स्वतंत्रता दिलाने हेतु वीर क्रांतिकारियों ने अपना बालिदन देकर भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता कराया ऐ देशप्रेम की भावना थी। यद्यपि, 19वीं शताब्दी का भारत भाषा, धर्म, प्रदेश आदि के आधार पर विभाजित था तथा ब्रिटिश शासकों ने इस आधिपत्य स्थापित करने के लिए इस फूट का भरपूर लाभ भी उठाया, तथापि भारत एक भौगोलिक इकाई मात्र नहीं था, बल्कि इस विविधता में सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक एकता भी अन्तर्निहित थी जिसने राष्ट्रीय आन्दोलन के आरम्भ, विकास एवं सफलता की ओर अग्रसर होने में सहायता प्रदान की. विविधता के मूल में अन्तर्निहित यह राष्ट्रीय चेतना ही थी, जिसने राष्ट्रवाद को प्रेरणा दी तथा यह चेतना विशिष्ट वर्ग की अपनी बौद्धिक सीमा को लांघते हुए सुदूर क्षेत्रों तक जा फैली. हालाँकि यह सच है कि अंग्रेजों द्वारा स्थापित प्रशासनिक एकता तथा आधुनिक विचारों के प्रचार-प्रसार ने भी एक सीमा तक राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया, परन्तु यह भी सच है कि ब्रिटिश राज्य की स्थापना राष्ट्रवाद के बीजारोपण के लिए नहीं बल्कि औपनिवेशिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की गई थी. अंग्रेजों की यह स्पष्ट नीति रही कि भारतीयों में किसी भी प्रकार की एकता न बन पाए बल्कि उनमें फूट डालकर उन पर राज किया

संजय गोस्वामी
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

भारत सौ सालों से भी अधिक तक अंग्रेजो का 1857 से 1947 तक गुलाम रहा, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन भारत के वीर स्वतंत्रता सेनानियों जिसमें देश प्रेम की भावना से ब्रिटिश शासन को समाप्त करने के लिए जी जान लगा दिए अनगिनत देशप्रेमी शहीद हुए व 13 अप्रैल 1919 को भारत के पंजाब प्रान्त के अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर के निकट जलियाँवाला बाग में एक शांतिपूर्ण सभा के लिए जमा हुए हजारों भारतीयों पर अंग्रेज हुक्मरान जनरल डायर ने अंधाधुंध गोलियां बरसाई थीं। ऐ नरसंहार ज्यादा भयावह था उसके बाद भारत को स्वतंत्रता दिलाने हेतु वीर क्रांतिकारियों ने अपना बालिदन देकर भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता कराया ऐ देशप्रेम की भावना थी। यद्यपि, 19वीं शताब्दी का भारत भाषा, धर्म, प्रदेश आदि के आधार पर विभाजित था तथा ब्रिटिश शासकों ने इस आधिपत्य स्थापित करने के लिए इस फूट का भरपूर लाभ भी उठाया, तथापि भारत एक भौगोलिक इकाई मात्र नहीं था, बल्कि इस विविधता में सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक एकता भी अन्तर्निहित थी जिसने राष्ट्रीय आन्दोलन के आरम्भ, विकास एवं सफलता की ओर अग्रसर होने में सहायता प्रदान की. विविधता के मूल में अन्तर्निहित यह राष्ट्रीय चेतना ही थी, जिसने राष्ट्रवाद को प्रेरणा दी तथा यह चेतना विशिष्ट वर्ग की अपनी बौद्धिक सीमा को लांघते हुए सुदूर क्षेत्रों तक जा फैली. हालाँकि यह सच है कि अंग्रेजों द्वारा स्थापित प्रशासनिक एकता तथा आधुनिक विचारों के प्रचार-प्रसार ने भी एक सीमा तक राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया, परन्तु यह भी सच है कि ब्रिटिश राज्य की स्थापना राष्ट्रवाद के बीजारोपण के लिए नहीं बल्कि औपनिवेशिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की गई थी. अंग्रेजों की यह स्पष्ट नीति रही कि भारतीयों में किसी भी प्रकार की एकता न बन पाए बल्कि उनमें फूट डालकर उन पर राज किया जाए मौलिक तौर पर भारतीय राष्ट्रवार का उदय विदेशी शासन के विरूद्ध हुआ। अंग्रेजों ने भारत पर अपना आधिपत्य अपने हितों की बढ़ोत्तरी के लिए स्थापित किया था, न कि भारतीयों की उन्नति के लिए। अतएव दोनों पक्षों के बीच संघर्ष अवश्यंभावी ही था। अंग्रेजी शासन भारत के आर्थिक पिछड़ेपन का मुख्य कारण बन गया था।

भारत का हर सामाजिक वर्ग किसी न किसी ढंग से इस हुकूमत के अधीन पीड़ित हो रहा था। किसान भूराजस्व का भागीदार सह नहीं सकते थे और न ही जमींदारों और सूदखोरों के अत्याचार को, जिन्हें अंग्रेजी प्रशासन सुरक्षा प्रदान कर रहा था। भारतीय कारीगर भी प्रसन्न नहीं थे क्योंकि इस नवीन शासन ने जबरदस्ती उनकी औद्योगिक कलाओं का विनाश कर डाला था। औद्योगिक श्रमिक भी असंतुष्ट थे, क्योंकि ब्रिटिश सरकार पूंजीपतियों का ही पक्ष लेती थी। मध्यम वर्ग एवं बुद्धिजीवियों ने भी ब्रिटिश शासन के बुरे परिणामों को तीव्र रूप से महसूस किया। दादा भाई नौरोजी एवं राणाडे जैसे मध्यम वर्गीय बुद्धिजीवियों ने यह स्पष्ट कर दिया था कि ब्रिटिश शासन भारतीय आर्थिक विकास के प्रतिकूल है। भारतीय पूंजीपतियों में भी यह विश्वास जगा था कि भविष्य में उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य का विरोध करना पड़ेगा, वरन उनका स्वतंत्र विकास नहीं हो सकता है। इन तथ्यों के अतिरिक्त अंग्रेजों का घमंडी व्यवहार प्रत्येक स्वाभिमानी भारतीय को जागरूक बना दिया था। अतएव 19वीं शताब्दी के अंत तक भारत में एक शक्तिशाली साम्राज्य विरोधी आंदोलन प्रारंभ हुआ। यह एक राष्ट्रीय आंदोलन था, क्योंकि इसमें भारत के भिन्न-भिन्न वर्ग अपने आपसी द्वेष को भूलकर एक हो गए और ब्रिटिश राज्य का विरोध करने लगे। एक प्रकार से देखा जाए तो अंग्रेजों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन अनजाने में ही प्रारंभ करा दिया। यद्यपि अंग्रेज रेल डाक एवं समस्त प्रशासन का विकास अपने हित में किए थे। संचार एवं यातायात की इन सुविधाओं से भारतीय एक दूसरे के निकट आ सके और आंदोलन को इससे गति मिली। पश्चिमी विचारधारा एवं शिक्षा के फलस्वरूप अनेक भारतीयों ने राजनीति का आधुनिक दृष्टिकोण अपनाया और इस योग्य भी हो सके कि ब्रिटिश शासन की शोषण करने वाली प्रकृति को पहचाने। इस शिक्षा के कारण ही भारत में अनेक नेता पैदा हुए, जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया।

भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में समाचार पत्रों का भी योगदान कम नहीं है, विशेषकर देशभक्त के संदेश को प्रचार करने में। उस समय कुछ प्रमुख राष्ट्रवादी समाचार पत्र ह्यदि हिन्दु, अमृत बाजार पत्रिका, ह्यदि इंडियन मिरर इत्यादि थे। इसी प्रकार राष्ट्रीय चेतना राष्ट्रवादी साहित्य से भी उत्तेजित हुई। बंकिम चन्द्र चटर्जी, रविन्द्रनाथ टैगोर, भारतेन्तु हरिशचन्द्र, विष्णु शास्त्री चिपलंकार इत्यादि के साहित्य रचनाओं का राष्ट्रवादी चेतना के विकास में अत्यधिक योगदान है। यद्यपि अंग्रेजों ने यह जताना चाहा था कि भारतीयों में राष्ट्रीय स्वशासन चलाने की योग्यता नहीं है। कुछ भारतीयों (नेताओं) और लेखकों ने यह विश्वास लगाया कि भारतीय परम्परा एवं संस्कृति प्राचीन समय से ही बड़ी विकसित रही है और अंग्रेजों को यहॉ कुछ सिखाने की आवश्यकता नहीं है। उसी समय राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने अशोक चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, अकबर इत्यादि की उपलब्धियों एवं अशोक चन्द्रगुप्त को बेमिसाल बताया। भारतीय प्राचीन विज्ञान, राजनीति दर्शन स्थापत्य कला इत्यादि को भी अद्वितीय बताया गया जिससे भारतीयों में अपनी संस्कृति एवं परम्परा के प्रति गौरव पैदा हुआ। उपर्युक्त कारणों के चलते 1870-80 दशक तक ऐसा प्रतीत होने लगा कि भारतीय राष्ट्रवाद सबल ढंग से प्रारंभ हो चुका है। परन्तु वह लार्ड लिटन का प्रतिक्रियावाद शासन था, जिसके कारण भारतीय राष्ट्रवाद एक संगठित रूप धारण किया।

बुनियादी सुविधाओं पर जोर देता हुआ राजस्थान बजट

.डा. भरत मिश्र प्राची

लोकसभा चुनाव के चलते फरवरी-मार्च माह में आनेवाला राजस्थान सरकार का वर्ष 2024.25 का आम बजट 10 जुलाई को प्रस्तुति उपरान्त पारित किये जाने हेतु विधान सभा पटल पर वित्त मंत्री श्रीमती दिया कुमारी ने रख दिया जिसे पक्ष विपक्ष द्वारा चर्चा उपरान्त दिये अंतिम स्वरूप को बहुमत से पारित कर दिया जायेगा। भजन लाल सरकार का महिलाए किसानए युवा वर्ग को विशेष रुप से इंगित करता हुआ बुनियादी सुविधाओं पर जोर देते यह राजस्थान में आज तक के भाजपा सरकार का अनोखा पहला बजट है जिसमें सरकार के वित्त मंत्री दिया कुमारी ने कर में राहत प्रदान करते हुये सभी वर्ग को कुछ न कुछ देकर सभी को संतुष्ट करने का प्रयास किया है। इस तथ्य को समझने के लिये बजट के स्वरूप पर एक नजर डालें जहां चर्चित पेपर लिक अपराधियों के खिलाफ कार्यवाही किये जाने की योजना ए बड़े उद्योगों के साथ एमएसएमई पर जोरए जल मिशन को गति देने के लिये हर विधान सभा क्षेत्र में 20. 20 नलकूपए 10.10 टयूबवेल ए 25 लाख घरों को नल से पेयजल देनाए विद्युत उत्पादन क्षेत्रों में बढ़ोतरीए आदर्श ग्रामध सरकारी कार्यालयों में सौर उर्जा योजनाए हर घर . हर खेत बिजली योजनाए वर्ष के दौरान 2 लाख घरों को नये विद्युत कनेक्शनए 25 लाख से ज्यादा स्मार्ट मीटरए अंडर ग्राउन्ड बिजली लाइनए 9 ग्रीन फिल्ड एक्सप्रेसए 60000 करोड की नई सड़कए 500 नई रोडवेजए 300 नई इलेक्ट्रीक बसेंए बस डिपों के लिये 50 करोड़ की राशिए सभी बाजारों में वायोपिंक टायलेटए लाइब्रेरीए वाई फाई के लिये 150 करोड़ की राशिए कलाकारों को विशेष सुविधा देने के लिये 30 करोड़ की राशिए पर्यटन विकास के लिये पर्यटन विकास वोर्ड का गठनए बुनकरों को विशेष सहायताए माटी कला सेटर ऑफ एक्सीलेंसए जयपुर मे मेट्रो का विस्तार ए काशी विश्वनाथ मंदिर के तर्ज पर खाटू श्याम मंदिर कैरिडोर का निर्माणए मंदिर विकास के लिये 100 करोड़ की राशि का प्रावधानए 600 मंदिरों में विशेष आरतीए युवाओं को रोजगार देने के लिये 5 साल में 4 लाख भर्तियाए वर्ष के दौरान 1 लाख भर्तिए युवा अटल उद्यमी योजनाए कुलपति का नाम कुलगुरूए मुफ्त लैप टैबलेटए नई खेल नीति के तहत खिलाड़ियों को बीमा योजनाए मुख्यमंत्री आयुष्मान मां योजनाए संविदा कर्मचारियों को 2 बार इनक्रिमेंटए किसानों को ब्याज मुक्त कर्ज ए 1लाख 45 हजार किसानों को विद्युत कनेक्शन ए स्वतंत्रता सेनानियों को 60 हजार की पेंशन घयलों को अस्पताल ले जाने के लिये 10 हजार की अनुग्रह राशिए सहित समाज के हर वर्ग को बजट में कुछ न कुछ दिया ही गया है। चर्चा उपरान्त सरकार का यह बजट जनोपयोगी साबित हो सकता है यदि सरकार इसे अमल करने में सफल हो जाती है।

संक्षिप्त खबरें

एसआरपी हॉस्पिटल में किया गया निःशुल्क फाइब्रोस्कैन लीवर जांच का आयोजन

रक्सौल। स्थानीय शहर के लक्ष्मीपुर स्थित प्रसिद्ध एसआरपी मेमोरियल हॉस्पिटल के प्रांगण में बुधवार को निःशुल्क फाइब्रोस्कैन लीवर जांच का आयोजन किया गया। उक्त संबंध में हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. सुजीत कुमार ने बताया कि फाइब्रोस्कैन एक प्रकार का लिवर इलास्टोग्राफी है। फाइब्रोस्कैन एक विशेष अल्ट्रासाउंड तकनीक है, जो आपके लिवर की कठोरता और आपके लिवर में वसायुक्त परिवर्तनों को मापती है। ये माप आपके स्वास्थ्य सेवा प्रदाता को लिवर रोग के बारे में अधिक जानने में मदद करते हैं। मौके पर पवन कुशवाहा, प्रवीण कुमार, देवाशीष, मो. अली, मो. नबी सहित अन्य मौजूद थे।

मृतक युवक का घर शव पहुँचे ही परिजनों में मचा कोहराम

परसा ।नगर पंचायत परसा बाजार के खजौली के एक 35 बर्षीय युवक का गुजरात में मौत हों गई ।मृतक युवक वार्ड 9 निवासी शिव राय का पुत्र प्रेम कुमार बताया जाता है ।घटना के संबंध परिजन ने बताया कि गत 1 जुलाई को गुजरात गया था ।जहां ट्रक चालाता था ।9 जुलाई को ट्रक लोड कर कंपनी से चला रास्ते में अचानक तबियत बिगड़ गई ।जिसको उपचार के लिए निजी क्लिनिक में भर्ती कराया गया। जहां उपचार के दौरान मौत हो गई ।मृतक की युवक का गुरुवार को शव घर पहुँचा ।शव पहुँचते ही ग्रामीणों की भीड़ जुट गई ।शव को देख पत्नी सबिता देवी,पिता शिव राय,माता शिव झारिया देवी,भाई अशोक राय,शैलेश राय,पुत्र रौशन कुमार पुत्री खुशी कुमारी का रो रो कर बुरा हाल था ।मृतक युवक तीन भाई में माझिल था ।एक पुत्र एक पुत्री है ।पत्नी की चीख पुकार से माहौल गमहीन हो गया ।घटना की सूचना मिलते ही वार्ड पार्षद सूरज कुमार पहुँच परिजनों से मुलाकात कर घटना की जानकारी लिया ।और सांत्वना दिया।

इसुआपुर प्रखंड कार्यालय में दो सहायक कर्मियों ने किया योगदान

सुआपुर ।प्रखंड कार्यालय इसुआपुर में दो सहायक कर्मियों ने योगदान किया। योगदान करने वालों में सोनी कुमारी तथा अनिल कुमार सिन्हा शामिल हैं। पूर्व में ये दोनों क्रमशः प्रखंड कार्यालय नगरा तथा प्रखंड कार्यालय रिविलगंज में कार्यरत थे। उक्त जानकारी प्रखंड विकास पदाधिकारी संतोष कुमार मिश्रा ने दी।

सड़क दुर्घटना में तीन घायल, रेफर

इसुआपुर ।थाना क्षेत्र के इसुआपुर गांव के तीन युवक सड़क दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गए हैं ।बताया जा रहा है कि इसुआपुर गांव के स्वर्गीय कैश अंसारी के पुत्र नासिर अली, स्वर्गीय सलीम इद्रीसी के पुत्र सुंदर इद्रीसी तथा सलाहुद्दीन इद्रीसी के पुत्र अरबाज इद्रीसी बाइक से भकुरा भिठ्ठी बाजार जा रहे थे। इसी दौरान बाजार के पहले ही छपरा की तरफ से आ रही एक अनियंत्रित वाहन की चपेट में आकर बुरी तरह घायल हो गए। स्थानीय लोगों की मदद से तीनों घायलों को सीएचसी इसुआपुर ले जाया गया। जहां चिकित्सकों के द्वारा प्राथमिक उपचार के बाद सदर अस्पताल छपरा रेफर कर दिया गया।

रास्ते में महिला की हुई मौत

छपरा कार्यालय। इसुआपुर थाना अंतर्गत प्रिया इमरजेंसी हॉस्पिटल में प्रसव के दौरान एक महिला की स्थिति बिगड़ने के बाद उसे छपरा सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया, जिसकी मौत रास्ते में ही हो गई. सदर अस्पताल पहुंचने के बाद ड्यूटी पर मौजूद चिकित्सक के द्वारा उसे मृत घोषित किए जाने के बाद परिवार वालों में कोहराम मच गया. वहीं परिजनों ने उक्त नर्सिंग होम पर लापरवाही क्या आरोप भी लगाया है. मृत प्रसव पीड़िता जिले के कोपा थाना क्षेत्र निवासी बेबी देवी बताई गई है. जिसे बीते 10 जुलाई को इसुआपुर प्रखंड थाना क्षेत्र अंतर्गत पुरसौली महावीर मंदिर में रोड स्थित प्रिया इमरजेंसी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था, जहां महिला को खून की कमी होने की बात बताई गई और खून चढाने के नाम पर 5000 की मांग की गई. हालांकि उसके ससुर भी खून देने के लिए तैयार थे, लेकिन अस्पताल कर्मियों के द्वारा बताया गया कि खून मंगाया जाएगा इसके लिए 5000 जमा करने पड़ेंगे और परिवार वालों ने 5000 जमा कर दिया. लेकिन इलाज के दौरान ऑपरेशन करने से पहले ही महिला की स्थिति अचानक बिगड़ गई. जिसके बाद वहां से उसे छपरा सदर अस्पताल रेबर किया गया. जबकि सदर अस्पताल पहुंचते-पहुंचते उसकी मौत हो गई है. इसके बाद परिवार वालों ने उक्त नर्सिंग होम पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए उसके खिलाफ शिकायत दर्ज करने की बात कही है।

भारत मे जल्द लागू हो जनसंख्या नियंत्रण कानून:डॉ चरण

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। जनसंख्या समाधान फाउंडेशन के द्वारा भारत के प्रत्येक जिले मुख्यालय पर एक दिवसीय धारण के माध्यम से जिला अधिकारी सारण से एक प्रतिनिधि मंडल मिलकर गुरुवार को जनसंख्या दिवस के अवसर पर जनसंख्या नियंत्रण कानून अभिलम्ब लागू हो इनके माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार को ज्ञापन सौंपा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष श्री मनोज कुमार व संचालन जिला संयोजक सन्नी प्रकाश चंदु सिंह व धन्यवाद ज्ञापन अभिषेक शर्मा ने किया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुवे प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ चरण दास ने कहा कि विश्व की कुल भूमि का 2 प्रतिशत और 4 प्रतिशत जल की भागीदारी रखने वाला भारत विश्व के 17 प्रतिशत जनसंख्या का भार वहन कर रहा है उन्होंने बेहताशा जनसंख्या वृद्धि पर चिंता प्रकट करते कहा कि समय आ गया है अब हम दो हमारे दो ही नहीं बल्कि सबके दो की नीति को बिहार सहित पूरे देश मे कानून बनाकर लागू किया जाए, अन्यथा भारत मे कैंसर की तरह बढ़ती चली जा रही है जनसंख्या का निराकरण न किया गया तो इसके विस्फोट स्वरूप से देश के सभी कायदे कानून से लेकर लोककल्याण की योजनाएं विफल हो जायेगी। जिला अध्यक्ष मनोज कुमार ने कहा की जनसंख्या नियंत्रण पर विश्व मे सबसे पहले नीति बनाने वाला भारत संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के अनुसार विश्व मे सर्वाधिक आबादी वाला देश बन चुका है जिसके प्रकोप से बचने के लिए एक मात्र उपाय है शीघ्र सख्त कानून लागू हो फाउंडेशन पिछले 13 वर्षो से पूरे देश मे आमजन को जागरूक करने के साथ सरकार से कानून बनाने की मांग करती आ रही है और जब तक सरकार द्वारा जनसंख्या नियंत्रण संबधी शख्त कानून को संसद से पारित कर लागू नही किया जाता है संगठन का कार्यक्रम और संविधान सम्मत आंदोलन जारी रखेगा।

ममता मिश्रा ने कहा कि देश के संसाधनों पर बोझ बढ़ाती अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण हेतु सख्त कानून बनवाने को लेकर जनसंख्या समाधान फाउंडेशन कृतसंकल्पित है। कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिला महामंत्री रोहित कुमार दुबे, नेहा पाण्डेय,जिला उपाध्यक्ष पंकज सिंह, धर्मेंद्र सिंह, राघवेंद्र प्रताप सिंह, नितेश दुवे, विवेक कुमार, पी० डी० बाबा, अरविंद कुमार महतो, केशव महतो, संजय सिंह, रंजीत कुमार सिन्हा,विकाश कुमार,मुटुर जी,मोहन कुमार,अमित सिंह,योगीन्द्र राय, शैलेश राय, रचना कुमारी, मुन्ना कुमार शर्मा आदि सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थिति रहे।

10 नवनियोजित महिला पर्यवेक्षिकाओं को जिलाधिकारी ने वितरित किया नियोजन पत्र

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा नगर। समाज कल्याण विभाग के तहत समेकित बाल विकास परियोजना अंतर्गत सारण जिला में उपलब्ध रिक्तियों के विरुद्ध 37 महिला पर्यवेक्षिकाओं का नियोजन किया गया है। इनमें से 21 महिला पर्यवेक्षिकाओं को उनके शैक्षणिक दस्तावेजों का सत्यापन के उपरांत पहले ही नियोजन पत्र दिया गया है। इनमें से 17 महिला पर्यवेक्षिकाओं ने योगदान भी दे दिया है। 10 अन्य नियोजित महिला पर्यवेक्षिकाओं के शैक्षणिक दस्तावेजों का सत्यापन का कार्य पूरा होने के उपरांत आज जिलाधिकारी अमन समीर ने अपने कार्यालय वेश्म में इन सभी को नियोजन पत्र वितरित किया। आज किरण कुमारी,प्रीति सिंह,पूर्णिमा कुमारी, खुशबू कुमारी,सुधा कुमारी, सरिता कुमारी, कुमारी अम्बालिका, श्वेता कुमारी, निर्मला देवी एवं ममता कुमारी को नियोजन पत्र वितरित किया गया। शेष 6- कुमारी श्वेता सिंह, बबीता कुमारी, किशोर प्रसाद सुमना, अर्चना देवी, विजया रानी एवं कुसुम शर्मा के शैक्षणिक दस्तावेजों का सत्यापन प्रक्रियाधीन है, सत्यापन पूरा होने के उपरांत इन्हें नियोजन पत्र दिया जायेगा। इस अवसर पर जिला प्रोग्राम पदाधिकारी कुमारी अनुपमा भी मौजूद थीं।

रक्सौल के अनिकेत अग्रवाल ने सीए की परीक्षा में बाजी मार, बढ़ाया शहर का मान

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। हार हो जाती है जब मान लिया जाता है और जीत तब होती है जब ठान लिया जाता है। उक्त शायरी को चरितार्थ कर दिखाया है, रक्सौल के कोईरिया टोला निवासी सह लोहापट्टी रोड स्थित प्रसिद्ध रेडीमेड कपड़े की दुकान परिधान के संचालक सुभाष अग्रवाल के छोटे भाई सह स्कूल यूनिफॉर्म हाउस के संचालक विनोद अग्रवाल के पुत्र अनिकेत अग्रवाल ने। गुरुवार को भारत की सबसे महत्वपूर्ण परीक्षा में से एक चार्टेड एकाउंटेंट अर्थात सीए की परीक्षा का परिणाम आया तो जैसे ही अनिकेत ने ये सूचना अपने परिजनों को दिया कि वह इस कठिन परीक्षा में अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण हो गया है, इसके बाद सबके चेहरे खिल उठे। रक्सौल ने एक बार फिर अपना लोहा मनवाया है। इस युवक ने अपने माता-पिता एवं परिजनों के साथ अपने शहर का मान बढ़ाया है। एक समय ऐसा था जब रक्सौल में सीए की खोज होती थी और आज कई विद्यार्थियों ने इस परीक्षा में बाजी मार रक्सौल की प्रतिष्ठा में चार चांद लगा दिया है। इस सफलता पर चाचा अनिल अग्रवाल, अमरदीप कपड़े की दुकान के संचालक बिमल रूंगटा, महेश गुप्ता, जगन जी आदि सहित कई लोगों ने हर्ष व्यक्त करते हुए बधाई दिया है।

विधि मंडल के निर्वाचित सदस्यों ने व्यवहार न्यायालय की समस्याओं को लेकर जिला जज से की मुलाकात

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा विधि मंडल के निर्वाचित सदस्य मंटू कुमार सिंह, सरोज कुमारी ,राजेश कुमार पांडे अजय कुमार सिंह सहित अन्य अधिवक्ताओं ने जिला एवं सत्र न्यायधीश पुनीत कुमार गर्ग से मुलाकात की और किशोर न्याय बोर्ड छपरा में आने-जाने के लिए न्यायालय कैंपस स्थित पश्चिमी छोर की तरफ बंद दरवाजा को खुलवाने का निवेदन किया गया तथा व्यवहार न्यायालय में बने नए टेन कोर्ट बिल्डिंग का लिफ्ट बराबर खराब हो जाने के बारे में भी जिला जज को सूचना दी। किशोर न्याय बोर्ड के दरवाजा नहीं खुलने के कारण अधिवक्ताओं को बहुत दूरी तय करके ने किशोर बोर्ड में जाना पड़ता है और लिफ्ट खराब होने से चार मंजिल बिल्डिंग पर बुजुर्ग अधिवक्ताओं एवं मोवकिलों को चढ़ाने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। क्योंकि चतुर्थ मंजिल पर ही दीवानी मामलों की सुनवाई तथा न्यायिक दंडाधिकारी अधिकारी द्वितीय श्रेणी का न्यायालय स्थित है। साथ ही अधिवक्ता पवन कुमार श्रीवास्तव एवं शैलेंद्र कुमार सिंह प्रकाश रंजन श्रीवास्तव सहित दर्जनों और अधिवक्ताओ ने बताया कि व्यवहार न्यायालय के पश्चिम स्थित न्यायालय के पास भवन निर्माण द्वारा एक पेशाब खाना बनवा दिया गया है। जिसमें पानी की कोई व्यवस्था नहीं है जिसके कारण गर्मी आम दिनों में काफी बदबू फैलता है जिसको लेकर जिला जज एवं कोर्ट मैंनेजर को पूर्व में सूचना दिया गया है परंतु अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। जिसके कारण राजेन्द्र स्मारक के पास बैठने वाले तथा आसपास बैठने वाले अधिवक्ताओं को काफी कष्ट का सामना करना पड़ रहा है।

भक्ति मे ही शक्ति का जन्म: चेतन महाप्रभु

प्रात : किरण, संवाददाता

डोरीगंज। अवतारनगर थाना अंतर्गत शिव मंदिर कंशदियर के प्रांगण में नवदिवसीय यज्ञ का आज पांचवा दिन मूर्ति को ग्राम भ्रमण एवं शोभायात्रा निकाली गई । शोभायात्रा में नर नारियों के साथ बच्चे पूरी उमंग के साथ गांव का भ्रमण किये। इसके साथ ही शोभा यात्रा मे बैन्ड बाजा के साथ कंशदियर बलुआ, हंसकरी, मुसेपुर मे भ्रमण कार्यक्रम हुआ । क्षेत्र के भ्रमण से वहां के लोग काफी प्रसन्नचित एवं श्रद्धा भाव से मूर्तियों का दर्शन किए। शोभायात्रा में नर नारियों के साथ बच्चे पूरी उमंग के साथ गांव का भ्रमण किया इसके साथ ही शोभा यात्रा मे बैन्ड बाजा के साथ कंशदियर बलुआ, हंसकरी, मुसेपुर का भ्रमण हुआ। प्रवचन मंच से चेतन महाप्रभु जी ने वृंदावन में भगवान श्री कृष्ण को गोपियों के साथ रासलीला का वर्णन विस्तार से उपस्थित श्रोताओं क सामने कही ।उन्होंने अपने विचार में कहा कि रासलीला करते समय भगवान शंकर को भी वृन्दावन मे रासलीला मे भाग लेने की मन मे इच्छा जागृत हुई और ऐसा करने के लिए वृंदावन मे गोपियो के बीच आना पड़ा। कामदेव जी महाराज ने भगवान श्रीकृष्ण और गोपियो के संबंध की परीक्षा भी ली लेकिन वे असफल रहे। शिवमन्दिर के प्रांगण मे श्री श्री 1008 उर्फ नागा बाबा के देखरेख में यह यज्ञ पूरे भक्ति भाव से चल रहा है।

साढ़ा ढाला ओवर ब्रिज से मेथवलिया तक अतिक्रमण हटाने को ले किया गया प्रचार - प्रसार

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा । जिला प्रशासन द्वारा अतिक्रमण हटाओ अभियान युद्ध स्तर पर चलाए जा रहा है, इसी कड़ी में साढ़ा ढाला ओवर ब्रिज से मेथवलिया तक सड़क अतिक्रमण से मुक्त कराया जाएगा । बता दें कि साढ़ा ढाला सड़क के दोनों किनारे से अतिक्रमण हटाए जाने को लेकर प्रचार- प्रसार कर इस आशय की जानकारी अतिक्रमण किए गए दुकानदारों को दी गई । गुरुवार को जिला प्रशासन द्वारा ध्वनि विस्तारक यंत्र के माध्यम से प्रचार- प्रसार कर दुकानदारों को अविलंब अतिक्रमण हटा लेने को कहा गया है । इस संबंध में मिली जानकारी के अनुसार सदर अंचलाधिकारी कुमारी आंचल के निर्देश पर गुरुवार को ध्वनि विस्तारक यंत्र के माध्यम से प्रचार- प्रसार कर दुकानदारों को सूचना दी गई । जिला प्रशासन द्वारा दिए गए आदेशानुसार साढ़ा ढाला ओवर ब्रिज से बाजार समिति होते हुए मेथवलिया तक सड़क के दोनों किनारे किए गए अतिक्रमण को हटाया जाएगा । लक्ष्मण मिस्त्री द्वारा प्रचार- प्रसार में दुकानदारों से अतिक्रमण हटा लेने का आग्रह किया गया है । और यह भी कहा गया है कि दुकानदार स्वेच्छा से अतिक्रमण किए गए दुकान हटा लें, अन्यथा प्रशासन द्वारा जबरन हटा दिया जाएगा।

वाहन चेकिंग के दौरान 170 लीटर देसी शराब ऑटो से बरामद

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा ।सारण पुलिस को मिली गुप्त सूचना के आधार पर हरिहरनाथ थाना अंतर्गत हरिहरनाथ मोड़ से एक ऑटो से 170 लीटर देसी शराब बरामद किया गया है ' पुलिस अधीक्षक कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार हरियाणा थाना द्वारा हरियाणा मोड़ पर सघन वाहन चेकिंग चलाया जा रहा था । चेकिंग के दौरान ऑटो को रोकने की कोशिश की गई, तभी ऑटो चालक गाड़ी छोड़कर फरार हो गया । ऑटो को चेक करने पर दोनों सीट के नीचे छुपा कर रखा गया 170 लीटर देसी शराब बरामद हुआ है ' शराब बरामद के बाद ऑटो को भी जप्त कर लिया गया है ' इस मामले में हरिहरनाथ थाना में प्राथमिक की संख्या 75/ 24 दर्ज कर मध्यनिषेध एवं उत्पादन अधिनियम के तहत कार्रवाई की जा रही है । पुलिस द्वारा इसमें शामिल शराब कारोबारी को चिन्हित कर कार्रवाई की जा रही है ' शराब जब्ती में सहायक अवर निरीक्षक सह थानाध्यक्ष हरिहरनाथ विजेंद्र प्रसाद यादव एवं अन्य थाना कर्मी शामिल थे ।

लोकगायक रामेश्वर गोप ग्रेड 'ए' का कलाकार बन बढ़ाया सारण का मान

आकाशवाणी पटना व डीटीएएच पर गोप के गीतों का होगा प्रसारण आज

प्रात : किरण, संवाददाता

● प्रसार भारती भारत सरकार ने बनाया गोप को श्रेणी ए का गायक

रसूलपुर ।सारण के लोकगायक रामेश्वर गोप ग्रेड ए के कलाकार बन गये हैं ।प्रसार भारती भारत सरकार के आकाशवाणी व दूरदर्शन द्वारा आयोजित ऑडिशन में गोप ने सफलता हासिल कर श्रेणी ए के कलाकारों में अपना नाम शुमार किया है ।ग्रेड ए श्रेणी के तहत गायक गोप का पहला कार्यक्रम पटना रेडियो के साथ डीटीएएच पर एक साथ शुक्रवार 12 जुलाई को दोपहर 12 बजे से 12:30 बजे तक प्रसारित होगा ।इस कार्यक्रम में गायक गोप भिखारी ठाकुर के मंगलाचरण गीत ,महेन्द्र मिसिर के पूर्वी ,निर्गुण ,कजरी,झूमर आदि पारम्परिक गीत गाते हुए सुने जायेंगे ।इसके पूर्व करीब 20 वर्षों से लोकगायक गोप आकाशवाणी व दूरदर्शन से ग्रेड बी व ग्रेड बी हाई श्रेणी में लोकगायन करते रहे हैं ।गायक गोप को अपनी दादी स्व. पिआरो कुंवर,व लोकगायक पिता हरेश्वर गोप से लोकगायन विरासत में मिला है ।भिखारी ठाकुर लोकसांस्कृतिक महोत्सव छपरा में प्रो डॉ लालबिबू यादव से भिखारी ठाकुर के विशेष गायन का प्रशिक्षण गायक गोप ने लिया है ।लोकगायन के साथ गुरू त्रय शिवनाथ प्रसाद(माया संगीत कला केंद्र छपरा),उमापति दास ,व जाने माने शास्त्रीय गायक पं. राम प्रकाश मिश्रा(मीरा संगीत कला केंद्र) से स्नातक स्तरीय शास्त्रीय गायन का भी विधिवत शिक्षा गोप ने प्राप्त की है ।सम्प्रति गायक गोप आर एन हाईस्कूल योगियां में अर्थशास्त्र के शिक्षक हैं ।ग्रेड श्रेणी के कलाकार बनने पर लोगों व इनके प्रशंसकों ने बधाई दी है।

जो बेटा अपने जन्म देने वाली मां को कष्ट देता है उसे जगतजननी मां कभी खुश नही रखती: डॉ साध्वी प्रज्ञा

प्रात : किरण, संवाददाता

तरैया प्रखण्ड के अरदेवा-जिमदाहा गांव में नारद बाबा के आश्रम पर आयोजित श्री सहस्त्रचण्डी महायज्ञ के पांचवे दिन बुधवार को प्रवचन मंच से प्रसिद्ध कथा वाचिका डॉ साध्वी प्रज्ञा भारती ने मां जगतजननी की कथा सुनाते हुए कही की जो संतान अपने माता-पिता को कष्ट और दुःख देते हैं। उन्हें जीवन में कभी भी खुशहाली नही मिलती है। जो बेटा अपने जन्म देने वाली मां को कष्ट देता हैं उसे जगतजननी मां कभी खुश नहीं रखती,यह जगतजननी मां तब प्रसन्न होती हैं जब हम अपनी जन्म देने वाली मां को खुश रखते हैं। इसलिए अपने माता-पिता को हमेशा खुश रखना चाहिए और उनकी सेवा करनी चाहिए। हम अपने मां-बाप के साथ गलत व्यवहार करते है और जब हमारे पुत्र बड़े होते हैं और वे हमारे साथ गलत करते हैं तो हम सोच में पड़ जाते हैं कि किस जन्म के पाप का कष्ट भोग रहे हैं। लेकिन हम ये नही सोचते कि हमने अपने माता-पिता के साथ क्या किया था यही है कर्म का फल, इसलिए मां-बाप का अपमान न करो, आगे उन्होंने कहा कि जब भी कोई संकट उत्पन्न हो तो मां को दिल से याद करना, सारे संकट से उभर जाओगे। वही दुर्गा सप्तशती के दूसरे श्लोक में मां भगवती की उत्पति के बारे में बताया। उक्त यज्ञ आगामी 15 जुलाई 2024 तक आयोजित होगी।

पूर्वोत्तर रेलवे के अपर महाप्रबन्धक ने गोरखपुर-छपरा खण्ड का विण्डो ट्रेलिंग, छपरा स्टेशन एवं यार्ड का निरीक्षण किया

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय ।पूर्वोत्तर रेलवे के अपर महाप्रबन्धक श्री दिनेश कुमार सिंह ने आज 11 जुलाई, 2024 को गोरखपुर -छपरा विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण कर मानसून में सुरक्षित एवं संरक्षित रेल संचलन,ट्रैक क्लियरेंस एवं सिगनल की स्पष्ट दृश्यता हेतु संबंधित को आवश्यक निर्देश दिया साथ ही ट्रैक के किनारों पर उगे वृक्षों एवं झाड़ियों की छँटाई का भी निर्देश दिया। विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण के दौरान अपर महाप्रबन्धक ने संरक्षा के साथ-साथ इस खण्ड पर पड़ने वाले स्टेशनों पर चल रहे विकास कार्यों का संज्ञान लिया। अपने निरीक्षण के क्रम में डी के सिंह गाड़ी सं 12554 वैशाली एक्सप्रेस से विन्डो ट्रेलिंग निरीक्षण करते हुए अपराह्न छपरा जं स्टेशन पहुँचे । अपर महाप्रबंधक ने छपरा जं स्टेशन के विस्तार एवं विकास के अंतर्गत स्टेशन तथा यार्ड में चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यो का गहन निरीक्षण किया। उन्होनें छपरा जं स्टेशन के विस्तार के साथ नवीनीकृत प्रवेश द्वार, सकुर्लेटिंग एरिया के विस्तार, प्लेटफार्मो शेडो के बदलाव, पे एण्ड यूज प्रसाधन के निर्माण तथा यात्रियों की सुविधा हेतु प्रतीक्षालयों के आधुनिकीकरण व सौंदर्यीकरण, बैठने की समुचित व्यवस्था,स्टेशन पर उपलब्ध विभिन्न सुविधाओं के साइनेज, स्टेशन के नाम ग्लोसाइन बोर्ड, स्टेशन एवं यार्ड के जल निकासी (वाटर ड्रेनेज),यात्री आरक्षण केन्द्र भवन एवं उसमें आरक्षित/अनारक्षित टिकट काउंटरों का निरीक्षण किया । इसके उपरान्त उन्होंने छपरा जं स्टेशन के दूसरे छोर पर बन रहे द्वितीय प्रवेश द्वार ,अप्रोच रोड, टिकट बुकिंग कार्यालय ,रिसेप्शन एरिया ,पार्सल बुकिंग कार्यालय , दूसरे पैदल उपरिगामी तथा नवनिर्मित प्लेटफॉर्मों का निरीक्षण किया । इसके पश्चात अपर महाप्रबंधक ने स्टेशन पर स्थित डीजल लॉबी का निरीक्षण किया और सी एम एस कियॉस्क पर साइन ऑन/ऑफ ,ब्रीथ एनालाइजर एवं ड्यूटी बुकिंग रजिस्टर की जाँच की। तदुपरान्त उन्होंने स्टेशन परिसर में स्थित गार्ड/लोको पायलट रनिंग रूम का निरीक्षण किया और रनिंग रूम में कर्मचारियों को मिलने वाली सुख-सुविधाओं पर संतोष व्यक्त किया। अंत में उन्होंने ने रेलवे सुरक्षा बल बैरेक का निरीक्षण कर नियमित पेट्रोलिंग,आकस्मिक जाँच अभियान एवं रेल संपत्ति की सुरक्षा से जुड़े क्राइम ग्राफ का अवलोकन किया और अपराध नियंत्रण शाखा के सुरक्षा कर्मियों की सराहना की। इस अवसर पर उनके साथ वाराणसी मंडल के अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा)श्री रोशन लाल यादव ,वरिष्ठ मंडल इंजीनियर द्वितीय श्री सत्यम सिंह, वरिष्ठ मंडल सिगनल एवं दूरसंचार इंजिनियर द्वितीय श्री यशवीर सिंह ,वरिष्ठ मण्डल विद्युत इंजीनियर (सामान्य)श्री पंकज केशरवानी,वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर(कर्षण) श्री आर. एन .सिंह,वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर(परिचालन) अनिल कुमार श्रीवास्तव, मंडल परिचालन प्रबन्धक श्री रतन दिप गुप्ता,मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री रमेश पाण्डेय, सहायक मंडल इंजीनियर छपरा श्री ए के राय सहित वरिष्ठ पर्वेक्षक एवं स्टेशन के रेल कर्मचारी उपस्थित थे ।

क्वीज प्रतियोगिता आयोजित

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। सेहत केंद्र एवम राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वावधान में राजेंद्र कॉलेज में विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर एक क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर माननीय प्राचार्य प्रो सुशील कुमार श्रीवास्तव ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए इस वर्ष की थीम ह्ल सभी के लिए एक स्वस्थ एवम टिकाऊ भविष्य की ओरः एक समान दुनिया में परिवारों पर ध्यान केंद्रित करनाह्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जनसंख्या वृद्धि एवम इसके पर्यावरणीय, सामाजिक एवम आर्थिक प्रभावों के बारे में जागरुकता बढ़ाने का यह महत्वपूर्ण अवसर हैं। इस अवसर पर सेहत केंद्र की नोडल पदाधिकारी डॉ जया कुमारी पांडेय ने प्रजनन स्वास्थ्य एवम परिवार नियोजन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा की यह सभी के लिए महत्वपूर्ण है, विशेषकर लड़कियों एवम महिलाओं को अपने जीवन एवम प्रजनन विकल्पों पर नियंत्रण रखने हेतु सशक्त बनाना होगा, तभी हम अपने राष्ट्र के संसाधनों की रक्षा करते हुए सतत विकास की परिकल्पना को साकार कर सकेंगे ।इस अवसर पर आयोजित क्विज प्रतियोगिता में जनसंख्या नियंत्रण हेतु चलाए जा रहे विविध कार्यक्रमों, रक्तदान , एड्स नियंत्रण से जुड़े प्रश्न पूछे गए ।साथ ही छात्र छात्राओं ने मानव श्रृंखला का निर्माण करके इस विषय पर सभी को जागरूक करने की प्रतिबद्धता जताई ।इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ देवेश रंजन एवम डॉ कन्हैया प्रसाद, डॉ प्रीति मिश्रा, विशाल कुमार, आरती कुमारी, रूपेश कुमार निषाद, सचिन चौरसिया, उजाला, रॉबिन राजपूत सहित बहु संख्यक छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

नौरंगिया थाना परिसर में मोहर्रम को लेकर शांति समिति की बैठक संपन्न

प्रात : किरण, संवाददाता

बगहा। बगहा पुलिस जिला स्थित नौरंगिया थाना परिसर में बृहस्पतिवार को थानाध्यक्ष अजय कुमार के अध्यक्षता में गण्यमान्य लोगों के साथ मोहर्रम को लेकर बैठक की गई ।जिसमें थानाध्यक्ष श्री कुमार जनप्रतिनिधियों और आम लोगों से विचार विमर्श में कहा कि किसी भी तरह के अमर्यादित भाषा का पर्व के दौरान प्रयोग नहीं करे और सद्भावना के साथ सभी समुदायों के लोग मिलजुलकर पर्व को मनाए। कहीं से किसी भी तरह की कोई संदिग्ध व्यक्ति या अप्रिय घटना की सूचना पुलिस प्रशासन को तुरंत दे। बतादें की जुलूस या ताजिया निकालने के लिए लाइसेंस प्राप्त जरूर कर लें ।इस बैठक में नौरंगिया पंचायत मुखिया सुनील महतो,मदनपुर मुखिया अरविंद राम,सरपंच नंदलाल राम,बीडीसी उपेंद्र यादव,पैक्स अध्यक्ष नंद किशोर चौधरी,किताब अंसारी,इब्राहिम मियां,लालमोहन गोंड, प्रदीप बिहारी समेत कई गण्यमान्य लोग शामिल हुए।

संक्षिप्त खबरें

भाभी के सिर पर देवर ने कुदाल से वार कर किया घायल

जमुई[झाझा] जमीन के हिस्सेदारी को लेकर एक महिला और उसकी तीन बेटी के साथ महिला के देवर और गोतनी ने मारपीट करते हुए महिला के उपर कुदाल से प्रहार कर घायल कर दिया। मामला थानाक्षेत्र के बैजला गांव कि है। मारपीट में गंभीर रूप से घायल महिला की पहचान केवल यादव की पत्नी मालती देवी के रूप में हुई है। घायल महिला की स्थिति गंभीर देखकर परिजनों ने तुरंत उसे आनन फानन में इलाज के लिए रेफरल अस्पताल में भर्ती करवाया जहां डॉक्टर ने घायल महिला का इलाज किया। घायल महिला के पति ने बताया कि मै काम करने के लिए चला गया था तभी मंझला भाई कपिल यादव मेरी पत्नी के साथ हिस्सेदारी को लेकर विवाद कर दिया जिसका विरोध मेरी पत्नी ने कि तो मंझला भाई और उसकी पत्नी ने मेरी पत्नी के साथ मारपीट करना शुरू कर दिया।

किसान का बेटा बना दरोगा लोगों ने दी बधाई

आरा। भोजपुर जिले के तरारी प्रखंड के कुरमुरी गांव के रहने वाले किसान मनोज सिंह के बेटे ने दरोगा बनाकर पूरे इलाके का नाम रोशन किया है इस बार के बिहार पुलिस अवर सेवा आयोग द्वारा आयोजित दरोगा बहाली में कुमार राहुलम ने सफलता पाई है इनकी प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव के उत्क्रमित मध्य विद्यालय से हुई उसके बाद वर्ष 2011 में निहाल पांडे उच्च विद्यालय सिकरौल से मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की एवं 2013 में इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय से उन्होंने 2016 में स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की इसके बाद वह तैयारी में लग गए वर्तमान में कुमार राहुलम इनकम टैक्स डिपार्टमेंट में टैक्स असिस्टेंट के पोस्ट पर काम कर रहे थे वहीं पहली बार 2018 में दरोगा बहाली में जन्मतिथि कम होने के कारण वह सफल नहीं हो पाए थे लेकिन इस बार सफलता हाथ लग गई और दरोगा में उनका चयन हो गया दरोगा बनने की सूचना के बाद पूरे गांव के लोग बधाई देने उसके घर पहुंच गए कुमार राहुल की माता मीरा देवी गृहिणी है गांव के बेटे के दरोगा बनने पर गांव वाले भी काफी खुश नजर आ रहे हैं(

शराबी गिरफ्तार, पुलिस ने भेजा जेल

हवेली खड़गपुर (मुंगेर) ।खड़कपुर पुलिस ने गस्ती के दौरान अनुमंडल कार्यालय मार्ग से नशे की हालत में एक शराबी को गिरफ्तार किया है। थाना प्रभारी विपिन कुमार सिंह ने बताया की गस्ती के दौरान अनुमंडल कार्यालय मार्ग में टेटिया बम्बर पंचायत के मेहराना टांड़ निवासी गोविंद कुमार को नशे की हालत में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

स्वास्थ्य चौपाल का आयोजन

बरियारपुर (मुंगेर) ।विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर नीरपुर पंचायत के लालजी टोला गांव के काली मन्दिर के प्रांगण में स्वास्थय चौपाल का आयोजन किया गया ।अध्यक्षता पंचायत के उप मुखिया अंजनी कुमार ने किया। इस अवसर पर उपस्थित प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डा विजय कुमार, पीएस आई इण्डिया अमीत कुमार, पिड़ामल फौण्डेसन रजनीश कुमार, बी एच एम विश्व रंजन, प्रार्मश दाता अशिष कुमार, ऐ एन एम सरिता कुमारी, अपदा मित्र दिनेश कुमार, व अबधेश कुमार उपस्थित रहे ।उन्होंने कहा कि कम संतान सुखि इन्सान के श्लोगन के सभी सुविधा अपनाये ओर अपने भविष्य को वेहतर बनाने के परिकल्पना वनाने मे सरकार का सहयोग करे आपके परिवारों मे खुशहाली लाने का बैहतर उपाय है। साथ ही साथ ईनाम पाने का हकदार बने।

मारपीट में चोट लगने से इलाज के दौरान छात्र की मौत

पटना सिटी (प्राकि)। आलमगंज थाना क्षेत्र के रहने वाले और सेंट ऐंस हाई स्कूल के दसवीं के छात्र आदित्य कुमार की मौत इलाज के दौरान हो गई। इस संबंध में उनके पिता संजीव कुमार ने खाजेकलां थाना में आवेदन देते हुए एक को नामजद और अन्य को अज्ञात बताया है ।इस संबंध में डीएसपी-2 डॉक्टर गौरव कुमार का कहना है कि संजीव कुमार के द्वारा आवेदन दिया गया है, जिसमें उसके बेटे के छात्र मित्र के द्वारा मारपीट किए जाने की बात कही गई है ।वहीं दूसरी ओर थानाध्यक्ष का कहना है कि 29 जून को छात्र के पेट में साइकिल का हैंडल धंस गया था। उसके बाद उसका इलाज स्थानीय स्तर पर कराया गया। एक-दो दिन के बाद जब स्थिति बिगड़ी, तो उसे निजी अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया, जहां उसकी मौत हो गई। छात्र आदित्य कुमार की मौत के बाद संबंधित स्थानीय थाना की पुलिस बयान लेने गई थी, मगर परिजनों ने मामला दर्ज करने से इनकार कर दिया ।इसके बाद शव का दाह संस्कार भी कर दिया गया।

डीएम ने कृषि विभाग के संचालित योजनाओं की समीक्षा, दिए कई निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। जिला पदाधिकारी वर्षा सिंह की अध्यक्षता में निदेशक उद्यान, बिहार, पटना की उपस्थिति में कृषि विभाग अन्तर्गत संचालित योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई। वषार्पात समीक्षा के दौरान पाया गया कि जून माह में 38.11 तथा जुलाई माह में 56.70 प्रतिशत वर्षा की कमी पाई गई। वैकल्पिक फसल अन्तर्गत मक्का, मडुआ, चीना एवं ज्वार फसल लगाने हेतु किसानों के बीच प्रचारित करने का निदेश दिया गया। खरीफ फसल का बिचड़ा आच्छादन समाप्ति की ओर है, दो दिनों के अन्दर धान बीज का वितरण एवं एक सप्ताह के अन्दर अन्य सभी बीजों यथा मक्का, मिलेट्स एवं अरहर के बीज किसानों के बीच वितरण कार्य पूर्ण कराने का निदेश दिया गया। ईंल्ल अस्रस्र पर पंचायतवार आच्छादन कृषि समन्वयक को पूर्वाहन 12:00 बजे से पूर्व अपलोड करने तथा प्रखंड स्तर पर अप० 2:00 बजे एवं जिला स्तर पर अप० 4:00 बजे तक समीक्षा कर मुख्यालय को प्रेषित करने का निदेश दिया गया। यह कार्य अवकाश के दिनों में भी किया जायेगा। यांत्रिकरण योजना के तहत वितरित किये गये यंत्रों के अनुदान का भुगतान दो दिनों के अन्दर करने का निदेश दिया गया। उद्यानिक योजना के तहत क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम अन्तर्गत अमरूद एवं पपीता का पौधा शीघ्र वितरण कराने का निदेश दिया गया। टमाटर एवं परवल की खेती बृहत पैमाने पर कराने हेतु सोनतटीय क्षेत्र अन्तर्गत अमरा एवं रामपुर वैना पंचायत के किसानों से विचार विमर्श कर सुझाव 02 दिनों के अन्दर मुख्यालय को उपलब्ध कराने का निदेश दिया गया। मिट्टी नमूना जाँच के तहत एक सप्ताह के अन्दर जाँच कार्य पूर्ण कर मृदा स्वास्थ्य कार्ड उपलब्ध कराने का निदेश दिया गया। न्यायालय में लंबित मामलों का निपटारा शीघ्र कराने का निदेश दिया गया। बैठक में जिला कृषि पदाधिकारी, अनुमंडल कृषि पदाधिकारी, सहायक निदेशक उद्यान, उप परियोजना निदेशक आत्मा के साथ अन्य उपस्थित रहे।

बड़हरा विधायक, भाजपा जिलाध्यक्ष सहित कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया पौधारोपण

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान कार्यक्रम के तहत गुरूवार को भारतीय जनता पार्टी द्वारा बड़हरा विधानसभा के कोईलवर उतरी मंडल अंतर्गत बिरमपुर गांव में पूर्व मंत्री सह बड़हरा विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह,जिलाध्यक्ष दुर्गा राज,मंडल पदाधिकारियों सहित कार्यकताओ द्वारा 21 पौधो का पौधरोपण किया गया। उक्त अवसर पर बड़हरा विधायक ने कहा कि पुरे विश्व में जलवायु परिवर्तन हो रहा है। हम एक पेड़ लगाकर पर्यावरण संरक्षण कर पायेंगे एवं अपने बच्चों के आने वाले दिन में रक्षा कर पायेंगे। कार्यक्रम उच्च विद्यालय बिरमपुर, शिवमंदिर बिरमपुर , गोरिया स्थान आदि स्थानो पर हुआ। उक्त अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गा राज,कार्यक्रम जिला संयोजक , श्रीभगवान सिंह, सलेमपुर मंडल अध्यक्ष भाजपा धनंजय तिवारी,संजय चौधरी, रंजन सिंह प्रभु यादव, रजेय सिंह , उज्जवल सिंह, पप्पू सिंह, आदि अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ छात्र जेडीयू का आमरण अनशन शुरू

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं छात्र हितों की समस्या को लेकर छात्र जनता दल यूनाइटेड की कुंवर सिंह विश्वविद्यालय इकाई के द्वारा आज से आमरण अनशन शुरू किया गया है बताया जा रहा है कि समस्याओं को लेकर छात्र जदयू उन्हें वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति को पहले ज्ञापन दिया था लेकिन उसे पर कोई कार्रवाई नहीं होने से नाराज छात्र जदयू के कार्यकर्ता विश्वविद्यालय परिसर में आमरण अनशन पर बैठ गए हैं उनका कहना है कि वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय में एसयूवी के आरोपित परीक्षा नियंत्रक डॉक्टर अनवर इमाम को हटाने छात्र संघ चुनाव की तिथि जल्द घोषित करने विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए कैंटीन कॉमन रूम जो लाइब्रेरी में पुस्तक की उचित व्यवस्था करने एमबीए विभाग के शिक्षक कर्मचारी की नियुक्ति की उच्च स्तरीय जांच महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय में सरकार द्वारा रोक के बावजूद कर्मचारियों का संविदा पर हुए नियुक्ति का एसयूवी से जांच परीक्षा विभाग से नियंत्रित कंप्यूटर सेंटर से परीक्षा फल में गड़बड़ी का मामला कुंवर सिंह विश्वविद्यालय में गेस्ट फैकल्टी नियुक्ति की जांच समेत 9 सूत्री मांगे शामिल है इन्हीं को लेकर आज छात्र संगठन के लोग अमर नंदन पर बैठे हुए हैं और उनका कहना है कि जब तक इन मांगों पर कार्रवाई नहीं होती है वे लोग आमरण अनशन पर बैठे रहेंगे।

पशु एवं मत्स्य संसाधन मंत्री से वार्ता कर श्रीकृष्ण गौशाला से कराया अवगत

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] लगभग 10 महीने से चर्चा का विषय बने हुए श्रीकृष्ण गौशाला झाझा सनातन धर्मावलंबियों के लिए आस्था का केंद्र बना हुआ है ।लगभग 26 वर्षो से बंद पड़े गौशाला में प्रशासन के सहयोग से गुलजार हो उठा। झाझावासियो एवं परदेश में रह रहे झाझा प्रेमियों व गौ प्रेमियों द्वारा लगातार आर्थिक सहयोग से गौशाला का धीमे गति से विकास हो रहा है।

परंतु अब तक श्री कृष्ण गौशाला झाझा का चुनाव नहीं होने के कारण गौशाला सरकार की नजर में और क्रियाशील है तथा गौशाला और अक्रियाशील रहने के कारण किसी भी प्रकार का सरकारी वित्त अब तक प्राप्त न होने की वजह से गौप्रेमियों में भूरी भूरी नाराजगी देखने को मिल रहा है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद दक्षिण बिहार एसएफडी सह संयोजक सूरज बरनवाल ने पशु एवं मत्स्य संसाधन मंत्री बिहार सरकार श्रीमति रेणु देवी से टेलीफोनिक वार्ता कर श्रीकृष्ण गौशाला झाझा की वर्तमान स्थिति से अवगत कराते हुए अविलंब कार्यवाही करते हुए चुनाव करने का आग्रह किया। मंत्री रेणु देवी ने आश्वाशन दिया कि चुनाव प्रक्रिया को जल्द ही पूर्ण किया जाएगा। गौभक्त सोनू बरनवाल, अनिल बरनवाल, टिल्लू बंका, अनूप केशरी, श्रवण बरनवाल आदि ने एक प्रतिनिधिमंडल बनाकर मंत्री महोदया से भेंट करने की बात कही।

आशाकर्मी ने निकाली परिवार नियोजन को लेकर जागरूकता रैली

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] 11-31 जूलाई तक संचालित जनसंख्या नियंत्रण पखवाड़ा हेतु रेफरल अस्पताल परिसर से आशाकर्मी के द्वारा क्षेत्र में लोगों को जागरूक करने के लिए जागरूकता रैली निकाली गई। पखवाड़ा के माध्यम से लोगों के बीच प्रचार प्रसार के लिए सारथी रथ जो ऑडियों से लोगों तक जनसंख्या नियंत्रण को लेकर लोगों को महत्वपूर्ण तरह की जानकारी साझा करेगी। जागरूकता रैली को अस्पताल से क्षेत्र में प्रस्थान करने के लिए प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. अरूण कुमार सिंह, बीसीएम पंकज कुमार, स्वास्थ्य प्रबंधक सुभाषचंद्र कई तरह की महत्वपूर्ण जानकारी आशाकर्मी को देते हुए रवाना किया। प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी ने बताया कि परिवार नियोजन कार्यक्रम का उद्धेश्य और लाभ के बारे में आशाकर्मी प्रचार प्रसार करते हुए लोगों को बतायेगी। इस पखवाडा में कुल 75 महिला का बंध्याकरण और 10 पुरूषों का नसबंदी का लक्ष्य दिया गया है। बीसीएम, स्वास्थ्य प्रबंधक ने बताया कि इस कार्यक्रम को लेकर परिवान नियोजन के सभी साधन पीएचसी से लेकर स्वास्थ्य उपकेंद्र तक निशुल्क वितरण किया जाएगा। पीएचसी में इसके लिए मेला भी आयोजित किया गया है।

सदर अस्पताल में विश्व जनसंख्या पखवाड़ा दिवस का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। आर के सदर अस्पताल में आज विश्व जनसंख्या पखवाड़ा दिवस का आयोजन किया गया इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में भोजपुर के जिला पदाधिकारी राजकुमार उपस्थित हुए वहीं विश्व जनसंख्या पखवाड़ा दिवस के मौके पर नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को परिवार नियोजन के बारे में जागरूक किया गया।

क्योंकि जिस तरह से भारत देश की आबादी लगातार बढ़ रही है उसके लिए परिवार नियोजन बहुत जरूरी है वही इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भोजपुर के जिला पदाधिकारी ने कहा लगातार बढ़ रही जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए सभी लोगों को जागरूक रहने की जरूरत है क्योंकि केवल जनसंख्या बढ़ने से ही हमारे देश का विकास नहीं हो सकता है बढ़ती जनसंख्या के साथ-साथ संसाधनों की भी जरूरत होती है किसी को लेकर आज से विश्व जनसंख्या पखवाड़ा दिवस मनाया जा रहा है और लोगों को जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूक किया जा रहा है मौके पर सिविल सर्जन डॉक्टर शिवेंद्र कुमार सिंन्हा उपाधीक्षक डॉक्टर अरुण कुमार डॉक्टर प्रतीक अस्पताल प्रबंधक शशिकांत समेत काफी संख्या में अस्पताल के कर्मी मौजूद थे।

अंकिता कुमारी ने सीए 2024 की फाइनल परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सारण जिले का नाम किया रोशन

माँझी। सारण जिला जन सुराज के संयोजक तथा माँझी प्रखंड के झखडा गाँव निवासी ब्रजेन्द्र कुमार सिंह उर्फ मुन्ना भवानी व ममता देवी की पुत्री अंकिता कुमारी ने सीए 2024 की फाइनल परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सारण जिले का नाम रौशन किया है। अंकिता ने कठिन परिश्रम, ईश्वर की अनुकम्पा तथा माता पिता के आशीर्वाद को अपनी सफलता का राज बतलाया है।

परीक्षा में सफलता की सूचना पाकर अनेक शुभचिंतकों ने उन्हें बधाई दी है। अपनी लाडली की इस सफलता पर परिजनों व रिश्तेदारों ने मिठाई बांट कर अपनी खुशी का इजहार किया है। अंकिता की प्रारंभिक शिक्षा ज्योति सेंट्रल स्कूल एकमा तथा फिर एस एस एकेडमी आमी,बीएचयू से बी कॉम तथा आर्टिकलशिप लोहिया एंड एसोसिएट्स पटना से पूरी की।

आशा फैसिलिटेटर को मिला टास्क, लोगों को करें नशा मुक्ति के लिए उत्प्रेरित

प्रात : किरण संवाददाता

बरियारपुर (मुंगेर) ।हैल्थ एण्ड बैलनेस सेन्टर कल्याणपुर करहरिया के प्रागंण में आशा फैसिलेटर व आशा कार्यकताओं के बैठक आहुत कर सभी को टास्क दिया गया ।इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वास्थ प्रबंधक विश्वरंजन ने किया । वहीं मंच का संचालन बी सी एम प्रभाकर कुमार ने किया ।इस अवसर पर प्रखंड के 108 आशा दीदी के साथ 06 आशा फैसिलेटर उपस्थित रहे। सभी आशा दीदीयों को अपने अपने पौषक क्षेत्र से तीन महिलाओं के साथ साथ पुरुषों को नशावंन्दी के लिये उत्प्रेरित करना अनिवार्य होगा। जिससे मुंगेर जिले के स्तर मे सुधार होगा ।इसलिए आप लोगों के मेहनत व लगन से मुंगेर जिला अपग्रेड हो सकेगी। इसलिए आप लोग अभी से कार्य करना प्रारंभ करेंगे। तब यह कार्यक्रम सफल हो सकेंगी।

मुंगेर खगड़िया जिला का कुख्यात अपराधी अशोक यादव उर्फ अशोक सम्राट गिरफ्तार

मुंगेर (बिहार)। मुंगेर और खगड़िया दियारा क्षेत्र में किसानों से जमीन की खेती करवाने वाला, बाय जबरन रंगदारी वसूलने वाला अपराधी अशोक यादव उर्फ अशोक सम्राट उनके तीन साथी अपराधियों के साथ पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए जाने का समाचार मिला है। मुंगेर आरक्षी अधीक्षक से प्राप्त जानकारी के अनुसार महोली दियारा में कुछ हथियारबंद लोग किसी आपराधिक घटना को अंजाम देने के उद्देश्य से जुटे हुए हैं कि सूचना की सत्यापन के पश्चात एसपी के निर्देश पर प्रशिक्षु डीएसपी सह थाना अध्यक्ष मुफस्सिल के नेतृत्व में एसटीएफ और जिला सूचना इकाई तथा सशस्त्र बल की टीम द्वारा महोली दियारा में छापेमारी के लिए संयुक्त रूप से घेराबंदी कर खगड़िया जिला अंतर्गत मुफस्सिल थाना क्षेत्र के माथार गांव निवासी 50 हजार के ईनामी अपराधी अशोक यादव उर्फ अशोक सम्राट सहित उनके तीन साथियों सहित एसटीएफ जिला सूचना इकाई और मुफस्सिल थाना की पुलिस ने बुधवार को मोहाली दियारा से संयुक्त छापेमारी कर गिरफ्तार किया ।वे किस घटना को अंजाम देने के लिए अपराधी का जमावड़ा हो रहा था इसका पता नहीं चल पाया है। डीएसपी ने बताया कि अशोक सम्राट उर्फ. अशोक यादव माथार दियारा में जबरन किसानों के खेतों पर कब्जा कर खेती करवाता था तथा रंगदारी मांगने का काम करता था खगड़िया जिला के मुफस्सिल थाना में अशोक यादव के विरुद्ध रंगदारी लूट हत्या के कई आपराधिक मामले दर्ज हैं।

नव नियुक्त लिपिक एवं अमीनो का छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का जिला पदाधिकारी ने किया उद्घाटन

प्रात : किरण ब्यूरो

मुंगेर (बिहार)। जिला बंदोबस्त कार्यालय की ओर से गुरुवार को संग्रहालय सभागार में नवनियुक्त लिपिक एवं अमीनों का छह दिवसीय प्रशिक्षण जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस अवसर पर जिला बंदोबस्त पदाधिकारी सुनील कुमार, सहायक बंदोबस्त पदाधिकारी मुख्यालय राकेश कुमार सहित अन्य उपस्थित थे। जिलाधिकारी ने उपस्थित सभी 56 लिपिकों एवं अमीनों को संबोधित करते हुए कहा कि राज्य सरकार द्वारा आप लोगों का चयन एक वृहत और अत्यंत ही महत्वपूर्ण कार्य के लिए किया गया है। नई पारी की शुरूआत के साथ आप सभी युवा यदि पूरी तन्मयता के साथ प्रशिक्षण प्राप्त कर कार्य करेंगे तो राज्य सरकार ने जुलाई 2025 तक जो भूमि सर्वेक्षण एवं भूमि विवाद के शत प्रतिशत मामलों के निष्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया है, आसानी से पूर्ण हो जाएगा। इस लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम को गंभीरता से लेते हुए अपने कार्य का आरंभ करें। प्रशिक्षण में बताए गए प्रत्येक तकनीकी जानकारी को अपने डायरी अथवा नोटबुक में जरूर लिखें ताकि उससे आपकी जानकारी सही रहे और जरूरत परने पर दोबारा उसका अध्ययन कर जानकारी को और अधिक बढ़ा सकें। इसके अलावे आज के प्रशिक्षण में आप सबों को जो पुस्तकें उपलब्ध कराई गई है, उसका सही और गंभीरता पूर्वक अध्ययन करेंगे तो उससे आपको अपने संबंधित कार्य की और अधिक जानकारी प्राप्त होगी, जिससे आप लोगों को फील्ड में कार्य करने में किसी भी प्रकार की तकनीकी खामियों का सामना नहीं करना होगा। इस लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम को अत्यंत गंभीरता से लें, क्योंकि यही जानकारी आपको आगे भी काम देगी और आपके प्रगति में सहायक होगी। उन्होंने सभी अभ्यर्थियों को उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए उन्हें सचेत भी किया कि वे इस कार्य में पूरी ईमानदारी एवं पारदर्शिता बरतेंगे। तत्परता के साथ कार्य प्रारंभ करें और अपने कार्य से अपना व विभाग का नाम रौशन करें। आप बेहद तकनीकी युग में जी रहे हैं और जब आप विभागीय निदेर्शों एवं संबंधित प्रावधानों की भी जानकारी में मोबाइल का इस्तेमाल कर सकते। उन्होंने सभी युवा अभ्यर्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

जिला बंदोबस्त पदाधिकारी ने कहा कि आप सभी को इस प्रशिक्षण के बाद 11 दिवसीय फील्ड प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि जो भी जानकारी प्रशिक्षण से प्राप्त किया है उसका रिवीजन हो सके।

डीएम ने लोकसभा चुनाव में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को किया सम्मानित

प्रात : किरण ब्यूरो

मुंगेर (बिहार)। लोक सभा चुनाव 2024 के सफल संचालन में जिला प्रशासन के अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्य को लेकर गुरुवार को संग्रहालय सभाकक्ष में सम्मान समारोह का आयोजन जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उप विकास आयुक्त अजीत कुमार सिंह, नगर आयुक्त निखिल धनराज, अनुमंडल पदाधिकारी तारापुर राकेश कुमार, उप निर्वाचन पदाधिकारी राजीव कुमार सहित सभी अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।

इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि बीते लोक सभा चुनाव को निष्पक्ष और शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने को लेकर जिला प्रशासन के पदाधिकारियों और कर्मियों का जो सहयोग मिला वह अत्यंत ही सराहनीय रहा। आचार संहिता लागू होने से लेकर मतदान तथा मतगणना के पूरे 84 दिनों के चुनाव अवधि तक सभी कोषांगों के पदाधिकारियों एवं पुलिस प्रशासन के पदाधिकारियों का जो सहयोग मिला वह अत्यंत ही सराहनीय रहा। प्रथम चरण में जहां जमुई लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र के तारापुर विधान सभा क्षेत्र में हुए निर्वाचन कार्य में अनुमंडल पदाधिकारी तारापुर का अत्यंत ही सराहनीय प्रयास रहा। मेरे निर्देशन में उन्होंने प्रत्येक कार्य को स-समय करते हुए निर्वाचन को शांतिपूर्ण और निष्पक्ष वातावरण में संपन्न कराया, इसके लिए वो बधाई के पात्र हैं। जिलाधिकारी ने कार्मिक, नामांकन कोषांग, वाहन, प्रशिक्षण, ईवीएम, स्वीप, मीडिया सहित सभी कोषांगों का जो सहयोग मिला उसके लिए सभी पदाधिकारियों एवं कर्मियों को बधाई और शुभकामनाएं दी। प्रशिक्षण कोषांग के मास्टर ट्रेनरों द्वारा भी जो प्रशिक्षण दिया गया वह इतना कारगर साबित हुआ कि ईवीएम रिसीविंग और सीलिंग में भी किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं हुई।

प्राण प्रतिष्ठा पर हुआ धार्मिक अनुष्ठान, मानस पाठ भी

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

श्री श्री महावीर जी व शिव पार्वती परिवार की ओर से मालसलामी के नुरुउद्दीनगंज स्थित खंगर पर शिव परिवार के प्राण प्रतिष्ठा को लेकर धार्मिक आयोजन किया गया। वाराणसी से आए आचार्य आनंदराज मिश्र, उपाचार्य संजय उपाध्याय, रौशन बाबा, श्याम किशोर पांडेय, पप्पू पंडित और श्याम बाबा की देखरेख में भूमि व वेदी पूजन, कर्मकुटी व जलाधिवास का अनुष्ठान किया गया। आयोजन में कार्यकारी अध्यक्ष पार्थ सारथी, अध्यक्ष श्याम सुंदर कुमार, सचिव अशोक कुमार, कोषाध्यक्ष सतीश कुमार रजक आदि सक्रिय हैं। दूसरी ओर मच्छरहट्टा गली स्थित प्राचीन श्री काले हनुमान मंदिर में आचार्य विद्या भूषण पांडेय के आचार्यात्व में यजमान बने पुजारी पंडित राजेश मिश्र ने पूजा-अर्चना किया। इसके बाद मथुरा निवासी आचार्य मथुरानाथ चतुर्वेदी के व्यासत्व में रामचिरत मानस नवाह परायण यज्ञ का अनुष्ठान हुआ। इस दौरान मानस पाठ के साथ प्रवचन हुआ। मथुरा से आए भजन गायकों की ओर से भजनों की प्रस्तुति दी गई। गुप्त नवरात्रि में शक्तिपीठ व देवी मंदिरों में धार्मिक अनुष्ठान शक्तिपीठ श्री बड़ी पटनदेवी मंदिर में महंत विजय शंकर गिरि, विकास गिरी, सिद्धपीठ श्री छोटी पटनदेवी में भी पीठाचार्य अनंत अभिषेक द्विवेदी व आचार्य विवेक द्विवेदी की देखरेख व अगमकुआं शीतला माता मंदिर में मनोज श्रीमाली उर्फ छोटे बाबा व अमरनाथ बबलू की देखरेख में भगवती का श्रृंगार पूजन किया गया।

नव-नियोजित विशेष सर्वेक्षण अमीनों के शैक्षणिक प्रशिक्षण का शुभारंभ

प्रात : किरण ब्यूरो

पटना। पटना जिले के लिए सरकार द्वारा नव-नियोजित विशेष सर्वेक्षण अमीनों के शैक्षणिक प्रशिक्षण का शुभारंभ हिन्दी भवन स्थित ऑडिटेरियम में किया गया। इस अवसर पर समाहर्ता-सह-बंदोबस्त पदाधिकारी, पटना डॉ. चन्द्रशेखर सिंह द्वारा सभी प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित किया गया तथा उनके दायित्वों की बारीकियों से अवगत कराया गया। उन्होंने सभी अभ्यर्थियों को पूरी तन्मयता से प्रशिक्षण प्राप्त करने और प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात पूर्ण ईमानदारी से दायित्व निर्वहन की सीख दी। इस अवसर पर अपर समाहर्ता, प्रभारी पदाधिकारी बंदोबस्त पटना, सहायक बंदोबस्त पदाधिकारीगण, कानूनगो एवं अन्य भी उपस्थित थे। जिलाधिकारी ने कहा कि बिहार में प्रारंभ विशेष सर्वेक्षण के अन्तर्गत पटना जिला में विशेष सर्वेक्षण आरंभ करने हेतु राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के अंतर्गत 396 अभ्यर्थियों को नियोजन पत्र प्रदान किया गया है। इसमें 18 विशेष सर्वेक्षण सहायक बंदोबस्त पदाधिकारी, 36 विशेष सर्वेक्षण कानूनगो, 37 विशेष सर्वेक्षण लिपिक एवं 305 विशेष सर्वेक्षण अमीन हैं। विशेष सर्वेक्षण अमीनों का आज से सैद्धांतिक प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ है। 275 अमीनों द्वारा योगदान दिया गया है जिनका 4 बैच में छः दिवसीय सैद्धान्तिक प्रशिक्षण एवं 11 दिवसीय व्यावहारिक प्रशिक्षण भू-अभिलेख एवं परिमाप निदेशालय, बिहार पटना के निदेश के आलोक में दिया जाना है। उन्होंने कहा कि बिहार विशेष सर्वेक्षण सरकार की महत्वाकांक्षी योजना है। इससे भूमि विवाद का समाधान होगा। इस सर्वेक्षण कार्य को जुलाई 2025 तक पूरा किए जाने का लक्ष्य है। विशेष सर्वेक्षण अमीनों को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी डॉ. सिंह ने कहा कि कठिन परिश्रम के बदौलत आप सबने यह उपलब्धि हासिल की है। जिला प्रशासन के परिवार में आपका हार्दिक स्वागत है। सरकार के निदेशों के अनुरूप समय-सीमा के अंदर सर्वेक्षण कार्य पूर्ण करना है। इसके लिए आप सभी को लगन, ईमानदारी एवं कठिन श्रम से कार्य करना होगा। जिलाधिकारी ने कहा कि अमीनों का कार्य तकनीकी है। इसकी बारीकियों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अतः सभी कुशलता से प्रशिक्षण प्राप्त करें तथा अपने कार्य एवं जिम्मेदारियों का शत-प्रतिशत शुद्धता (एक्यूरेसी) के साथ निर्वहन करें। आप सभी के लिए व्यापक स्तर पर प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन किया जा रहा है। प्रशिक्षण से प्राप्त कौशल का प्रयोग करते हुए आप अपने कार्यो का बखूबी निर्वहन करेंगे।

मुहर्रम पर नौचंदी की मजलिस, निकला अलम

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

चमडोरिया स्थित दरगाह ए बाबुल हवायज हजरत अब्बास चमडोरिया इमामबाड़ा में नौचंदी की मजलिस का आयोजन गुरुवार को किया गया। इसमें जलालपुर से आए मौलाना नैय्यर जुल्कर नैन ने तकरीर करते हुए कहा कि मुहर्रम सच के लिए कुरबान होने के शहादत की दासतां है। इसमें सच के लिए कुरबान होने का जज्बा था। मजलिस से पहले अलम निकाला गया। इस दौरान जीनत ए अजा, दस्त ए सज्जादिया के लोगों ने नौहाखानी की। आयोजन में दरगाह के सचिव शाह जौहर इमाम जौनी, सरबर इमाम, डॉ सिकंदर अली खां, तनवीरूल हसन तन्नू, सैयद हसन अली आदि शामिल थे। सचिव ने बताया कि मुहर्रम को लेकर घरों में मजलिस का आयोजन हो रहा है। छठे मुहर्रम पर नौजर कटरा से अलम का जुलूस निकाला जाएगा। सातवीं से दशमी मुहर्रम तक अलम व ताबूत के साथ जंजीरी मातम का जुलूस अलम के साथ निकाल जाएगा। वहीं खाजेकलां के सिंधी दालान स्थित मेहंदी अली खान साहेब के इमामबाड़ा में अशरा की मजलिस हुई। संयोजक सैयद हसन अली ने बताया कि सातवीं मुहर्रम पर यहां से मेहंदी के ताजिया का जुलूस इमामबाड़ा से निकाला जाएगा।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com
राष्ट्रीय दैनिक प्रातः किरण
पटना, शुक्रवार, 12 जुलाई, 2024

संक्षिप्त खबरें

प्रशिक्षण कराने के लिए ऑन लाइन प्रक्रिया 26 जुलाई से

गया।अल्पसंख्यक कल्याण विभाग बिहार सरकार के द्वारा बिहार राज्य अल्पसंख्यक वित्त निगम पटना के माध्यम से बिहार में 20610 अभ्यर्थीयों को चोबीस ट्रेड में मुख्यमंत्री श्रमशक्ति योजना अंतर्गत रोजगारोन्मुख कौशल प्रशिक्षण कराने के लिए 26 जुलाई तक आन लाइन प्रक्रिया के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किया जा रहा है जिसमें उम्र 18 से 45 वर्ष तक के अल्पसंख्यक समुदाय के ऐसे आवेदक जिनकी वार्षिक आय चार लाख पचास हजार से अधिक न हो,निःशुल्क प्रशिक्षण हेतु आवेदन कर सकते हैं इस योजना में इच्छुक और पात्र उम्मीदवार बिहार राज्य अल्पसंख्यक वित्त निगम के वेबसाइट पर दिए गये लिंक पर आवेदन कर सकता है इस महत्वाकांक्षी योजना है जिससे बेरोजगार अभ्यार्थियों को व्यवसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से रोजगार करने में मदद मिलेगी, विभिन्न ट्रेड और असिस्टेंट इलेक्ट्रीशियन,जेनरल ड्यूटी, असिस्टेंट,वाटर डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम,टु व्हीलर सर्विस आदि में प्रशिक्षण कराया जाएगा, परीक्षा बाद प्रमाण पत्र निर्गत किया जाएगा, इच्छुक अभ्यर्थी दिए गए वेबसाइट पर दिनांक 26 जुलाई तक आवेदन कर सकते हैं सफल प्रशिक्षित अभ्यार्थियों को संभव नियोजन प्लेसमेंट भी कराया जाएगा,पुरे राज्य के लिए कुल 24 ट्रेड उपलब्ध है।

भाजपा प्रतिनिधि मंडल ने मां कामाख्या देवी का किया दर्शन

गया।गया के भाजपा के श्रेत्रीय प्रभारी मनिष पंकज मिश्रा सहित गया जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता,सुनिल बंम्बयीया, मिडिया प्रभारी संतोष ठाकुर,वाणीज्य प्रकोष्ठ संयोजक दिपक कुमार,ने भारत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तिसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर असाम स्थित कामरु कामाख्या मां के दर्शन करके मां से गया शहर एवं जिले के खुशीहाली के साथ साथ, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस कार्यकाल में भारत ने विकास और रोजगार मिलने की प्रार्थना कीए है इसके बाद भगवान राम की नगरी अयोध्या में भगवान राम से प्रार्थना किए गया और बिहार के विकास के लिए और अमन चेन के लिए मनिष पंकज मिश्रा सहीत सभी लोगों ने मिलकर प्रार्थना किए हैं और मां कामाख्या का विधिवत पुजा अर्चना किए हैं।

2024-26 में नामांकन की प्रक्रिया शुरू

औरंगाबाद।दाउदनगर प्रखंड के विश्व रत्न इंदिरा गांधी महिला महाविद्यालय में इंटर सत्र 2024-26 में नामांकन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। ओ एफ एस एस पद्धति के माध्यम से प्रथम लिस्ट में चयनित विद्यार्थी 14 जुलाई तक नामांकन ले सकते हैं। कॉलेज की प्राचार्या डॉ पुष्पा कुमारी के नेतृत्व में नामांकन की प्रक्रिया सुचारू रूप से क्रियान्वित हो रही है।पुष्पा कुमारी ने बताया कि विज्ञान संकाय में 264 विद्यार्थी एडमिशन ले चुके हैं जबकि कला संकाय में 07 विद्यार्थी नामांकन करा चुके हैं।नामांकन को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने में प्रो सुरेंद्र प्रसाद, प्रगति कुमारी, यशोदा कुमारी सराहनीय भूमिका निभा रही हैं।सत्र 2022-24 का अंक पत्र,प्रोविजनल, महाविद्यालय परित्याग प्रमाण पत्र काउंटर से दिए जा रहे हैं विद्यार्थियों को कोई असुविधा न हो इसके लिए सभी काउंटर पर कर्मचारी अपनी-अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।दाउदनगर अनुमंडल का यह पहला कॉलेज है जहां अध्ययन अध्यापन की समुचित व्यवस्था है।

बंदेया थानाध्यक्ष की वेतन रोकने का आदेश

औरंगाबाद।किशोर न्याय परिषद औरंगाबाद के प्रधान दंडाधिकारी सह अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी सुशील प्रसाद सिंह ने बंदेया थाना कांड संख्या-20/17 में सुनवाई करते हुए बंदेया थानाध्यक्ष का वेतन तत्काल प्रभाव से रोकने का आदेश जारी किया है। अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि पिछले सात सालों से आरोप पत्र और कांड दैनिकी की मांग की जा रही है पिछले 01 जुलाई 24 को थानाप्रभारी को शोकोज किया गया था और कहा गया था कि दस दिन के अंदर स्पष्टीकरण तथा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाएं अन्यथा मजबुरन कड़ी कार्रवाई की जा सकती हैं। 11 जुलाई 24 को न ही प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया और न ही स्पष्टीकरण, बोर्ड ने कहा कि यह घोर लापरवाही और कर्तव्यहीनता का घोतक है।एवं बोर्ड के आदेश का अवमानना है।बिहार जे जे एक्ट 2017 के 10 (6) का उल्लघंन है अतः मामले की गम्भीरता को देखते हुए बंदेया थानाध्यक्ष की वेतन तत्काल प्रभाव से रोकने का आदेश जारी किया गया है।

ट्रेन से गिरकर एक व्यक्ति की मौत

एकमा। पूर्वोत्तर रेलवे के छपरा सिवान रेल खंड के दाउदपुर एकमा रेलवे स्टेशन के बीच हेकाम गांव के समीप ट्रेन से एक व्यक्ति कि मौत हो गई।इसकी जानकारी थाना अध्यक्ष उदय कुमार को मिलते ही थाने के एस आई कुणाल कुमार व पुलिस बल के साथ पहुंचकर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए छपरा भेज दिया। मृतक एक पैर से विकलांग था जिसकी उम्र करीब 40 वर्ष था।

केयाल में 15 वार्ड व 1 राजस्व गांव, स्वच्छता के नाम पर सरकारी राशि बंदरबाट

प्रात: किरण संवाददाता

करपी,अरवल। केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार के सरकारी योजनाओं में पेयजल एवं स्वच्छता के नाम पर सरकारी राशि का बंदर बांट क्षेत्र में धड़ल्ले से हो रहा है। करपी प्रखंड के केयाल पंचायत में अरवल औरंगाबाद जिले की सीमा पर स्थित दुलार बिगहा मोड के निकट 8 लाख रुपए की लागत से बना अपशिष्ट प्रसंस्करण इकाई मात्र शोभा का केंद्र बन कर रह गया है।

अब पंचायत मे कचरा नहीं होता है उठाव,सुध लेने वाला कोई नहीं: सही मायने में इसका वास्तविक इस्तेमाल नहीं हो रहा है प्रसंस्करण इकाई में बराबर ताला लटका रहता है और वहां एक भी स्वच्छता कर्मी उपस्थित नहीं रहता है। इस पंचायत में साफ–सफाई का काम कई महीनों से बाधित है और इसका सुध लेने वाला कोई नहीं है। जब अधिकारियों का दौरा होता है तो कचरा उठाव करने वाली रिक्शा को सड़क पर उतार दिया जाता है और फिर फोटो वीडियो बनाकर विभागीय कोरम पूरा कर उसे वापस लगा दिया जाता है। इसकी देखभाल मुखिया राम एकबाल साव एवं सुपरवाइजर को मिला है। केयाल पंचायत में कुल 15 वार्ड हैं और कहीं भी कोई सफाई नहीं हो रहा है। साफ–सफाई के लिए कमीर्यों की नियुक्ति हुई थी।

आठ माह से मजदूरी का भुगतान नहीं हो रहा: कर्मियों को आठ माह से मजदूरी का भुगतान नहीं हो रहा है। पैसा नहीं मिलने से कर्मी काफी निराश हैं। मिली जानकारी के अनुसार साफ सफाई का कोई काम नहीं होता है। अपशिष्ट प्रसंस्करण इकाई का निर्माण कार्य 2023 में पूर्ण हो गया। अरवल जिला पदाधिकारी वर्षा सिंह के द्वारा इसक उद्घाटन किया गया था लेकिन उदघाटन के कुछ महीनों के बाद कचरा उठाव का काम बंद कर दिया गया है। बरसात के दिनों में गांव की गलीयों में लग रहे कचरे का अंबार एवं होने वाली महामारी जैसे बीमारी से बचने के लिए ग्रामीणों ने मुखिया से शिकायत की है। इस संदर्भ में स्वच्छता पर्यवेक्षक पिंटू कुमार ने बताया कि स्वच्छता अभियान में सफाई कमीर्यो को कई माह से मजदूरी नहीं मिली है। केयाल पंचायत मुखिया राम एकबाल साव ने कहा की बिहार सरकार के द्वारा बीच में कुछ नए फरमान जारी किया गया था जिसके कारण कचरा उठाव साफ–सफाई का कार्य बाधित है।

केयाल पंचायत में लाखों से बना अपशिष्ट प्रसंस्करण इकाई बनी शोभा की वस्तु

नगर आयुक्त द्वारा नगर निगम क्षेत्र के विभिन्न सरकारी भवनों का किया गया निरीक्षण

प्रात: किरण संवाददाता

गया।मुख्यमंत्री वृद्धजन आश्रय स्थल योजना के भवन के चयन हेतु नगर आयुक्त, गया नगर निगम, अभिलाषा शर्मा के द्वारा गया नगर निगम क्षेत्र के विभिन्न सरकारी भवनों का निरीक्षण किया गया है। इस निरीक्षण के क्रम में सर्वप्रथम नारायण चूहा स्थित एस. आई. पी. योजना से निर्मित विश्राम गृह सह शौचालय का निरीक्षण किया गया है। ज्ञात होगी मुख्यमंत्री वृद्ध जन आश्रय स्थल योजना सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है जिसमें बिहार के सभी मुख्य शहरों में 50 बेड का वृद्ध जनों के लिए आश्रय स्थल का निर्माण किया जाना है। इसके लिए किसी सरकारी भवन एवं सरकारी भवन उपलब्ध नहीं होने की स्थिति में भाड़े पर भवन का लिया जाना है। आश्रय स्थल में वृद्धि जनों के लिए बेड , शौचालय ,तीनों समय का भोजन उपलब्ध कराया जाएगा । इसके अतिरिक्त वृद्धि जनों को योग , चिकित्सकीय सुविधा आदि उपलब्ध रहेगी,साथ ही साथ कपड़ा साफ करने हेतु लॉन्ड्री की सुविधा एवं बाल दाढ़ी बनाने हेतु नाई उपलब्ध रहेंगे। वृद्धि जनों के देखभाल हेतु नर्सिंग की सुविधा एवं फिजियोथैरेपिस्ट उपलब्ध रहेंगे। चिकित्सकीय जांच हेतु सप्ताह में दो दिन डॉक्टर आश्रय स्थल में उपस्थित रहेंगे। नगर आयुक्त द्वारा कॉलरा अस्पताल स्थित विश्राम गृह सह शौचालय एवं गांधी मैदान स्थित विश्राम गृह सह शौचालय का भी निरीक्षण किया गया है। इस निरीक्षण में उपनगर आयुक्त शिवनाथ ठाकुर, नगर प्रबंधक आसिफ सेराज, कनीय अभियंता एवं सहायक निशांत कुमार उपस्थित थे।

बढ़ती मानव जनसंख्या पर रोक लगाने हेतु जीबीएम कॉलेज ने निकाली जागरूकता रैली

प्रात: किरण संवाददाता

गया। विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर गौतम बुद्ध महिला कॉलेज की एनएसएस इकाई एवं सेहत केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में बढ़ती मानव जनसंख्या पर रोक लगाने हेतु एक जागरूकता रैली निकाली गयी है। इस रैली में कॉलेज की स्वयंसेवकों, एनसीसी कैडटों, अन्य विभागों की छात्राओं एवं प्रोफेसर्स ने भाग लिया। सेहत केंद्र की पीयर एजुकेटर्स अन्या एवं हर्षिता मिश्रा तथा एनएसएस पदाधिकारी एवं सेहत केन्द्र की नोडल ऑफिसर डॉ. प्रियंका कुमारी, एनसीसी केयर टेकर ऑफिसर डॉ कुमारी रश्मि प्रियदर्शनी एवं मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष प्रीति शेखर के नेतृत्व में छात्रा मुस्कान, जूही, शिल्पा, दीप्ति, वैष्णवी, सपना, नंदनी, खुशी, करिश्मा, भारती व अन्य सभी छात्राओं ने सड़क पर "हम दो, हमारे दो", "बढ़ती जनसंख्या पर रोक लगाना है। भारत को विकसित बनाना है", "छोटा परिवार, सुखी परिवार" जैसे नारे लगाते हुए लोगों

को जनसंख्या नियंत्रण पर रोक लगाने के लिए प्रेरित किया है।

कॉलेज की पीआरओ डॉ रश्मि ने बताया कि गत मंगलवार को विश्व जनसंख्या दिवस पर एनएसएस इकाई एवं सेहत केन्द्र द्वारा डॉ. प्रियंका एवं सेहत केंद्र की पीयर एजुकेटर्स अन्या और हर्षिता के संयोजन में महाविद्यालय परिसर में आयोजित स्लोगन राइटिंग कम्पटीशन में कोमल कुमारी, मुस्कान कुमारी एवं दीप्ति शर्मा तथा पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता में दीप्ति शर्मा, शिल्पा कुमारी एवं सपना कुमारी ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया था। निर्णायक मंडल के सदस्यों में डॉ रश्मि प्रियदर्शनी, डॉ जया चौधरी एवं प्रीति शेखर थीं। छात्राओं द्वारा बनाये गये उन्हीं पोस्टर्स और स्लोगन्स द्वारा सड़कों पर यात्रियों को जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों एवं रोकथाम के उपायों से अवगत कराया है। कॉलेज के प्रभारी प्रधानाचार्य डॉ सहदेव बाउरी, प्रो अफशां सुरैया, डॉ नूतन कुमारी, डॉ शगुफ्ता अंसारी, डॉ. बनिता कुमारी, डॉ फरहीन वजीरी, डॉ रुखसाना परवीन आदि ने रैली में शामिल सभी स्वयंसेवकों, एनसीसी कैडटों, छात्राओं और प्रोफेसर्स को हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

आंदोलन को दबाना चाहती है फर्जी मुकदमा करके रेलवे प्रशासन : मनोज

अरवल। 10 वर्षों से जन आंदोलन चलाने वाले मुख्य संयोजक मनोज सिंह यादव के घर रेलवे सीआरपीएफ द्वारा नोटिस चिपकाया। उनके गिरफ्तारी के लिए मकान पर नोटीषग चिपकाए गया। 2014 से लगातार यह रेल आंदोलन मनोज सिंह यादव के नेतृत्व में लगातार रेलवे ट्रैक के लिए चलाए जा रहा है जिसमें सैकड़ो बार जिला एवं प्रखंड स्तर पर धरना प्रदर्शन दो–दो बार बिहटा में रेलवे ट्रैक जाम तीन बार औरंगाबाद से हाजीपुर जोनल कार्यालय तक 155 किलोमीटर रेलवे लाइन के लिए पैदल यात्रा दर्जनों बार बार डीआरएम ऑफिस दानापुर हाजीपुर जोनल कार्यालय रेलवे संगठन महेंद्रु घाट पटना निर्माण संगठन रेलवे लाइन मुगलसराय धरना प्रदर्शन किया गया है मनोज सिंह यादव के नेतृत्व में छह बार दिल्ली जंतर मंतर पर सत्याग्रह भी किया गया है यानी यूं तो कहिए लगातार 2014 से 2024 तक रेलवे के जन आंदोलन में मनोज सिंह यादव की भूमिका अहम है लगातार प्रयास के बल पर जनता के समर्थन से जन आंदोलन के बल पर 2023 में नए सर्वे करने के लिए मोदी सरकार के आदेश अनुसार नया सर्वे एवं डीपीआर के बाद 2024 में 3:30 करोड़ की अंतिम बजट भी आ गया है सर्वे के साथ–साथ पुल पुलिया क्या मिट्टी जांच भी हो चुका है लेकिन कार्य में तेजी लाते हुए जमीन अधिग्रहण के लिए भी अभी संघर्ष जारी है लेकिन जन आंदोलन के प्रमुख आंदोलनकारी मनोज सिंह यादव पर करीब दर्जनों मुकदमा करके प्रशासन आंदोलन को रोकना चाहती है आज दानापुर केंद्रीय रिजर्व रेलवे फोर्स के द्वारा उनके घर पर इश्तिहार चिपक कर नोटिस दिया गया है यूं तो कहिए जन आंदोलन लगातार करने वाले मनोज सिंह यादव 6 दिसंबर 2023 को हाजीपुर जोनल कार्यालय पर आमरण अनशन पर बैठे थे इसके पहले इनके द्वारा 6 नवंबर 2023 को ही मनोज सिंह यादव के नेतृत्व में बिहटा रेलवे ट्रैक को जाम किया गया था लेकिन कुछ और संगठनों के द्वारा 6 दिसंबर 2023 को रेलवे जाम किया गया था लेकिन रेलवे प्रशासन मनोज यादव को केस में फसाने के लिए इस आंदोलन के लिए भी जिम्मेदार ठहराया रेलवे लाइन के लगातार आंदोलनकारी मनोज सिंह यादव ने कहा कि रेलवे प्रशासन के खिलाफ फर्जी मुकदमा के खिलाफ जल्द ही डीआरएम दानापुर पर सत्याग्रह रखने का काम करेंगे।

इन्व्हीर क्लब ऑफ गया द्वारा वर्ल्ड पापुलेशन को मद्देनजर जनसंख्या रोकथाम उपाय बताए गए

प्रात: किरण संवाददाता

गया।इनरव्हील क्लब आफ गया द्वारा रोटरी कैंपस स्थित सहेली सेंटर में अनेक कार्यक्रम किए गए हैं।सबसे पहले जानी–मानी गाइनेकोलॉजिस्ट डॉ मंजू सिंह एवं रेखा सिंह द्वारा पर्सनल हाइजीन किस तरह रखा जाए के विषय में लड़कियों को बताया गया है। वर्ल्ड पापुलेशन को मद्देनजर जनसंख्या रोकथाम के उपाय भी बताए गए हैं।बच्चों के बीच पॉपुलेशन डे पर ड्राइंग कंपटीशन का आयोजन किया गया है।जिसमें शबाना आजम प्रथम, दिव्या कुमारी द्वितीय तथा अंशिका तृतीय रही। डॉ अंजुमन द्वारा जनसंख्या नियंत्रण के रोकथाम तथा फायदे बताए गए हैं। बच्चों के बीच में सैनिटरी नैपकिन एवं साफ सफाई के लिए, साबुन डेटॉल ब्रश पेस्ट आदि पीएएस दुर्वा सहाय द्वारा वितरित किया गया है।इस मौके पर पीडी सी गीता अग्रवाल पीडीसी ऋतु डालमिया,आइएसओ आशा कन्धन्वे शुभ्रा गुप्ता , राज ढिल्लन अनामिका सिंह आदि उपस्थित थे।

किंजर पंचायत की बेटी अनीशा प्रिया कुशवाहा बनी दरोगा, क्षेत्र में हर्ष का माहौल

प्रात: किरण संवाददाता

करपी प्रखंड के किंजर पंचायत अंतर्गत करहरी निवासी अनीशा प्रिया कुशवाहा ने बिहार दरोगा भर्ती परीक्षा में सफलता हासिल की है ,उनकी प्राथमिक शिक्षा किंजर के निजी विद्यालय ज्ञान विहार पब्लिक स्कूल से हुई थी ,हाई स्कूल किंजर से मैट्रिक पास कर शहीद जगदेव कॉलेज कुर्था से भौतिकी विषय से स्नातक की तत्पश्चात उच्च शिक्षा के लिए पटना एन कॉलेज चली गई जहाँ से उन्होंने पीजी की डिग्री हासिल की।वही रहकर बिहार दरोगा भर्ती की परीक्षा की तैयारी कर रही थी,अंतिम रूप से चयनित होने के बाद इस बात की जानकारी वो सबसे पहले अपनी माता गृहिणी शोभा कुमारी को दी ,जिनको सुनते ही खुशी के आसु छलक गए,विदित हो कि इनके पिता

स्व॰ संजय सिंह जदयू के वरिष्ठ नेता रहे है ,जो सामाजिक रूप से बहुत ही सक्रिय रहते थे।

बातचीत के दरम्यान अनीशा ने कहा कि वो इस सफलता का पूरा श्रेय अपने माता –पिता और गुरु जनो को देती है ।वह अपने पिता को आदर्श मानती है ,उनके जैसा सामाजिक सेवा करना चाहती है और उनके अधूरे कार्य को पूर्ण करना चाहती है ।

मुहर्रम पर्व को लेकर शांति समिति की बैठक

प्रात: किरण संवाददाता

करपी,अरवल। शहर तेलपा थाना परिसर में मुहर्रम पर्व को लेकर क्षेत्र के सामाजिक ,बुद्धिजीवीयों एंव क्षेत्रीय पंचायत प्रतिनिधियों के साथ शांति समिति की बैठक आयोजित की गयी! बैठक की अध्यक्षता थाना अध्यक्ष सुबोध कुमार सिंह ने किया! शांति समिति की बैठक में उपस्थित सभी लोगों को हमने संबोधित करते हुए कहा कि हर एक धर्म में मनाया जाने वाला हर एक पाव का अपना

अलग महत्व होता है हम लोगों को हर एक पर्व शांति व सदभाव के मनाना चाहिए! थाना अध्यक्ष ने कहा कि उत्सव या पर्व या त्योहार एक समुदाय द्वारा मनाया जाने वाला एक असाधारण घटना है और उस समुदाय और उसके धर्म या संस्कृतियों के कुछ विशिष्ट पहलुओं पर केन्द्रित है। मुहर्रम मुस्लिम समुदाय का विशेष पर्व है, जिसे नव वर्ष के रूप में भी मनाया जाता है। इस्लामिक कैलेंडर के अनुसार मुहर्रम इस्लाम धर्म का पहला महीना होता है, जिसकी शुरूआत 7 जुलाई 2024 से हो चुकी है। माना जाता है कि मुहर्रम को बकरीद के 20 दिन बाद मनाया जाता है! उन्होने पर्व को लेकर प्रशासनिक तैयारी के बारे में लोगो को अवगत कराया! बैठक में उपस्थित बंसी सोनभद्र प्रखंड के राजस्व कर्मचारी प्रेम आनंद प्रसाद ने लोगों से कहा कि हर एक धर्म के पर्व को शांतिपूर्वक संपन्न करवाने में हम प्रशासन के लोगों को आपसे सहयोग की अपेक्षा रहती है ! पर्व के दरमयान असामाजिक तत्वों पर विशेष नजर रखे ! बैठक में बेलखरा पंचायत के मुखिया सूरजमल सिंह, सरपंच पिंटु कुमार, सामाजिक कार्यकर्ता मनाउल होदा,संजय शर्मा,अशोक शर्मा सहित कई लोग उपस्थित रहे! बैठक के दरमयान शहरतेलपा थाना के सभी पुलिस कर्मी भी मौजुद रहे !

मनीष कुमार वर्मा को जदयू के राष्ट्रीय महासचिव बनाया जाने पर प्रदेश सचिव अरुण कुमार राव ने दी बधाई

गया।मुख्यमंत्री के पूर्व सचिव मनीष कुमार वर्मा को जदयू के राष्ट्रीय महासचिव बनाया जाने पर जदयू प्रदेश सचिव अरुण कुमार राव ने उनके आवास पर मिलकर हर्ष व्यक्त करते हुए दी बधाई दी है।उन्होंने कहा कि ऐच्छिक सेवानिवृत्त के बाद पुर्व आईएएस ऑफिसर मनीष कुमार वर्मा, नितीश कुमार के सरकार से जुड़कर लगातार योजना बनाने में योगदान दे रहे थे ,वे मुख्यमंत्री के सलाहकार के रूप में अपने कार्य से सभी को प्रभावित कर चुके हैं वे अब जदयू पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव बनाए गए हैं इससे पार्टी के संगठन में काफी मजबूती मिलेगी बधाई देने वाले में जिला प्रवक्ता अवध बिहारी पटेल, जिलाअध्यक्ष प्रेम प्रकाश पटवा,विनोद यादव,महादलित प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष डॉ जितेन्द्र दास, डॉ शिवशंकर चौधरी, अरविंद प्रियदर्शी,शहजाद शाह,अजीत शर्मा, आदि थे।

खेल मंत्री सुरेंद्र मेहता को भोलेनाथ के चित्र देखकर सम्मानित किया:अविनाश

अरवल। लागोरी एसोसिएशन ऑफ बिहार के तत्वाधान में पाटलिपुत्र खेल परिसर में महाराष्ट्र में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में बिहार के बालक एवं बालिका दोनों वर्गों में बिहार के लिए कांस्य पदक प्राप्त किया। इस मौके पर बिहार सरकार के खेल मंत्री सुरेंद्र मेहता एवं बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के महानिदेशक सह मुख्य कार्यकारी अधिकारी गण संयुक्त रूप से खिलाड़ियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दिए। इस दौरान पर दिल्ली पब्लिक स्कूल के शारीरिक शिक्षक,अविनाश कुमार ने लगोरी एसोसिएशन ऑफ बिहार के महासचिव, रणधीर कुमार अध्यक्ष , दीपक ठाकुर को भगवान भोलेनाथ के चित्र देखकर सम्मानित किया संघ के पदाधिकारी ने अगले माह में होने वाले प्रतियोगिताओं में अरवल जिले से बालक एवं बालिका खिलाड़ी भाग लेंगे और राज्य के लिए अपना प्रतिनिधित्व करेंगे सचिव महोदय ने ऐसा आश्वासन हम लोग को खिलाड़ियों को दिए मैं इस कार्य के लिए अरवल संगठन के तरफ से हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत करते हैं।

पुलिस अधीक्षक, ने किया तरैया थाना का निरीक्षण

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। पुलिस अधीक्षक, कुमार आशीष के द्वारा तरैया थाना का वार्षिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान थाने में पदस्थापित थानाध्यक्ष सहित सभी पुलिस पदाधिकारियों / कर्मियों एवं चौकीदारो को ूङ९ल्ल–ूल्लङ१ू स्रङ्म्ूल्ल्ल के साथ ही अपराध नियंत्रण के संदर्भ में आवश्यक दिश– निर्देश दिए गये। तरैया थाना के निरीक्षण के दौरान थाना भवन के साथ ही थाना के सभी अभिलेखो एवं पंजीयों की जाँच कर अभिलेखो व पंजीयों के संधारण में मिली त्रुटियों के सुधार करने, कांडो का समीक्षा कर त्वरित निष्पादन करने, थाना में साफ–सफाई

रखने एवं थाना भवन निर्माण के लिए प्रस्ताव उचित माध्यम से भेजने सहित कई आवश्यक दिशा–निर्देश दिए गए। वार्षिक निरीक्षण के दौरान संबंधित अनुमंडल पुलिस पदाधिकरी एवं अंचल पुलिस निरीक्षक उपस्थित रहे।

निरीक्षण के क्रम में तरैया थाना में अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने हेतु 1. पु0अ0नि0 आशुतोष कुमार सिंह,थानाध्यक्ष तरैया थाना 2.पु0अ0नि0 प्रवेश कुमार 3. प्र0पु0अ0नि0 राकेश कुमार 4. सि0–605 अंगद कुमार 5. सि0–984 अनिष कुमार को पुरस्कृत किया गया है तथा आसूचना संकलन में बेहतर कार्य करने हेतु चैकीदार 2 /3 हैदर अली एवं चैकीदार 2 /13 अभिरंजन मांझी को नगद राशि से पुरस्कृत किया गया है। पुलिस अधीक्षक द्वारा अमनौर थाना का औचक निरीक्षण किया गया । इस क्रम में उन्होंने थाना के हाजत, आगंतुक कक्ष व महिला कक्ष का निरीक्षण किया। साथ ही थाना में थाना रजिस्टरो से लेकर मुख्य दस्तावेजों की जाँच की गई। इस दौरान पुलिस अधीक्षक ने थानाध्यक्ष को रात्रि गश्ती सुचारू रूप से किए जाने, शराब के परिवहन एव भंडारण पर निगरानी रखने एवं वांछित अपराधियों को जल्द से जल्द पकडने एवं थाना पर आने वाले परिवादियों की समस्या को गंभिरता से निस्तारण करने का निर्देश दिये । थाना के एक–एक कर्मी पर नजर रखना, आम जनता से अच्छा व्यवहार और उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान जिला पुलिस की प्राथमिकताएं होंगी।

आर्थिक हल युवाओं को बल के निमित स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना पर जागरूकता शिविर

प्रात: किरण संवाददाता

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर के राजकीय इंटर विद्यालय के प्रांगण में आर्थिक हल युवाओं को बल कार्यक्रम के निमित बिहार स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना का शुभारंभ स्थानीय मुखिया अलावती देवी के कर कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए विद्यालय के प्राचार्या उपमा कुमारी ने बताया कि यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। 10वीं 12वीं के बाद जो भी विद्यार्थी उच्च शिक्षा,तकनीकी शिक्षा, प्रोफेशनल कोर्स करना चाहते हैं उनके लिए

बिहार सरकार के जनकल्याणकारी योजनाओं के तहत स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना की जानकारी हेतु विशेष कार्यक्रम कराई गई है। यह योजना विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयुक्त है इसके तहत अध्ययन अध्यापन के लिए बैंक से लोन ले सकते हैं और इसे वापस 60 से 84 महीने के आसान किस्तों पर भुगतान करनी होती है।दिव्यांगों का ब्याज एक प्रतिशत जबकि अन्य लोगों का ब्याज 4% देनी पड़ती है। विधायक प्रतिनिधि प्रदीप कुमार सिंह ने कहा कि यह योजना अत्यंत ही लाभकारी है इसका समय रहते अनुपालन किया जाए तो शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला सकती है। कार्यक्रम के मौके पर डीआरसीसी अमजद हुसैन, राजीव कुमार ,शशि कुमार राणा सुनील, स्वच्छता पर्यवेक्षक नंदू कुमार उपस्थित रहे। 10वीं 12वीं के सैंकड़ों विद्यार्थी उपस्थित थे।

पीपी तटबंध के छतिग्रस्त हिस्से पर युद्धस्तर पर बचाव कार्य जारी

प्रात: किरण संवाददाता

बगहा।नसीम खान "क्या" मधुबनी के पीपी तटबंध पर फिलहाल कोई खतरा नहीं है। पिछले दिनों नदी के जलस्तर में हुई गिरावट के बाद थोड़ा दबाव जरूर बना है जिसके बाद एक्सपर्ट अब्दुल हमीद के नेतृत्व में दिन रात एक कर सैंड जियो बैग से धंसे व क्षतिग्रस्त हिस्से को रिस्टोर किया गया है और स्पर और बाँध पूरी तरह सुरक्षित होनें का दावा किया जा रहा है।

बताया जा रहा है की यूपी बिहार की लाइफ लाइन पिपरा – पिपरासी तटबंध के धनहा रंगलल्हीं के समीप

बांध पर दबाव बना था और नोज व निचले हिस्सा क्षतिग्रस्त हुए थे लिहाजा आनन फानन में बचाव कार्य शुरू किया गया। दरअसल गंडक नदी के जलस्तर में उछाल और गिरावट के बाद दबाव बना था, इसकी पुष्टि जल संसाधन विभाग के एक्सपर्ट अब्दुल हमीद ने किया है उन्होंने दावा किया है की स्थिति थोड़ी बिगड़ी थी, लेकिन फिलहाल नियंत्रण में है युद्धस्तर पर बचाव कार्य जारी हैं।

इधर इंडो नेपाल बॉर्डर पर स्थित वाल्मीकिनगर गंडक बराज से आज फिर ढाई लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया है और नेपाल के जल अधिग्रहण क्षेत्रों में भारी बर्षा हों रही है लिहाजा इसको लेकर विभाग पूरी तरह अलर्ट मोड में है और लोग भी अब राहत महसूस कर रहें, किसी भी खतरा से इंकार कर राहत बचाव कार्य को संतोषजनक बता रहें हैं।

दरखा गांव के लाल ने किया कमाल, बना दरोगा,गांव सहित क्षेत्र का नाम किया रोशन,लोगो में खुशी का माहौल

प्रात: किरण संवाददाता

अलीगंज,प्रखंड के दरखा गांव के विशुनदेव महतो के पुत्र नीतीश कुमार ने पहले प्रयास में ही दरोगा मेंस की परीक्षा में सफलता प्राप्त कर परचम लहराकर परिवार सहित गांव का नाम रौशन किया, नीतीश कुमार ने बताया की अक्टूबर 2023 में दरोगा की बहाली आई थी,दिसंबर महीने में पीटी का परीक्षा हुआ था, फरवरी 2024 में मेन्स एवं जून में दौड़ हुई,और 9 जुलाई 2024 को फाइनल रिजल्ट जारी हुआ,जिसमे सफल हुआ,रिजल्ट देख कर काफी खुशी हुई,उन्होंने बताया की प्रारंभिक परीक्षा गांव के विद्यालय

में की,मैट्रिक जनता उच्च विद्यालय अलीगंज से व इंटर की पढ़ाई सरदार पटेल मेमोरियल कॉलेज नालंदा से की, वहीं बिहार शरीफ में रहकर दरोगा की तयारी की,जिसमे नीतीश कुमार ने अपनी कड़ी मेहनत,लगन,संघर्ष कर यह मकाम हासिल किया,जिससे पूरा परिवार सहित गांव के लोग गौरवान्वित है, वहीं नीतीश कुमार की माता रुक्मणि देवी अपने बेटे की इस उपलब्धि पर खुशी से कुछ बोल नहीं पा रही थी,उन्होंने कहा की मेरे बेटे ने दिन रात मेहनत कर अपना सपना को पूरा किया है,पूरा गांव खुश है,और मेरा आशिर्वाद हमेशा साथ रहेगा, वहीं पिता विशुनदेव महतो ने कहा की मैं एक छोटा मोटा किसान सहित आलू प्याज का खरीद बिक्री करता हूं ,मेरा पुत्र बचपन से ही पढ़ने में शुशील एवं मेहनती था,इसी का फल आज हमलोगो को मिला,और पूरे गांव सहित क्षेत्र का मान बढ़ाया है, नीतीश कुमार तीन भाई एक बहन में से सबसे छोटे है,वहीं इस सफलता पे शिक्षा प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष नीतीश कुमार ने बधाई देते हुए मिठाई खिलाकर खुशी जाहिर किया और कहा की बोला नीतीश कुमार ने जो मकाम हासिल किया वह गौरवानवित करते हुए अलीगंज नही पूरे जमुई का नाम रौशन किया ,वही इस सफलता पर दरखा पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि रोहित कुमार,सुजीत कुमार,पंचायत समिति विजय यादव, जदयू छात्र नेता नीतीश कुशवाहा,रामाशीष कुशवाहा,धनेश्वर महतो,राहुल कुमार,सुनील कुमार,गौरव कुमार, सहित प्रखंड के जनप्रतिनिधि एवं समाजसेवियों ने आशीर्वाद देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

संक्षिप्त खबरें

पति के प्रताड़ना से तंग होकर सपना ने लगाया कुआ मे छलांग

मुंगेर। पति के प्रताड़ना से तंग आकर सपना देवी ने कुआं में छलांग लगा दी। इस घटना के तीन दिन बाद पुलिस ने शव बरामद किया है। पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिये सदर अस्पताल मुंगेर भेजा। घटना के समझ में बताया जाता है कि सफियासराय थाना क्षेत्र के गोरी पुर गांव के 25 वर्षीय सपना देवी ने तीन बच्चें को रोते बिलखते छोड़ गई। मृतका के भाभी सुनीता देवी ने इस घटना की जानकारी दी है। उन्होंने बतायी कि 2016 में सोफिया सराय थाना क्षेत्र के गोरी पुर निवासी मनोज पासवान से हिन्दू रीति रिवाज के साथ सपना का शादी हुआ था। मृतक बेगुसराय जिला के बलिया अनुमंडल श्रेत्र अन्तर्गत लाखो ग्राम के निवासी थीं। मृतक महिला की भाभी ने बतायी की ननद का पति मनोज पासवान शराबी थे। जो बार बार हमारे ननद सपना देवी को मायके से पलंग सोने के अंगुठी लाने के लिए प्रताड़ित किया करते थे।

राजमिस्त्री का बेटा और मुखिया की बेटी दोनों ही बने दरोगा

संग्रामपुर (मुंगेर)। नगर पंचायत संग्रामपुर वार्ड आठ के राजकुमार बिहार पुलिस अवर सेवा आयोग परीक्षा में सफल हुआ है। जिससे नगर पंचायत के लोगों में खुशी है। राजकुमार के पिता शंकर तांती पेशे से राज मिस्त्री है। राजकुमार ने बताया की संग्रामपुर में ही रहकर पढ़ाई की और सेल्फ स्टेडी करके परीक्षा में सफल हुआ उन्होने इसका श्रेय अपने माता पिता एवं गुरु को दिया जिनके मार्गदर्शन से आज मैं बिहार में दरोगा बन गया। उन्होने कहा प्रशिक्षण प्राप्त कर में जनता की सेवा करुंगा। वही संग्रामपुर बाजार के पुर्व मुखिया शंभू भगत उर्फ राजन भगत की पुत्री जागृति कुमारी ने भी दरोगा के पद चयन हुआ है। इस मौके पर गांव के पुर्व मुखिया प्रतिनिधि बलराम यादव, वार्ड सदस्य बाल्मीकि तांती, दिवाकर सिंह पुर्व मुखिया दिनेश यादव, प्रमोद भगत, जदयू प्रखंड अध्यक्ष कमलनयन सिंह, व्यापार संघ अध्यक्ष मनोज शाह, विधायक प्रतिनिधि जयप्रकाश सिंह, एवं वर्तमान नगर पंचायत पार्षद नीलम देवी उप पार्षद मनोज साह संतोष केशरी आदि ने खुशी का इजहार करते हुए कहा कि राजकुमार और जागृति ने सिर्फ अपने परिवार का ही नही पुरे संग्रामपुर प्रखंड को गौरवान्वित किया है।

पूर्व बीडीओ के सम्मान में विदाई समारोह आयोजित

दिघवारा नगर। दिघवारा के नए प्रखंड विकास पदाधिकारी अमरनाथ ने गुरुवार को प्रखंड कार्यालय में पदभार संभाला। वहीं इस मौके पर नए प्रखंड विकास पदाधिकारी के आगमन था पूर्व बीडीओ डॉ अजीत कुमार के सम्मान में विदाई समारोह आयोजित की गई। मौके पर बीडीओ अजीत कुमार ने बताया कि दिघवारा में बतौर बीडीओ के रूप में तीन वर्षो के कार्यकाल में यहां के सभी जनप्रतिनिधियों तथा कर्मचारियों का भरपूर सहयोग मिला। उन्होंने कहा कि यहां के लोगो द्वारा मिले स्नेह को कभी भुलाया नही जा सकता। वही इस अवसर पर प्रखंड प्रमुख प्रतिनिधि दिलीप सिंह ने दोनो पदाधिकारियों को अंगवस्त्र व बुके देकर सम्मानित किया। मौके पर प्रखंड कार्यालय के सभी कर्मचारी उपस्थित थे।

पुल क्षतिग्रस्त, लगाया गया बैरियर

आलमनगर (मधेपुरा)। आलमनगर प्रखंड क्षेत्र के मधेली चंदसरा पथ पर पूर्व से दूसरे विभाग के द्वारा बनाया गया पुल क्षतिग्रस्त होने की अशंका बताया गया। वही इस दौरान कार्यपालक अभियंता ने बताया कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के आरेखन में यह पुल पड़ता है। इस दौरान कार्यपालक अभियंता ने बताया कि पुल गिरने की आशंका जताई जा रही है। पुल को देखते हुए ग्रामीण कार्य विभाग के द्वारा पुल के दोनों तरफ बैरियर लगाया गया जो आम जनता के लिए किसी तरह का जान माल की छति न हो। वही इस दौरान कार्यपालक अभियंता ने बताया कि बाढ़ की स्थिति को देखते हुए हम लोग पूर्ण रूप से तैयार हैं और बाढ से निपटने के लिए हर संभव तैयार हैं। हम लोग पूरी तरह तैयारी में लगे हुए हैं। जबकि दूसरे विभाग का पुल गिरने की अशंका की जानकारी मिली, जानकारी मिलते ही हम लोग पुल के दोनों तरफ बैरियर लगाने का काम किया जिससे कि जान माल व पुल बचाने के हर संभव तैयार हैं।

शराब के नशे में हंगामा कर रहे दो युवक को किया गिरफ्तार, भेजा जेल

चौसा (मधेपुरा)। पुलिस ने रात्रि गस्ती के दौरान शराब पीकर हंगामा कर रहे दो शराबी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। प्रशिक्षु एसडीपीओ सह थानाध्यक्ष आलोक कुमार ने बताया कि रात्रि गस्ती के दौरान चौसा पूर्वी पंचायत के बशैठा वार्ड नम्बर दस के दिलीप कुमार पिता सिकन्दर मण्डल, रूपेश कुमार पिता अशोक सिंह शराब पीकर हंगामा कर रहे थे जिसको पकड़ के चौसा अस्पताल जांच करवाया गया जहाँ दोनो के शराब पीने की पुष्टि डाक्टर ने की ततपश्चात दोनो को हिरासत में लेकर बिहार मद्य निषेध अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर जेल भेज दिया है।

राष्ट्रीय लोक अदालत में अधिक से अधिक मुकदमों का निष्पादन के लिए गठन किया गया है 14 पीठ

प्रात: किरण ब्यूरो

मुंगेर (बिहार)। जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर के सचिव मुक्तेश मनोहर ने प्रेस वार्ता कर कहा है कि बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार पटना के निर्देशानुसार आगामी 13 जुलाई 2024 को बैंकिंग से संबंधित मामले पेंशन से संबंधित मामले वैवाहिक से संबंधित मामले मोटर यान दुर्घटना से संबंधित मामले विद्युत व पानी विपत्र से संबंधित मामले दूरभाष से संबंधित मामले श्रम एवं मजदूरी से संबंधित मामले सहित अन्य वाद से संबंध मामले में सभी सुलहनीय मुकदमों के सुलभ निष्पादन के लिए राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया है। उन्होंने आगे बताया कि बताया इसके लिए 14 पीठों का गठन किया गया है। पीठ संख्या 01 में पीठासीन पदाधिकारी अरविंद कुमार शर्मा प्रधान न्यायाधीश के द्वारा सुलहनीय पारिवारिक एवं वैवाहिक मुकदमों से संबंधित मामले का निष्पादन करेंगे। पीठ संख्या 02 में पीठासीन पदाधिकारी अविनाश कुमार द्वितीय ए डीजे प्रथम द्वारा सभी अपर जिला न्यायाधीशों के न्यायालयों से संबंधित दावा एवं बीमा वाद ट्रैफिक चालान मोटर यान एम भी आई राजस्व वाद सेवा सुलहनीय आपराधिक वाद दूरसंचार वाद एवं सभी विवाद पूर्ण वादों जो अन्य पीठों में ना हो से संबंधित मामलों का निष्पादन करेंगे। पीठ संख्या 03 में पीठासीन पदाधिकारी श्रीमती खुशबू श्रीवास्तव ए डीजे चतुर्थ द्वारा ए सी जे एम प्रथम के न्यायालय के सुलहनीय आपराधिक एवं दीवानी वाद एवं मुंगेर जमुई सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक से संबंधित मामलों का निष्पादन करेंगी। पीठ संख्या 04 में पीठासीन पदाधिकारी धीरज कुमार मिश्रा ए डीजे पंचम द्वारा एसीजेएम एवं चतुर्थ के न्यायालयों के सुलहनीय आपराधिक एवं दीवानी वाद एवं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से संबंधित मामलों का निष्पादन करेंगे। पीठ संख्या 05 में पिठासीन पदाधिकारी लाल बिहारी पासवान सीजेएम द्वारा स्वयं के न्यायालय के सुलहनीय आपराधिक एवं दीवानी वाद से संबंधित मामलों का निष्पादन करेंगे। पीठ संख्या 06 में पीठासीन पदाघिकारी पंकज कुमार एसीजेएम द्वितीय द्वारा स्वयं के न्यायालय के सुलहनीय आपराधिक एवं दीवानी वाद एवं इंडियन ओवरसीज बैंक से संबंधित मामले का निष्पादन करेंगे। पीठ संख्या 07 में पीठासीन पदाधिकारी ब्रजकिशोर चौधरी मुंशिफ द्वितीय द्वारा एडीजे एम एवं ब्रजकिशोर चौधरी जेएम प्रथम श्रेणी के न्यायालय के सुलहनीय अपराधिक एवं दीवानी मुकदमा के साथ सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया एवं पैसे मामले जो किसी अन्य पीठ में ना हो से संबंधित मामलों का निष्पादन करेंगे। पीठ संख्या 08 में पीठासीन पदाधिकारी श्रीमती कविता अग्रहरि जम प्रथम द्वारा स्वयं के न्यायालय के सुलहनीय आपराधिक एवं दीवानी मुकदमा सहित भारतीय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से संबंधित मामलों का निष्पादन करेंगे। पीठ संख्या 09 में पीठासीन पदाधिकारी श्री मति प्रज्ञा मानस जेएम प्रथम द्वारा स्वयं के न्यायालय के सुलहनीय आपराधिक एवं दीवानी मामलों का निष्पादन करेगी। पीठ संख्या 10 में पीठासीन पदाधिकारी रत्नेश कुमार द्विवेदी जेएम प्रथम द्वारा स्वयं के न्यायालय के सुलहनीय आपराधिक एवं दीवानी वाद सहित बिहार ग्रामीण बैंक से संबंधित मामलों का निष्पादन करेंगे। पीठ संख्या 11में पीठासीन पदाधिकारी श्रीमती वर्तिका जेएम प्रथम द्वारा स्वयं के न्यायालय के सुलहनीय अपराधिक एवं दीवानी वाद सहित इंडियन बैंक से संबंधित मामले का निष्पादन करेंगी। पीठ संख्या 12 में पीठासीन पदाधिकारी श्रीमती निष्ठा जेएम द्वितीय श्रेणी द्वारा स्वयं के न्यायालय के के सुलहनिय आपराधिक एवं दीवानी वाद सहित यूको बैंक से संबंधित करेंगे। पीठ संख्या 13 में पीठासीन पदाधिकारी सुश्री अन्य जेएम द्वितीय श्रेणी मुंगेर द्वारा स्वयं के न्यायालय के सुलहनीय आपराधिक एवं दीवानी वाद सहित बैंक ऑफ इंडिया से संबंधित मामलों का निष्पादन करेगी। पीठ संख्या 14 में पीठासीन पदाधिकारी शक्तिमान भारती जम द्वितीय श्रेणी मुंगेर द्वारा स्वयं के न्यायालय के सुलहनीय आपराधिक एवं दीवानी वाद सहित केनरा बैंक से संबंधित मामले क्या निष्पादन करेंगे। सचिन ने आगे जिन लोगों को नोटिस के माध्यम से सूचना प्राप्त हुआ है वे सभी इस लोक अदालत जो की 13 जुलाई को आयोजित है आकर वाद का निष्पादन करा सकते हैं।

अंचल अधिकारी निशीथ नंदन ने किया कांवरिया पथ का निरीक्षण

सीओ ने कुमारसार धर्मशाला के समीप टेंट सिटी बनने के लिए स्थान का चयन किया

प्रात: किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। संग्रामपुर अंचल अधिकारी निशीथ नंदन ने प्रखंड क्षेत्र के कांवरिया पथ का निरीक्षण किया। इस मौके पर अंचल अधिकारी के द्वारा कुमरसार धर्मशाला के समीप बनने वाले टेंट सिटी के लिए भी जगह कुछ चिन्हित किया गया। श्रावणी मेले के दौरान कुमरसार में कांवरियों के मनोरंजन के उद्देश्य से एक महीने तक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होता है। हर वर्ष इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए मध्य विद्यालय कुमरसार में पंडाल का निर्माण किया जाता था। परंतु इस वर्ष सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए कुमरसार धर्मशाला के समीप के मैदान में टेंट सिटी का निर्माण कराया जायेगा। अंचल अधिकारी ने सभी दुकानदारों को टेंट सिटी के लिए चिन्हित जगह का अतिक्रमण नहीं करने का निर्देश दिया। कांवरिया पथ के निरीक्षण के दौरान अंचल अधिकारी निशीथ नंदन ने कांवरिया पथ का अतिक्रमण कर दुकान लगाने वाले सभी व्यक्तियों को चिन्हित कर उन्हें 1 से 2 दिन के अंदर अपना अतिक्रमण हटाने का निर्देश दिया। इस संबंध में अंचल अधिकारी निशीथ नंदन ने जानकारी देते हुए बताया कि कांवरिया पथ के अतिक्रमण करने वाले सभी लोगों को यह निर्देश दिया है कि एक या दो दिन में अपना अतिक्रमण हटा लें। इस अवधि में अतिक्रमण नहीं हटाने वालों के खिलाफ प्रशासन अतिक्रमण तो हटाएगी ही साथ ही साथ कानूनी कार्यवाही का भी सामना करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि प्रखंड क्षेत्र में कांवरियों के विश्राम के लिए खैरा में बनने वाले टेंट सिटी की निर्माण की प्रक्रिया जारी है तथा कुमरसार के समीप सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए बनने वाली टेंट सिटी के लिए जगह को चिन्हित कर दिया गया है।

स्टार्टअप इंडिया के तहत आरा के छात्र ने दोस्तों के साथ मिलकर बनाया एप, स्वास्थ्य के क्षेत्र में नई शुरूआत, अब घर बैठे डाक्टर के पास लगा सकते हैं नंबर

प्रात: किरण संवाददाता

बिहार के आरा शहर में अगर किसी भी डाक्टर के पास नंबर लगाना है या जानकारी प्राप्त करना है तो अब घबराने की जरूरत नहीं है और ना ही परेशान होने की आवश्यकता है, अब घर बैठे ही आप डाक्टर के पास नंबर लगा सकेंगे और समय पर पहुंचकर अपना इलाज करा सकेंगे। इसके लिए आरा में ऊ्द्ध९स्रस्र्ड्डल्ल३ एप और बेवसाइट सेवा की शुरूआत होने जा रही है। जिससे कोई भी मरीज आरा शहर के अलग-अलग बीमारियों के प्रसिद्ध डाक्टर के पास आसानी से नंबर लगाकर इलाज करवा सकते हैं। आरा शहर के संकट मोचन नगर (न्यू पुलिस लाइन) मोहल्ला निवासी शुभम कुमार सिंह NIT नागपुर के इंजीनियरिंग के छात्र हैं। इन्होंने स्टार्टअप इंडिया और स्टार्टअप बिहार के तहत स्वास्थ्य के क्षेत्र इस नई तकनीक सेवा की शुरूआत को लेकर कारगर पहल की है। ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले मरीजों की समस्या को देखते हुए पैन इंडिया के तहत अपने दोस्तों के साथ मिलकर एप तैयार किया है। पूर्व में केन्द्रीय मंत्री नीतीन गडकरी भी इंजीनियरिंग के छात्र शुभम और उनकी टीम से मिले थे और छात्रों के प्रयास को खुब सराहा था। इधर, कंपनी के निदेशक शुभम कुमार सिंह ने बताया कि लोगों की सहायता के के लिए एक मोबाइल नंबर 9470075205 को भी सार्वजनिक किया गया है। आम लोग इस नंबर पर काल कर जानकारी प्राप्त का सकते हैं। आने वाले दिनों में 24 घंटे यह सेवा उपलब्ध रहेगी। अगर किसी डाक्टर के पास नंबर फूल हो जाएगा तो नंबर नहीं लग सकेगा।

इस प्रक्रिया के बाद लोग आसानी से चिकित्सक के पास पहुंचकर इलाज करवा सकते है। शहर के अमूमन सभी डाक्टरों का प्रेम और स्नेह इस लोकप्रिय एप सुविधा को मिलना शुरू हो गया है।

डाक्टरों ने भी सराहा : इसे लेकर बुधवार की रात आरा शहर के डाक्टरों के साथ एक गेट टू गेदर सह परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें आरा शहर के प्रसिद्ध चिकित्सक डा. अमरेन्द्र सिंह (फिजिशियन), कन्हैया सिंह (नेत्र रोग), डा.विजय कुमार सिंह, (सर्जन), डा. पी. सिंह (सर्जन), डा.विकास सिंह (सर्जन)डा. नवीन सिंह (सर्जन), डा. निलेश सिंह (नेत्र रोग), डा. अभिनित (हड्डी), अमन सिंह (हड्डी रोग), डा. प्रतिक (दंत चिकित्सक), डा.राजीव रंजन(चर्मरोग), डा.महावीर गुप्ता (हड्डी रोग), डा. मनीष सिंह (इएनटी), डा. अंकित (दंत रोग) डा. अभिषेक आनंद , डा. प्रशांत सिंह , डा.विवेक राज एवं डा.रजनीश समेत कई अन्य गणमान्य चिकित्सक मौजूद थे। जिन्होंने इस सेवा की बेहतरी के लिए अच्छे सुझाव भी दिए। साथ ही आरा में इस तरह की सेवा शुरू होने को लेकर नयी तकनीक पहल की सराहना की। इस दौरान स्टार्टप के जिला कार्डिनेटर दिव्येंदु ने भी इस सेवा के बारे में बताया और इससे मरीजों को होने वाले फायदे के बारे विस्तार से बताया।

दस दिनों के अंदर काम करने लगेगा एप : दरअसल, एप सेवा से लाभ लेने और इससे जुड़ने के लिए आप्शन उपलब्ध कराए गए हैं। यह गुगल वेबसाइट व प्ले स्टोर पर भी उपलब्ध है, जहां से आप डाउनलोड कर सकते हैं। यह सुविधा मरीजों के लिए वरदान साबित होगा। क्योंकि, समय व पैसा दोनों का बचत होगा। किसी भी डाक्टर के पास नंबर लगाने के लिए मरीज एवं परिजनों को अलग-अलग यात्री वाहनों से आरा आना पड़ता है। अगर किसी कारण वश डाक्टर उपलब्ध नहीं होते है तो उन्हें निराश होकर वापस लौटना पड़ता है या इधर-उधर भटकना पड़ता है। प्रायःदेखा जाता है कि भोले-भाले कुछ लोग गलत झांसे में भी आ जाते है। अंत में उन्हें पछतावा भी होता है। यह सेवा हर कदम पर मदद करेगा। दस दिनों के अंदर यह एप काम करने लगेगा। अभी टेस्टिंग की प्रक्रिया चल रही है।

30 रुपए लगेगा अतिरिक्त चार्ज: घर बैठे किसी भी डाक्टर के पास नंबर लगवाने के लिए सबसे पहले दिए गए एप ६६६. ऊ्द्ध९स्रस्र्ड्डल्ल३ .ड्ड को डाउन लोड करना होगा। जहां उन्हें इस सेवा का लाभ उठाने के लिए मात्र डाक्टर की फीस से अतिरिक्त महज 30 रुपए खर्च करना पड़ेगा। अब शहर से 50 से 60 किलोमीटर दूर बैठे लोग भी एप की मदद से चिकित्सक के पास नंबर लगाकर इलाज करा सकते हैं। ऊपर दिए गए नंबर पर संपर्क कर जानकारी प्राप्त कर सकते है।

छात्र संघ चुनाव सहित नगर इकाई पुनर्गठन को लेकर विद्यार्थी परिषद ने की बैठक

प्रात: किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर (कोर्ट)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद नगर इकाई हवेली खड़गपुर एवं हरि सिंह महाविद्यालय इकाई के संयुक्त बैठक गुरुवार को हरि सिंह महाविद्यालय परिसर में कॉलेज अध्यक्ष पिंकेश कुमार के नेतृत्व में आयोजित की गई। बैठक में मुख्य रूप से सदस्यता अभियान, छात्रसंघ चुनाव, महाविद्यालय इकाई एवं नगर इकाई पुनर्गठन सहित अन्य विषयों पर चर्चा हुई। बैठक को संबोधित करते हुए जिला संयोजक अंकित जायसवाल एवं प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य शुभम केसरी ने छात्रों एवं कार्यकताओं को कहा कि आने वाले दिनों में छात्र संघ चुनाव एवं सदस्यता अभियान होना है इसके लिए अभी से ही हम लोगों को छात्र-छात्राओं के बीच जानकारी देनी है। और अधिक से अधिक छात्र-छात्रा को परिषद का सदस्य बनना है। वही प्रदेश सोशल मीडिया सहसंयोजक सत्यम कुमार निराला एवं कॉलेज अध्यक्ष पिंकेश कुमार ने कहा कि विद्यार्थी परिषद ही एकमात्र ऐसा संगठन है जो कॉलेज कैंपस में प्रतिदिन छात्र-छात्राओं की मदद के लिए सदैव तत्पर रहता है। यही कारण है कि परिषद से छात्र-छात्राओं का लगाव अत्यधिक है। दूसरी ओर परिषद के कार्यकताओं ने हेल्प डेस्क लगाकर स्नातक सेमेस्टर-1 के छात्र-छात्राओं को रजिस्ट्रेशन करवाने में आ रही परेशानी को भी दूर कर रहे थे। इस मौके पर सौरभ झा, कॉलेज उपाध्यक्ष अर्पित कुमार, सैलाब झा, शिवम केसरी, सचिन कुमार, मोहित कुमार, आर्यन केसरी, शुभम कुमार, पीयूष रावत, वंदना कुमारी, मोनी कुमारी, पूजा कुमारी, नेहा कुमारी सहित अन्य छात्र-छात्रा मौजूद थे।

नवनियोजित विशेष सर्वेक्षण अमीनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन

प्रात: किरण संवाददाता

अरवल। बन्दोबस्त कार्यालय में नवनियोजित 57 विशेष सर्वेक्षण अमीनों का सैद्धांतिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन जिला पदाधिकारी वर्षा सिंह के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। जिला पदाधिकारी द्वारा अपने संबोधन में सभी नवनियोजित अमीनों को गंभीरता पूर्वक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने को कहा गया। उनके द्वारा बताया गया कि विशेष सर्वेक्षण कार्यक्रम की अरवल जिले में बहुत आवश्यकता है, क्योंकि यहाँ रिविजनल सर्वे का कार्य भी नहीं हुआ है। यह सर्वे कार्यक्रम एक समयबद्ध कार्यक्रम है जिसे जून 2025 के पूर्व पूरा किया जाना है। अतः प्रशिक्षण को पूरे लगन के साथ आत्मसात करना है और क्षेत्र में जाकर पूरी तत्परता से सर्वे कार्य को पूरा करना है। बन्दोबस्त पदाधिकारी अरवल ने अपने संबोधन में सभी अमीनों को विस्तार पूर्वक भूमि से जुड़ी जानकारी दी। भूमि सुधार उप समाहर्त्ता ने इस अवसर पर छह दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त कर सभी अमीनों को निष्ठा पूर्वक कार्य करने की सलाह दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बन्दोबस्त पदाधिकारी, भूमि सुधार उप समाहर्ता, सहायक बन्दोबस्त पदाधिकारी (मुख्यालय) एवं राजस्व अधिकारी के साथ अन्य उपस्थित थे।

सर्किट हाउस छपरा में हुआ युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा का हुआ पुनर्गठन

छपरा कार्यालय। गुरुवार को सामाजिक संगठन युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा का पुनर्गठन छपरा शहर के सर्किट हाउस में हुआ। सर्वसम्मति से अमित नयन को अध्यक्ष, रोहित रमन एवं मोहम्मद सरताज को उपाध्यक्ष, सद्दाब अहमद मजहरी को प्रधान महासचिव, मोहम्मद मारूफ राजा को सचिव, रूपा गोस्वामी को कोषाध्यक्ष, अमर कुमार उर्फ अमर बाबा को संगठन प्रभारी मोर्चा के प्रमुख संरक्षक शेख नौशाद पूर्व लोकसभा प्रत्याशी सारण को सर्व सहमति से चुना गया। बहुत जल्द अगले बैठक में विश्वविद्यालय कमेटी, महाविद्यालय कमेटी बनाकर, सदस्यता अभियान के जरिए संगठन का वृहद रूप से विस्तार किया जाएगा।

माँझी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र परिसर में जनसंख्या स्थितरता उत्प्रेरक पखवाड़ा जगरूकता कार्यक्रम आयोजित

प्रात: किरण संवाददाता

माँझी। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र परिसर में जनसंख्या स्थितरता उत्प्रेरक पखवाड़ा के तहत जगरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया इस अवसर पर प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी रोहित कुमार ने बताया कि जनसंख्या स्थिरीकरण की आवश्यकता सही उम्र में शादी, पहले बच्चे में देरी, बच्चों के बीच सही अंतर रखना तथा छोटा परिवार के लाभ के बारे में आमजनो के बीच चर्चा करते हुए मां और शिशु स्वास्थ्य को बेहतर करने तथा गर्भ निरोधक उपायों को अपनाने के लिए अनिवार्य रूप से उचित परामर्श देना है। जनसंख्या स्थिरीकरण पखवाड़े के दौरान ग्रामीणों को परिवार नियोजन सेवाओं के तहत प्रदान की जाने वाली सेवाएं जैसे- कॉपर टी, गर्भनिरोधक सुई एवं गोलियां, बंध्याकरण और नसबंदी की सेवा प्रदान करने का विशेष रूप से ध्यान रखने का सभी कर्मियों को आवश्यक निर्देश दिया। उन्होंने बताया कि प्रखंड के अतिरिक्त उप स्वास्थ्य केंद्र,में प्रत्येक महीने 21 तारिक को परिवार नियोजन दिवस (पीएनडी) मनाया जाता है।

डीएम ने किया अंचल कार्यालय का औचक निरीक्षण, दिए कई निर्देश

घैलाढ़ (मधेपुरा)। डीएम विजय प्रकाश मीणा ने बारीकी से लगभग 4 घंटे तक अंचल कार्यालय का औचक निरीक्षण किया। डीएम के प्रखंड पहुंचते ही सभी कर्मियों और पदाधिकारी में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। जहां प्रखंड के अंचल कार्यालय के सभी विभागों का निरीक्षण करते हुए डीएम विजय प्रकाश मीणा ने कार्यालय के पदाधिकारी और कर्मी को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। इस दौरान उन्होंने विभाग के भवनों की स्थिति, रखरखाव और किए जा रहे कार्यो का बारीकी से निरीक्षण किया। निरीक्षण करने के दौरान डीएम विजय प्रकाश मीणा ने बताया कि राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के द्वारा आदेशित और डीएम को अंचल कार्यालय का निरीक्षण करना होता है उसी क्रम में आज घैलाढ़ प्रखंड पहुंचकर अंचल कार्यालय का बारीकी से सभी विभागों के कार्यालय का निरीक्षण किया।

आरा में जनप्रतिनिधियो ने फूंका बीडीओ सीओ का पुतला

प्रात: किरण संवाददाता

संभावित बाढ़ राहत को लेकर बैठक में जिला परिषद सदस्यों को नहीं बुलाने पर नाराज जिला पार्षदों ने आरा प्रखंड के बीडियों और सीओं का पुतला फूंका।

आज दिनांक 11 7.2024 को भोजपुर जिला परिषद के सदस्य भीम यादव के नेतृत्व में बीडियों और सीओं का पुतला फूंका।

ज्ञात हो कि विगत दिनांक 10 -07 - 2024 को आरा सदर प्रखंड में संभावित बाढ़ को लेकर प्रखंड विकास पदाधिकारी और अंचलाधिकारी ने बैठक बुलाया था लेकिन उसे बैठक में स्थानीय जिला परिषद के सदस्यों को नहीं बुलाया गया। जिससे नाराज जिला पार्षदों ने बीडियों और सीओं का पुतला फूंका। पुतला दहन के दौरान जिला परिषद भीम यादव ने कहा कि संभावित बाढ़ राहत के नाम पर बैठक करना सिर्फ खानापूर्ति की जा रही है इस बैठक में स्थानीय जनप्रतिनिधियों जाते तो बाढ़ से आने वाली विपदा से अवगत कराते। बाढ़ जैसे संवेदनशील बैठक से जनप्रतिनिधियों को अलग रखना यह दशार्ता है कि ब्लॉक के पदाधिकारी निरंकुश हो चुके हैं और भ्रष्टाचार के गंगोत्री में गोता लगा रहे हैं आने वाले दिनों में समय रहते ब्लॉक के पदाधिकारी व्यवस्था में सुधार नहीं लाते हैं तो ब्लॉक को ठप कर दिया जाएगा और अनिश्चितकालीन आंदोलन चलाया जाएगा जिसकी सारी जवाब देगी जिला प्रशासन की होगी। पुतला दहन कार्यक्रम में कोईलवर जिला पार्षद रविन्द्र कुमार रजक, राजद अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष विनोद चंद्रवंशी, आरा मध्य जिला पार्षद प्रतिनिधि हरीफन यादव, उदवंतनगर जिला पार्षद सोनू रजक, छात्र राजद वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय प्रभारी गांगुली यादव, युवा राजद जिला उपाध्यक्ष लालबहादुर सिंह उर्फ चलू यादव, छात्र राजद पूर्व जिलाध्यक्ष अनुप मौर्य, छात्र राजद प्रवक्ता तेजू त्यागी, अनिल यादव, हिम्मत यादव, अभय यादव, श्रवण यादव, चिन्टू यादव सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे।

मोहर्रम को लेकर अनुमंडल स्तरीय शांति समिति की हुई बैठक

मोहर्रम को लेकर शांति समिति की बैठक, शांति सद्भाव के साथ पर्व मनाने की अपील

प्रात: किरण संवाददाता

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। उदाकिशुनगंज अनुमंडल मुख्यालय स्थित सभागार में गुरुवार को आगामी मुहर्रम पर्व को लेकर अनुमंडल स्तरीय शांति समिति की बैठक आयोजित की गई.बैठक की अध्यक्षता एसडीएम एसजेड हसन ने की.बैठक में अनुमंडल क्षेत्र के राजनीतिक और समाजसेवी लोगों ने भाग लिया। बैठक के दौरान एसडीएम एसजेड हसन लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि मोहर्रम पर्व पूरे अनुमंडल में शांतिपूर्ण एवं सौहार्द वातावरण में संपन्न हो, इसके लिए प्रशासन अपनी तरफ से पूरी तैयारी में है। जनप्रतिनिधियों एवं आम लोगो से सहयोग की अपील की। उन्होंने कहा कि पर्व शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हो इसके लिए दोनों समुदाय के लोग आपस में सहयोग करें. उन्होंने कहा गंगा जमुनी तहजीब जो हमारे अनुमंडल की पहचान है, उसे बनाये रखें। सभी जगहों पर पुलिस की तैनाती रहेगी। सुरक्षा व्यवस्था को और बेहतर करने के लिए अलग से फोर्स लगाया जायेगा। उन्होंने खासकर सोशल मीडिया पर फोकस करते हुए कहा कि किसी भी प्रकार के अफवाहों पर ध्यान ना दें। सभी प्रतिनियुक्ति अधिकारी अपने कर्तव्य स्थल पर ससमय पूर्ण रूप से मुस्तैद रहेंगे। जिला साइबर सेल और सूचना एवं जनसंपर्क की सोशल मीडिया टीम द्वारा 24 घंटे सोशल मीडिया पर नजर बनाए हुए है। अनुमंडल एवं जिला स्तर पर नियंत्रण कक्ष पूरी गतिविधियों पर नजर बनाए रखेगा। प्रत्येक छोटी-बड़ी घटना की जानकारी संबंधित अनुमंडल पदाधिकारी, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी आदि को देना सुनिश्चित करेंगे। एसडीएम ने कहा कि डीजे पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध रहेंगे। सभी डीजे मालिक मुहर्रम में डीजे का प्रयोग नहीं करेंगे। बैठक में एसडीपीओ अविनाश कुमार ने कहा कहा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मोहर्रम पर्व शांति पूर्वक माहौल में संपन्न होगा। यहां के लोग एक दूसरे के पर्व में सहभागी बनकर सहयोग करते हैं। इस सहभागिता में आप सभी प्रशासन की मदद करते है और प्रशासन भी चुस्त दुरुस्त रहती है। उन्होंने सभी जनप्रतिनिधियों से अपील करते हुए कहा कि आप लोगों की जिम्मेदारी है कि अपने अपने क्षेत्र मे शांति वयवस्था कायम रखने हेतु अपना योगदान दें। आगे कहा कि मोहर्रम जुलूस के लिए रूट चार्ट का पालन करना अनिवार्य होगा। बैठक में डीसीएलआर आमिर अहमद, बीडीओ गुलजारी पंडित, पूर्व प्रमुख विकास चंद्र यादव, भाजपा नेता अरबिंद सिंह, मंटू यादव, रमन यादव, नवल यादव, संतोष मंडल, अभिषेक कुमार, अन्नू देवी, कमलेश्वरी मेहता, कमरूल होदा, पूर्व मुखिया अब्दुल अहद, प्रकाश मिश्र, राजेन्द्र यादव, सुरेन्द्र यादव, बबलु यादव, अयुब अली, अजय मंडल, देवनारायण राम, गजेन्द्र राम, रमन यादव, संजीव यादव, मनोज कुमार सिंह, मो. फारूक, किशोर कुमार मुन्ना, मो. सोएब, अन्नु देवी, गनगन चौधरी, मो. फिरोज, बबलु दास, संजीव कुमार, खोखा सिंह सहित अन्य लोग मौजूद थे।

यूथ एंड इको क्लब समर कैंप के समापन पर 5 दर्जन छात्र छात्रा पुरस्कृत

प्रात: किरण संवाददाता

मशरक में मिशन लाइफ के लिए इको क्लब के तहत स्कूलों में लगे समर कैंप का समापन समारोहपूर्वक हुआ। बिहार शिक्षा परियोजना के द्वारा जारी दिशा निर्देश के आलोक में 1 जुलाई से लगे इस समर कैंप में विद्यालय में गठित यूथ एवम इको क्लब के छात्र छात्राओ के बेहतर प्रदर्शन एवम अभिव्यक्ति पर विद्यालय में आयोजित शिविर के समापन समारोह में पुरस्कृत किया गया। विद्यालय के इको क्लब से जुड़े छात्र छात्रा सहित अन्य के अलावे शिक्षक इस समर कैंप में जीवन में पर्यावरण का महत्व , बदलाव , सहित , कचरा प्रबंधन , जल एवम ऊर्जा बचत सहित इको सिस्टम से जुड़े अन्य आयामों से परिचित होने के साथ पेंटिंग , ड्रोइंग , भाषण , लेख में हिस्सा लिए । राजकीयकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मशरक में समापन के दिन छात्र छात्राओं ने चेतना सत्र में पर्यावरण संरक्षण का शपथ लेते हुए समर कैंप में शामिल हुए , जहा पहले दिन छात्रों ने स्वस्थ जीवन शैली के लिए कचरा प्रबंधन , पेड़ पौधों से परिचय, मिट्टी परीक्षण , कृषि को समझा। समापन के दिन पर्यावरणीय खेल कूद में हिस्सा लेते हुए मानसिक विकास के लिए आहार प्रबंधन जाना जिसके तहत स्कूलों में पोषण वाटिका का विकास करते हुए फूल एवम छोटे फलदार पौधारोपण किया । विद्यालय के प्रधानाध्यापक मुकेश कुमार ने शिविर में शामिल सभी छात्र छात्राओं को पुरस्कृत करते हुए कहा कि विद्यालय में यूथ एवम इको क्लब शिक्षा विभाग की महत्वाकांक्षी योजना है जिसमे शामिल होकर बच्चे पर्यावरण को करीब से समझ एवम सुरक्षित रख सकते है । उन्होंने पढ़ाई के साथ खेल कूद , संगीत सहित विद्यालय के सभी गतिविधि में भाग लेने की बच्चो से कही । मौके पर इको क्लब नोडल शिक्षक संजय कुमार सिंह के अलावे शिक्षक अरुण कुमार बरनवाल , डा मनोज सिंह , विनय कुमार सिंह , अरविंद सिंह , महेश पोद्दार, विजय कृष्ण त्रिपाठी , शत्रुघ्न कुमार , दयानंद सत्यार्थी , श्वेता कुमारी सहित अन्य ने छात्र छात्राओं का उत्साहवर्धन किया।

राष्ट्रपति मुर्मु ने साइना नेहवाल के साथ खेला बैडमिंटन

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्टपति द्रौपदी मुर्मू का खेलों के प्रति स्वाभाविक प्रेम तब देखने को मिला जब उन्हें बुधवार को राष्टपति भवन के कोर्ट पर दिग्गज खिलाड़ी साइना नेहवाल के साथ बैडमिंटन खेलता देखा गया। राष्टपति मुर्मु ने आज सोशल मीडिया मंच एक्स पर प्रेषित पर साइना नेहवाल के साथ बैडमिंटन खेलते हुए अपनी कुछ फोटो साझा करते हुए लिखा कि यह प्रेरणादायक कदम भारत के बैडमिंटन की दुनिया में एक पावर हाउस के रूप में उभरने के अनुरूप है, जिसमें महिला खिलाड़ी विश्व मंच पर बड़ा प्रभाव डाल रही हैं। उन्होंने कहा कि पद्म पुरस्कार विजेताओं की 'उनकी कहानी-मेरी कहानी' व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में, पद्म श्री और पद्म भूषण से सम्मानित एक प्रतिष्ठित भारतीय खिलाड़ी साइना नेहवाल कल राष्टपति भवन सांस्कृतिक केंद्र में एक व्याख्यान देंगी और दर्शकों से बातचीत करेंगी।

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल को लगता है कि अगर उन्होंने बैडमिंटन खेलने के बजाय टेनिस का रैकेट पकड़ा होता तो वह बतौर खिलाड़ी और

टेनिस में बैडमिंटन से बेहतर कर सकती थीः साइना नेहवाल

बेहतरीन प्रदर्शन कर सकती थीं। बैडमिंटन खिलाड़ी के तौर पर भी साइना ने काफी प्रभावित किया है जिसमें वह दुनिया में शीर्ष रैंकिंग हासिल करने वाली पहली भारतीय महिला शटलर बनीं और वह ओलंपिक पदक जीतने वाली देश की पहली महिला एथलीट भी बनीं।

राष्टपति भवन में 'हर स्टोरी - माई स्टोरी' बातचीत के दौरान साइना ने कहा, 'कभी कभार मुझे लगता है कि अगर मेरे माता पिता ने मुझे टेनिस में डाला होता तो अच्छा होता। उन्होंने कहा, 'इसमें ज्यादा पैसा है और मुझे लगता है कि मैं ज्यादा ताकतवर थी। मैं टेनिस में बैडमिंटन से बेहतर कर सकती थी। साइना ने कईयों को बैडमिंटन में आने के लिए प्रेरित किया है लेकिन जब उन्होंने आठ साल की उम्र में खेलना शुरू किया था तो उनके लिए कोई आदर्श नहीं था।

साइना ने कहा, 'जब मैंने शुरूआत की थी तो मेरे लिए कोई आदर्श नहीं था। यह कहने के लिए कोई नहीं था, 'मैं दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी बनना चाहती हूं या ओलंपिक पदक विजेता बनना चाहती हूं। मुझसे पहले मैंने किसी को बैडमिंटन में ऐसा करते नहीं देखा था। लंदन ओलंपिक के कांस्य के अलावा साइना ने विश्व चैम्पियनशिप में कांस्य और रजत पदक जीते तथा राष्टमंडल खेलों में भी कई स्वर्ण पदक जीते।

उन्होंने कहा, 'मैं हमेशा बच्चों को खेलों पर ध्यान लगाने के लिए कहती हूं। चीन 60-70 पदक जीतता है और हमें सिर्फ तीन चार पदक मिलते हैं। इतने सारे डॉक्टर और इंजीनियर होते हैं और उनके नाम अखबारों में नहीं आते। साइना ने कहा, 'मैं विशेषकर लड़कियों से आगे आने के लिए कहूंगी कि वे फिट होना शुरू करें और खेलों में आएं। अब हम बच्चों के लिए मौजूद हैं, उनके लिए प्रेरणा के लिए दुनिया की नंबर एक, ओलंपिक चैम्पियन और इतनी सारी पदक विजेता हैं। उन्होंने अपने करियर के बारे में बात करते हुए कहा कि उनकी कड़ी मेहनत ने प्रतिभा की कमी की भरपाई की। साइना ने कहा, 'मुझे कड़ी मेहनत करना पसंद है, मैं इतनी प्रतिभाशाली खिलाड़ी नहीं थी। मुझे काफी मेहनत करनी पड़ती थी। अगर कोई प्रतिभाशाली खिलाड़ी कोई चीज 100 बार करता था तो मुझे इसे 1000 दफा करना पड़ता था। लेकिन मुझे कड़ी मेहनत करना पसंद है। मेरे कोचों को मेरा कभी हार नहीं मानने वाला जज्बा पसंद है।

अपने चौथा ओलंपिक से पहले बोले मनप्रीत सिंह

उतार चढावों ने मानसिक रूप से मजबूत बनाया

बेंगलुरू (एजेंसी)। अभावों में बीता बचपन, मां के बेहिसाब संघर्ष, करियर में झूठे आरोप सभी कुछ झेला है मनप्रीत सिंह ने लेकिन कठिनाइयों की आग में तपकर कुंदन बना मीठापुर का यह हॉकी स्टार अब पेरिस में कैरियर का चौथा ओलंपिक खेलेगा। तोक्यो ओलंपिक में 41 साल बाद कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय टीम के कप्तान रहे मनप्रीत ने ओलंपिक के लिए रवानगी से पहले कहा, 'बहुत अच्छा लग रहा है। मैने कभी सोचा नहीं था कि चार ओलंपिक खेल पाऊंगा। हर खिलाड़ी का सपना होता है ओलंपिक खेलना और पदक जीतना। मैं खुद को काफी खुशकिस्मत मानता हूं कि ये मेरा चौथा ओलंपिक है।

मात्र 19 वर्ष की उम्र में 2011 में भारत के लिए पदार्पण करने वाले इस अनुभवी मिडफील्डर ने कहा, 'मैं यह सोचकर जा रहा हूं कि ये मेरा आखिरी ओलंपिक है और मुझे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना है। ओलंपिक पदक जीतने के बाद हालांकि उन्होंने अपने करियर का सबसे बुरा दौर देखा जब पूर्व कोच शोर्ड मारिन ने अपनी किताब में उन पर आरोप लगाया कि 2018 राष्टमंडल खेलों के दौरान उन्होंने एक युवा खिलाड़ी को जान बूझकर खराब खेलने के लिए कहा ताकि उनके दोस्त को टीम में जगह मिल सके।

मनप्रीत ने पहली बार उन आरोपों के बारे में खुलकर बात करते हुए कहा कि वह पूरी

तरह टूट गए थे और उनका भरोसा हर किसी पर से उठ गया था हालांकि टीम ने उनका पूरा साथ दिया जिसकी वजह से वह इससे उबर सके। उन्होंने कहा, 'मेरे लिए वह सबसे कठिन दौर था। मैं इस तरह की चीजों के बारे में कभी सोच भी नहीं सकता था। उस समय टीम ने मेरा साथ दिया और कहा कि हम तुम्हें जानते हैं और तुम्हारे साथ हैं।% उन्होंने कहा, 'लेकिन मैं टूट गया था और हर चीज से विश्वास उठ गया था। मैने श्रीजेश (पी आर) को बताया जिससे मैं सब कुछ साझा करता हूं। मेरी मां ने मुझे हौसला दिया कि अपने पिता का सपना पूरा करने के लिए खेलते रहो और उस पल से मैने उस प्रकरण को भुला दिया।

32 वर्ष के इस खिलाड़ी ने कहा, 'खराब दौर में घर वालो का साथ, टीम का सहयोग बहुत जरूरी है क्योंकि उस समय खिलाड़ी खुद को बहुत अकेला पाता है। जब टीम साथ खड़ी होती है तो बहुत हौसला मिलता है और वापसी करने में मदद भी। हमने अभी क्रिकेट में भी हार्दिक पांड्या को शानदार वापसी करते देखा।% एशियाई खेल 2014 और 2022 में स्वर्ण पदक जीतने वाली टीम का हिस्सा रहे मनप्रीत ने भारत के लिये 370 मैचों में 27 गोल दागे हैं।

तोक्यो ओलंपिक में भारतीय दल के ध्वजवाहक रहे इस खिलाड़ी ने अपने सफर के बारे में कहा, 'अब पीछे मुड़कर देखता हूं तो सपने जैसा लगता है। मैने बचपन में गरीबी करीब से देखी है। पिता दुबई में कारपेंटर का काम करते थे लेकिन वहां से मेडिकल कारणों से वापस आ गए थे। मेरी मां ने बहुत संघर्ष किया और मेरे दोनों भाई भी हॉकी खेलते थे लेकिन आर्थिक परेशानी के कारण उन्होंने छोड़ दी।

उन्होंने कहा, 'हमने बहुत कठिन समय देखा जब घर में मूलभूत जरूरतों के लिए भी संघर्ष करना पड़ता था। लेकिन मेरे परिवार का बहुत साथ रहा है जिससे मैं अपने शौक को परवान चढा सका। अजलन शाह कप 2016 के दौरान पिता की मौत के बाद तुरंत लौटकर पाकिस्तान के खिलाफ गोल करने वाले इस जुझारू खिलाड़ी ने कहा कि अब कप्तान नहीं होने के बावजूद उनकी टीम को लेकर प्रतिबद्धता वही रहेगी। उन्होंने कहा, 'अब मैं कप्तान नहीं हूं तो भी कोई फर्क नहीं लगता। हॉकी में हर खिलाड़ी की अपनी भूमिका है। कोशिश यही रहती है कि सभी को साथ लेकर चलना है। सीनियर होने के नाते युवाओं को प्रेरित करना है।

मीठापुर से ही निकले ओलंपियन परगट सिंह को अपना आदर्श मानने वाले मनप्रीत ने कहा कि तोक्यो से पेरिस तक टीम की तैयारियों में ज्यादा बदलाव नहीं आया है। उन्होंने कहा, 'तोक्यो ओलंपिक से पहले कोविड के कारण काफी समय खिलाड़ी साथ रहे थे जिससे तालमेल शानदार रहा। उसी को जारी रखेंगे क्योंकि 11 खिलाड़ी वहीं हैं जो तोक्यो में थे। हम अपने अनुभव पांचों नए खिलाड़ियों से बांट रहे हैं। किसी टीम को हलके में नहीं लेना है और फोकस से हटना नहीं है।

अपने पसंदीदा खिलाड़ियों महेंद्र सिंह धोनी, क्रिस्टियानो रोनाल्डो और डेविड बैकहम की तरह सात नंबर की जर्सी पहनने वाले मनप्रीत ने कहा कि ओलंपिक में किसी भी टीम को हलके में नहीं लिया जा सकता। उन्होंने कहा, 'हमारा पूल कठिन है और हम किसी भी टीम को हलके में नहीं ले सकते। न्यूजीलैंड ने हमें विश्व कप में हराया है और आयरलैंड ने हाल ही में बेल्जियम को मात दी है। हमारा फोकस खुद पर है कि हम कैसे अपनी रणनीति पर अमल कर पाते हैं। उन्होंने कहा, 'अच्छी टीमों के खिलाफ मौके कम मिलते हैं लेकिन 50-50 मौकों को शत प्रतिशत में बदलना ही चैम्पियन की निशानी है।

पाकिस्तान के टेस्ट कप्तान बने रहेंगे मसूद, बाबर आजम पर फैसला बाद में

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) और कोच जेसन गिलेस्पी ने व्यस्त अंतरराष्ट्रीय सत्र से पहले राष्ट्रीय टीम के टेस्ट कप्तान के रूप में शान मसूद पर भरोसा जताया है लेकिन सीमित ओवरों के क्रिकेट में बाबर आजम की कप्तानी पर फैसला बाद में किया जाएगा। पाकिस्तान को इस साल अक्टूबर में तीन मैच की टेस्ट श्रृंखला में इंग्लैंड की मेजबानी करनी है जबकि बांग्लादेश, दक्षिण अफ्रीका और वेस्टइंडीज का भी सामना करना है। पीसीबी ने बुधवार को बैठक की जिसमें बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारियों, राष्ट्रीय चयनकर्ताओं, गिलेस्पी, सफेद गेंद के कोच गैरी कर्स्टन सहायक कोच अजहर महमूद ने हिस्सा लिया और इस दौरान टी20 विश्व कप में टीम के खराब प्रदर्शन पर भी चर्चा की गई।

स्टार्क ने अफगानिस्तान के खिलाफ टी-20 वर्ल्ड कप मैच से बाहर रखे जाने पर जताई नाराजगी

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क ने अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 विश्व कप में सुपर आठ चरण के मैच में बाहर रखे जाने पर नाराजगी जताई है। टी20 विश्व कप 2021 की चैम्पियन ऑस्ट्रेलियाई टीम को अफगानिस्तान के हाथों 21 रन से अप्रत्याशित पराजय का सामना करना पड़ा और टीम सेमीफाइनल में भी नहीं पहुंच सकी। ऑस्ट्रेलिया ने स्टार्क की जगह एश्टोन एगर को उतारा था लेकिन वह कोई विकेट नहीं ले सके।
स्टार्क ने कहा, 'टीम प्रबंधन ने मैच अप पर भरोसा किया क्योंकि पिछले मैच पर उस मैदान पर स्पिनर चल रहे थे। इसलिए एश्टोन को मौका दिया गया। उसने पावरप्ले में अच्छी गेंदबाजी की। उन्होंने कहा, 'लेकिन अफगानिस्तान ने स्पिन को बखूबी खेला और शायद हालात का आकलन हमसे बेहतर किया था।

भारत के पाकिस्तान दौरे की संभावना नहीं, हाइब्रिड मॉडल में होगी चैंपियंस ट्रॉफी

नईदिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी फरवरी-मार्च में हाइब्रिड मॉडल में आयोजित होने की संभावना है क्योंकि यह बेहद कम संभावना है कि भारत वनडे मैच खेलने के लिए पाकिस्तान की यात्रा करेगा। चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान के पास मेजबानी के अधिकार हैं, जो 2017 के बाद पहली बार क्रिकेट कैलेंडर में वापसी करेगी। टूर्नामेंट के कुछ मैच यूएई या श्रीलंका में आयोजित किए जाने की संभावना है।

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने पिछले महीने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद को एक मसौदा कार्यक्रम सौंपा था। मसौदा कार्यक्रम में भारत के मैच लाहौर में निर्धारित किए गए थे जिसमें एक मार्च को चिर-प्रतिद्वंद्वी के बीच होने वाला बड़ा मैच भी शामिल था। हालांकि यात्रा के संबंध में बीसीसीआई की ओर से फिलहाल कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। सूत्र के मुताबिक एक रिपोर्ट में कहा गया है, यह बहुत कम संभावना है कि टीम चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान जाएगी, लेकिन फाइनल सरकार द्वारा लिया जाएगा। इसलिए उस स्थिति में, एक हाइब्रिड मॉडल पर काम किया जा रहा है।

सूत्र के मुताबकि, भारत एशिया कप की तरह ही यूएई या श्रीलंका में अपने मैच खेल सकता है। हालांकि आईसीसी का भी इस पर अपना रुख होगा, लेकिन अभी हम इसी पर विचार कर रहे हैं। देखते हैं कि भविष्य में चीजें कैसी होती हैं। अभी तक, ऐसा लग रहा है कि यह हाइब्रिड मॉडल में खेला जाएगा।

यह घटनाक्रम पीसीबी के अध्यक्ष मोहसिन नकवी द्वारा शासी निकाय के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स को यह बताने के कुछ दिनों बाद सामने आया है कि चैंपियंस ट्रॉफी की पूरी मेजबानी पाकिस्तान में करने का प्रयास किया जाएगा। नकवी ने कहा कि जुलाई के अंत में कोलंबो में होने वाली आईसीसी बोर्ड मीटिंग के दौरान इस मुद्दे को उठाया जाएगा। भारत ने 2012-13 सत्र के बाद से पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय क्रिकेट नहीं खेला है। भारत ने 2008 के बाद से पाकिस्तान की यात्रा नहीं की है। पिछले साल ही पूर्व केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा था कि जब तक पाकिस्तान सीमा पार आतंकवाद को नहीं रोकता, तब तक भारत उसके साथ द्विपक्षीय क्रिकेट संबंध फिर से शुरू नहीं करेगा। पिछले साल भारत द्वारा पड़ोसी देश की यात्रा करने से इनकार करने के बाद पाकिस्तान को हाइब्रिड मॉडल में एशिया कप की मेजबानी करने के लिए मजबूर होना पड़ा था।

विम्बलडन 2024

मुसेत्ती पहली बार सेमीफाइनल में, जोकोविच से होगा सामना

लंदन (एजेंसी)। इटली के लोरेंजो मुसेत्ती ने अमेरिका के टेलर फिट्ज को हराकर विम्बलडन सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया और करियर में पहली बार वह किसी ग्रैंडस्लैम में अंतिम चार में पहुंचे हैं। उन्होंने साढे तीन घंटे तक चला यह मुकाबला 3.6, 7.6, 6.2, 3.6, 6.1 से जीता।

मुसेत्ती पहली बार किसी ग्रैंडस्लैम में चौथे दौर से आगे पहुंचे हैं लेकिन अब उनके सामने नोवाक जोकोविच के रूप में करियर की सबसे बड़ी चुनौती है। सात बार के चैम्पियन जोकोविच 13वीं बार विम्बलडन और 49वीं बार ग्रैंडस्लैम सेमीफाइनल में पहुंचे हैं और उन्होंने रोजर फेडरर के रिकॉर्ड की बराबरी की है।

महिला वर्ग में 2022 की चैम्पियन एलेना रिबाकिना ने एलिना स्वितोलिना को 6.3, 6.2 से हराया। वहीं 31वीं रैंकिंग वाली बारबरा क्रेइसिकोवा ने 13वीं रैंकिंग वाली येलेना ओस्टापेंको को 6.4, 7.6 से मात दी।

इंग्लिश पेसर्स ने वेस्टइंडीज को 121 रन पर समेटा

पहले दिन इंग्लैंड को 68 रन की बढ़त, डेब्यू पर एटकिंसन ने 7 विकेट लिए; क्रॉली-पोप की फिफ्टी

लॉर्ड्स (एजेंसी)। इंग्लैंड और वेस्टइंडीज के बीच 3 टेस्ट मैचों की सीरीज का पहला मुकाबला लॉर्ड्स में खेला जा रहा है। पहले दिन का खेल खत्म होने के बाद इंग्लैंड ने 68 रन की लीड ले ली हैं। जो रुट 15 और हैरी ब्रूक 25 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद हैं। यह इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन के करियर का अंतिम मैच है।

इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। पहले बल्लेबाजी करते हुए वेस्टइंडीज की टीम 41.4 ओवर में 121 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। इंग्लैंड की तरफ से डेब्यू कर रहे गस एटकिंसन ने 7 विकेट लिए। वेस्टइंडीज के 6 खिलाड़ी दहाई का आंकड़ा भी नहीं छू पाए। जबकि 2 खिलाड़ी शून्य के स्कोर पर पवेलियन लौटे। दिन का खेल खत्म होने तक इंग्लैंड ने 40 ओवर में 3 विकेट खोकर 189 रन बना लिए। पहली पारी में बढ़त के आधार पर इंग्लैंड 68 रन से लीड कर रही हैं।

शानदार बॉलिंग करते हुए एटकिंसन ने किसी भी वेस्टइंडीज के बल्लेबाज को टिकने नहीं दिया। उन्होंने सबसे पहला विकेट अपने पहले और पारी के 11वें ओवर में कप्तान कार्लोस ब्रेथवेट का निकाला। उन्होंने ब्रेथवेट को क्लीन बोल्ड कर दिया। इसके बाद 15वें ओवर में किर्क मैकंजी को 1 रन पर आउट किया। 35वें ओवर में गस एटकिंसन ने ड्रीम डेब्यू करते हुए एक ओवर में 3 विकेट निकाले। उन्होंने दूसरी बॉल पर एलिक एथानाजे, तीसरी बॉल पर होल्डर और पांचवीं बॉल पर सिल्वा को आउट किया। इसके बाद 38वें ओवर में 2 विकेट निकाले। उन्होंने इस ओवर की पहली बॉल पर अलजारी जोसेफ को और तीसरी बॉल पर शमार जोसेफ को आउट किया। इस तरीके से उन्होंने 12 ओवर में 45 रन देकर 7 विकेट लिए। इस दौरान उन्होंने 5 मेडन भी डाले।

वेस्टइंडीज की ओर से डेब्यू कर रहे सलामी बल्लेबाज मिखाइल लुई ने सर्वाधिक 27 रन बनाए। एलिक एथानाजे ने 23 और केवेम हॉज 24 को भी अच्छी शुरुआत मिली लेकिन वे उसको बड़ी पारी में बदलने में नाकाम रहे।पहली पारी में इंग्लैंड की शुरुआत खराब रही उन्होंने अपना पहला विकेट 8वें ओवर में बेन डकेट के रूप में गवायां। बेन को जेडेन सील्स ने विकेटकीपर सिल्वा के हाथों साथ कराया। इसके बाद जैक क्रॉली और ओली पोप ने पारी संभाली और मिलकर 116 बॉल पर 94 रन जोड़े। तेज कमबैक करते हुए जैक क्रॉली ने इस साझेदारी में 29 और ओली पोप ने 57 रन जोड़े।

संक्षिप्त समाचार

पेपर लीक में ईडी की एंट्री, पूर्व मंत्री का करीबी गिरफ्तार, कोर्ट ने रिमांड पर भेजा

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान में रीट पेपर लीक मामले में बड़ा अपडेट आया है। ईडी ने परीक्षा के जयपुर जिला कोर्डिनेटर प्रदीप पाराशर को गिरफ्तार किया है। सूत्रों के अनुसार, जांच एजेंसी ने रीट पेपर लीक मामले में प्रदीप पाराशर को देर रात गिरफ्तार कर विशेष न्यायाधीश के घर पर पेश किया, जहां से प्रदीप पाराशर को तीन दिन के लिए ईडी की रिमांड पर भेजा गया है। अब जांच अधिकारी पूरे मामले को लेकर प्रदीप पाराशर से पूछताछ करने में जुटे हैं।रीट भर्ती परीक्षा के पेपर लीक मामले में सबसे पहले जिन लोगों पर पेपर लीक के आरोप लगे, प्रदीप पाराशर उनमें से एक है। वह रीट का जयपुर जिला कोर्डिनेटर था। उसे जिला कोर्डिनेटर बनाए जाने पर सवाल उठे थे। बाद में जांच में सामने आया कि रीट का पेपर जयपुर में स्ट्रॉन्ग रूम से लीक किया गया था। इस पूरे मामले में प्रदीप पाराशर की भूमिका सामने आने के बाद उसे गिरफ्तार किया गया था। अब ईडी ने भी शिकंजा कसते हुए उसे गिरफ्तार कर लिया है। उल्लेखनीय है कि रीट पेपर लीक मामले की एसओजी की जांच में जिला कोर्डिनेटर रहे प्रदीप पाराशर की भूमिका सामने आई थी। इसके बाद एसओजी ने उसे 30 जनवरी 2022 को गिरफ्तार कर लिया था।

बीजेपी ने सीएम सुक्खू पर साधा निशाना, बोली- हिमाचल में दोस्तों की सरकार

शिमला, एजेंसी। हाल ही में हिमाचल प्रदेश में ईडी और आईटी विभाग की ओर से की गई छापेमारी को लेकर बीजेपी ने राज्य की सुक्खू सरकार पर हमला बोला है। बीजेपी नेताओं ने कहा है कि दोनों विभागों ने छापे के दौरान आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के दो करीबी विश्वासपात्र करोड़ों रुपये के घोटाले में शामिल हैं। ईडी और आयकर विभाग के अधिकारियों ने 29 जून और 4 जुलाई को हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर और कांगड़ा जिलों में कुछ व्यापारियों और ठेकेदारों के प्रतिष्ठानों और घरों पर छापेमारी की थी। जांच एजेंसियों ने ज्वेलरी दुकानों, पेट्रोल पंप और स्टोन क्रशरों पर छापेमारी कर दस्तावेज जुटाए थे। यहां जारी एक बयान में भाजपा नेताओं ने आरोप लगाया कि ईडी ने अवैध खनन से जुड़े दस्तावेज जब्त किए हैं। इन दस्तावेजों के आधार पर पाया है कि हिमाचल के मुख्यमंत्री के करीबी विश्वासपात्र ज्ञान चंद और प्रताप चंद करोड़ों रुपये के घोटालों में शामिल हैं। ईडी को एक ही खाते में 8 करोड़ रुपये नकद जमा होने के सबूत मिले हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार ने खुले तौर पर उनका पक्ष लिया। इससे राज्य के खजाने को भारी नुकसान हुआ। धर्मशाला से भाजपा विधायक सुधीर शर्मा ने एक वीडियो बयान में आरोप लगाया कि कुछ स्टोन क्रशरों के परिसरों में ईडी और आईटी द्वारा हाल ही में की गई छापेमारी के दौरान भूमि सौदों, नकद लेनदेन और नियमों में बदलाव करके प्रबंधित किए जा रहे टेंडरों से संबंधित दस्तावेज पाए गए हैं।

आर्थिक मदद नहीं, न्याय चाहिए, मिहिर के घर बुलडोजर चलाइए

मुंबई, एजेंसी। शिवसेना (यूबीटी) नेता आदित्य ठाकरे ने बुधवार को मुंबई के बीएमडब्ल्यू हिट-एंड-रन मामले में बुलडोजर न्याय की मांग की है। इस मामले में शिवसेना नेता राजेश शाह का बेटा मुख्य आरोपी है। उन्होंने पूछा कि मामले में दंडात्मक कार्रवाई के तौर पर राजेश शाह के बेटे मिहिर शाह के घर पर बुलडोजर क्यों नहीं चलाया जा रहा है? राज्य के पूर्व मंत्री ने रविवार सुबह दुर्घटना में मारी गई महिला कावेरी नखवा के परिवार से मुलाकात की और जोर देकर कहा कि उनके परिजनों को आर्थिक मदद की नहीं बल्कि न्याय की जरूरत है। मिहिर कथित तौर पर बीएमडब्ल्यू कार चला रहा था जिसने दक्षिण-मध्य मुंबई के वर्ली इलाके में एक दोपहिया वाहन को टक्कर मारी, जिससे कावेरी नखवा (45) की मौत हो गई थी जबकि उनके पति प्रदीप घायल हो गए। वर्ली से विधायक ठाकरे ने कहा, जो सरकार बुलडोजर न्याय में विश्वास करती है उसे उनके (आरोपी) घर पर बुलडोजर चलाना चाहिए। मैं मिहिर राजेश शाह के घर पर बुलडोजर न्याय देखना चाहूंगा।

दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर नहीं लगेंगे कांवड़ शिविर, पुलिस ने बताया पूरा प्लान

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे और एनएच-9 पर कांवड़ शिविर नहीं लगेंगे। इन मार्गों का सिर्फ डाक कांवड़िये ही इस्तेमाल करेंगे। बेहतर संचार व्यवस्था के लिए तीन कंट्रोल रूम और एक ट्रैफिक कंट्रोल रूम बनाया जाएगा। कांवड़ यात्रा को शांतिपूर्ण और सकुशल संपन्न कराने के लिए बुधवार को दिल्ली और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के पुलिस अधिकारियों की गाजियाबाद पुलिस लाइन में बैठक हुई।

गाजियाबाद कमिश्नरेट के एडिशनल सीपी दिनेश कुमार पी. की अध्यक्षता में हुई समन्वय बैठक में कांवड़ यात्रा के दौरान कानून और ट्रैफिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाले प्रमुख बिंदुओं पर चर्चा हुई। साथ ही मुख्य मार्गों पर किए जाने वाले रूट डायवर्जन के बारे में पीपीटी के माध्यम से अधिकारियों को जानकारी साझा की गई।

एडिशनल सीपी दिनेश कुमार पी. ने बताया कि दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे और एनएच-9 पर कांवड़ियों के लिए शिविर नहीं लगाए जाएंगे। यह मार्ग मुख्य रूप से डाक कांवड़ियों के लिए रहेगा। जबकि पारंपरिक अन्य मार्गों पर शिविर लगाने की व्यवस्था होगी। इन मार्गों पर पैदल कांवड़िये गुजरेंगे। वाहनों के डायवर्जन के लिए मार्गों पर संकेत चिह्न युक्त बोर्ड लगाए जाएंगे। ट्रैफिक डायवर्जन के बारे में समय-समय पर जानकारी दी जाएगी।

इस बार कांवड़ यात्रा पर 30 एंबुलेंस की व्यवस्था होगी। बैठक में आर सत्य सुंदरम एडिशनल सीपी ट्रैफिक दिल्ली, सागर सिंह कलसी अपर पुलिस आयुक्त ईस्टर्न दिल्ली, शिवहरी मीणा एडिशनल सीपी कानून व्यवस्था गौतमबुद्धनगर, एडिशनल सीपी गाजियाबाद कल्पना सक्सेना के अलावा दिल्ली-यूपी के डीसीपी और एडीसीपी स्तर के अधिकारी और पड़ोसी जिलों के पुलिस अधिकारी मौजूद रहे।

संख्या बढ़ी तो गाजियाबाद में रोक दिए जाएंगे वाहन

बैठक में तय किया गया कि कांवड़ियों की संख्या बढ़ने पर दिल्ली मेरठ एक्सप्रेसवे पर भी भारी वाहनों को पूरी तरह से बंद किया जाएगा। इसके अलावा हाईवे पर सुरक्षा प्लान लागू करने, रूट डायवर्जन और बाकी व्यवस्था को लेकर समन्वय बनाने पर सहमति बनी है। इसके बाद सभी अफसरों का एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाया गया है, जिसमें लगातार अपडेट किया जाएगा। मेरठ एसपी ट्रैफिक राघवेंद्र कुमार मिश्रा ने बताया कि कांवड़ की तैयारियों को लेकर राज्यों से समन्वय बनाकर प्लानिंग की जा रही है, ताकि कांवड़ यात्रा के दौरान कोई अव्यवस्था न हो।

रूट डायवर्जन की दी जाएगी जानकारी

एडिशनल सीपी ने बताया कि कांवड़ यात्रा को सकुशल संपन्न कराने के लिए व्यापार मंडल, उद्योग बंधु, ट्रांसपोर्ट एसोशिएशन, इंडियन मेडिकल एसोशिएशन, क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी और रोडवेज के एआरएम को गोष्ठियों के माध्यम से जरूरी जानकारी दी जाएगी। डायवर्जन के लिए पीए सिस्टम का प्रयोग किया जाएगा।

नोडल अधिकारी को आज रिपोर्ट सौंपेंगे

कांवड़ यात्रा को लेकर सभी विभाग अपनी योजना और तैयारी की रिपोर्ट गुरुवार को एडीएम प्रशासन को सौंपेंगे। पिछले दिनों जिलाधिकारी की अध्यक्षता में हुई बैठक में कांवड़ यात्रा का नोडल अधिकारी एडीएम प्रशासन रणविजय सिंह को नियुक्त किया था। बैठक में सभी विभाग को निर्देश दिए गए थे कि 11 जुलाई तक सभी विभागों के अधिकारी अपनी योजना और तैयारी की रिपोर्ट नोडल अधिकारी को सौंपेंगे।

बधाई, आपने कम समय में मनी लॉन्ड्रिंग में भी पीएचडी की, भाजपा बोली- आप सबसे आगे

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के कथित शराब घोटाले में ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) ने आम आदमी पार्टी को भी आरोपी बनाते हुए उस पर कई गम्भीर आरोप लगाए हैं। जिसके बाद भाजपा की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेव ने बुधवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए आप को मनी लॉन्ड्रिंग केस में पीएचडी करने वाली पहली पार्टी बताया। साथ ही उन्होंने कहा कि आप सबसे कम समय में राष्ट्रीय पार्टी होने का दावा करती थी, लेकिन अब वो मनी लॉन्ड्रिंग मामले में भी सबसे आगे निकल गई है।

वीरेन्द्र सचदेव ने पीसी में कहा, मनी लॉन्ड्रिंग केस में मामला दर्ज होने वाली ये हिन्दुस्तान की पहली पार्टी है। व्यक्तियों पर तो केस दर्ज होते रहे हैं,लेकिन पहली राजनीतिक पार्टी, जो यह दावा करती है कि हमने सबसे कम समय में राष्ट्रीय पार्टी होने का दर्जा प्राप्त किया है, मैं उनको बधाई देता हूं कि आपने कम समय में मनी लॉन्ड्रिंग में भी पीएचडी की है। इसलिए आप पहली राजनीतिक पार्टी हैं, जिन पर मुकदमा दर्ज हुआ है।

आगे सचदेव ने कहा, ईडी की जो सप्लीमेंट्री चार्जशीट है, जिसमें शराब नीति घोटाले में बार-बार 100 करोड़ के लेन-देन का जिक्र आता है, 45 करोड़ रुपए का लेन-देन हवाला के जरिए कैसे-कैसे किया गया है, उसमें सिलसिलेवार बताया गया है।

नमाज पढ़कर पीती थी शराब; सीमा हैदर ने गुस्से में दिया जवाब, पीछे दिखी सीएम योगी की तस्वीर

नईदिल्ली, एजेंसी। सीमा हैदर अक्सर पाकिस्तान के खिलाफ अपनी नाराजगी जाहिर करती रहती है। बीते दिनों उसने कहा कि पाकिस्तान के लोगों को उसके धर्म बदलने से बहुत दिक्कत है। उसका यह भी कहना है कि अगर उसे भारत से वापस भेजा गया तो पाकिस्तान में उसे मार डाला जाएगा। सीमा खुद को अब हिंदू बताते हुए नॉनवेज छोड़ देने का दावा भी करती है। इसी बीच सोशल मीडिया पर उसका एक और वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें वह नमाज, शराब और मीट खाने वाली बात पर गुस्से में जवाब दे रही है। वीडियो में सीमा के कमरे में सीएम योगी आदित्यनाथ की एक तस्वीर भी दिख रही है।

नमाज पढ़कर पीती थी शराब...: वीडियो में सीमा हैदर ने कहा, आप तीन बातें कर रहे हो... पहली बात आपने यह कही कि सीमा पाकिस्तान में अपने कमरे में नमाज पढ़ती थी। दूसरी बात आपने यह कही कि सीमा कमरे में शराब भी पीती थी। और तीसरी बात यह कह रहे कि सीमा वहां मीट भी खाती थी। आप एक बात पर तो रहो... जो नमाज पढ़ सकती है वह कभी शराब नहीं पी सकती। दरअसल, किसी यूजर की टिप्पणी पर सीमा हैदर ने यह वीडियो शूट किया। वीडियो में यह भी दिख रहा है कि पीछे अलमारी के रैक पर सीएम योगी की एक तस्वीर रखी हुई है। हालांकि लाइव हिन्दुस्तान इस वायरल वीडियो की पुष्टि नहीं करता है।

सीमा करती है नॉनवेज छोड़ने का दावा

दरअसल, चार बच्चों को लेकर कई देशों का सरहद लांघते हुए सीमा पाकिस्तान से ग्रेटर नोएडा पहुंची है। वह अपने आशिक सचिन मीणा के घर पर रह रही है। वह अब खुद को सीमा हैदर की जगह सीमा सचिन मीणा कहती है। वहीं उसने अपने चारों बच्चों का नाम भी हिंदू लड़के–लड़कियों के नाम पर रखा है। वह अब खुद को सनातनी बताती है और नॉनवेज छोड़ने का दावा करती है।

सीमा हैदर अक्सर हिंदू देवी–देवताओं का पूजा करते नजर आती है। वह अपने वीडियो की शुरुआत हमेशा जय श्रीराम और राधे–राधे से करती है। हालांकि सोशल मीडिया पर कई लोग उसे ट्रोल करते हैं और उसे पाकिस्तानी जासूस बताते हैं। इस मामले में एटीएस समेत कई एजेंसियां जांच कर रहीं हैं। वहीं सीमा का पाकिस्तानी पति गुलाम हैदर बच्चों को वापस बुलाने के लिए भारत में कानूनी लड़ाई लड़ रहा है।

रात में चोरी-छिपे प्रेमिका से मिलने पहुंचा प्रेमी, परिजनों को लगी भनक; भाई-दोस्तों ने पीट-पीटकर मार डाला

नईदिल्ली, एजेंसी। ग्रेटर नोएडा के दनकौर क्षेत्र के पीपलका गांव में मंगलवार रात प्रेमिका से मिलने पहुंचे युवक और उसके दोस्त को लड़की के परिजनों ने बुरी तरह पीटा। अस्पताल में इलाज के दौरान प्रेमी की मौत हो गई। गंभीर रूप से घायल दोस्त का अस्पताल में इलाज चल रहा है। पुलिस ने मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। अस्तौली गांव निवासी 20 वर्षीय कमल का पीपलका गांव निवासी रिश्तेदार युवती से प्रेम प्रसंग चल रहा था। युवती के परिजन इसका विरोध कर रहे थे।

कमल मंगलवार को युवती से मिलने अपने दोस्त के साथ पीपलका गांव गया। इसी दौरान प्रेमिका के परिजनों और भाई के दोस्तों ने एकजुट होकर दोनों दोस्तों पर हमला कर दिया और उन्हें पीट-पीटकर अधमरा कर दिया। सूचना मिलने पर पहुंचे परिजन घायल अवस्था में दोनों युवकों को लेकर दनकौर कोतवाली पहुंचे। इसके बाद घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उपचार के दौरान कमल की मौत हो गई। परिजनों और पुलिस ने बताया कि कमल और उसके दोस्त के शरीर पर अंदरूनी और गुम चोटों के अनगिनत निशान थे।

कमल के प्राइवेट पार्ट पर भी चोट थी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हत्या का कारण रक्तस्राव और आंतरिक चोट बताया गया है। इस मामले में कमल के चचेरे भाई नरेंद्र कुमार ने दनकौर कोतवाली में छह नामजद और छह अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने इस मामले में पीपलका गांव के सुमित, दादूपुर गांव के बॉबी और नवादा गांव के सोबीन को गिरफ्तार किया। पुलिस ने तीन युवकों को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया।

बीए की पढ़ाई कर रहा था कमल : सात बहनों का इकलौता भाई था। वह परिवार में सबसे छोटा था। बचपन में ही पिता जयपाल की मौत हो गई थी। कमल ने इसी वर्ष इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। उसने बिलासपुर के एक डिग्री कॉलेज में बीए में दाखिला भी लिया था। वह बिलासपुर कस्बे के जिम में नियमित शारीरिक अभ्यास भी करता था।

परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूटा : इस घटना के बाद मृतक कमल के परिवार पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा है। मृतक के परिजनों को सांत्वना देने और ढांढस बंधाने वालों का गांव में तांता लगा हुआ है। घटना के बाद से मां शिमला और सातों बहनों का रो-रो कर बुरा हाल है।

पुलिस की मौजूदगी में अंतिम संस्कार : अस्तौली गांव में बुधवार सुबह 900 बजे ही पुलिस बल और हजारों ग्रामीणों की उपस्थिति के बीच कमल का अंतिम संस्कार किया गया।

सुनियोजित ढंग से घटना को अंजाम देने का शक: इस घटना में कई गांव के युवक शामिल रहे, जिससे लगता है कि इस वारदात को सुनियोजित ढंग से अंजाम दिया गया। कमल अपनी प्रेमिका से मिलने गया था या प्रेमिका ने फोन करके प्रेमी को गांव में बुलाया, पुलिस इसकी कॉल डिटेल के आधार पर जांच कर रही है। पुलिस का कहना है कि अचानक हुई घटना में कई गांव के हमलावर शामिल नहीं हो सकते।

ब्रिटेन की संसद में भगवद गीता की गूंज, सांसद शिवानी राजा ने ली शपथ

लंदन, एजेंसी। भारतीय मूल की 29 साल की गुजराती व्यवसायी शिवानी राजा ने ब्रिटेन की संसद में भगवद गीता पर शपथ ली है। शिवानी ने कंजर्वेटिव पार्टी के लिए लीसेस्टर ईस्ट सीट पर ऐतिहासिक जीत हासिल की है। उन्होंने इस सीट पर लेबर पार्टी के 37 साल के वर्चस्व को खत्म किया है। वह भारतीय मूल के ही लेबर पार्टी के उम्मीदवार राजेश अग्रवाल के खिलाफ चुनाव लड़ी थीं।

ब्रिटेन की सांसद के रूप में शपथ लेने के तुरंत बाद शिवानी ने एक्स पर लिखा, लीसेस्टर ईस्ट का प्रतिनिधित्व करने के लिए आज संसद में शपथ लेना सम्मान की बात है। मुझे गीता पर महामहिम राजा चार्ल्स के प्रति अपनी निष्ठा की शपथ लेने पर वास्तव में गर्व है। आपको बता दें कि 2022 में भारत और पाकिस्तान के बीच टी20 एशिया कप मैच के बाद लीसेस्टर सिटी में भारतीय मूल के हिंदू समुदाय और मुसलमानों के बीच संघर्ष की घटना हुई थी। इसे देखते हुए शिवानी की जीत उल्लेखनीय है। शिवानी राजा ने 14,526 वोट हासिल किए, उन्होंने लंदन के पूर्व डिप्टी मेयर अग्रवाल को हराया। उन्हें सिर्फ 10,100 वोट मिले।

यह जीत इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि लीसेस्टर ईस्ट 1987 से लेबर का गढ़ रहा है। शिवानी की जीत ने 37 वर्षों में पहली बार इस निर्वाचन क्षेत्र में टोरी को चुना है। शिवानी के अलावा यूनाइटेड किंगडम में 4 जुलाई को हुए आम चुनाव में 27 अन्य भारतीय मूल के सांसद हाउस ऑफ कॉमन्स के लिए चुने गए हैं।

महिला ने मकान मालकिन की हत्या कर शरीर को टुकड़ों में काटकर फ्रिज में रखा, 58 साल जेल की मिली सजा

शिकागो , एजेंसी। अपनी मकान मालकिन की हत्या और उसके शरीर के कुछ टुकड़े कर उसके टुकड़े कर फ्रीजर में रखने के लिए दोषी ठहराई गई एक महिला को 58 साल की जेल की सजा सुनाई गई है। मामला अमेरिका के शिकागो का है। हत्या की आरोपी सैंड्रा कोलालू (39) को फ्रांसिस वॉकर (69) की हत्या के लिए सज़ा सुनाई गई है। कुक काउंटी की जूरी ने अप्रैल में कोलालू को कई आरोपों में दोषी ठहराया, जिसमें प्रथम श्रेणी की हत्या और एक हत्या को छुपाना शामिल है।

अभियोजकों ने कहा कि जब वॉकर ने उसे बेदखली का नोटिस कोलालू ने अक्टूबर 2022 में वॉकर की हत्या कर दी, दिया। कोलालू को तब गिरफ्तार किया गया, जब उसने एक टो ट्रक ड्राइवर पर चाकू से हमला किया, जो उसे शिकागो के लेकफ्रंट पर एक समुद्र तट पर ले जा रहा था। अभियोजकों के अनुसार, कोलालो ने वहां एक भारी बैग को कूड़ेदान में फेंक दिया और जब ड्राइवर ने उसे किसी दूसरी जगह ले जाने से मना कर दिया, तो उसने उस पर चाकू से हमला कर दिया।

शिकागो के नॉर्थवेस्ट साइड स्थित घर में एक फ्रीजर के अंदर वॉकर का कटा हुआ सिर, हाथ और पैर पाए जाने के बाद उस पर आरोप लगाया गया। कोलालो ने सजा सुनाए जाने की सुनवाई के दौरान जोर देकर कहा कि उसने वॉकर को कभी चोट नहीं पहुंचाई। फ़ोर्ट कैंपबेल के सैनिक को घर में मृत पाया गया, शव परीक्षण से पता चला कि उसे लगभग 70 बार चाकू मारा गया था।

उम्मीद है कि बोइंग स्टारलाइनर जल्द ही घर ले आएगा: सुनीता विलियम्स

सुनीता विलियम्स और उनके साथी विल्मोर अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में फंसे हुए है

वाशिंगटन, एजेंसी। 5 जून को अंतरिक्ष के लिए उड़ान भरने के बाद सुनीता विलियम्स और उनके साथी विल्मोर अब तक अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन यानी इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में फंसे हुए है। वहां से वापस धरती पर लौटने के लिए इंतजार कर रही इस जोड़ी ने बुधवार को कहा है कि उन्हें भरोसा है कि बोइंग स्टारलाइनर जल्द ही उन्हें घर ले आएगा। बुच विल्मोर और सुनीता विलियम्स ने 5 जून को नए अंतरिक्ष यान पर उड़ान भरी थी। वे अगले दिन अंतरिक्ष में पहुंच गए थे। यह मिशन एक सप्ताह का था। हालांकि यात्रा के दौरान थ्रस्टर की खराबी और हीलियम लीक के कारण उनकी वापसी को टाल दिया गया था।

उनकी वापसी के लिए अब तक कोई तारीख तय नहीं की गई है, लेकिन नासा के अधिकारियों ने बुधवार को कहा कि वे जुलाई के अंत तक उन्हें वापस लाना चाहते हैं। कल बुच विल्मोर और सुनीता विलियम्स ने मीडिया से लाइव बातचीत की। स्पेस स्टेशन से लाइव प्रेस कॉल के दौरान पूछे जाने पर कि क्या उन्हें अभी भी स्टारलाइनर टीम और अंतरिक्ष यान पर भरोसा है, मिशन कमांडर विल्मोर ने जवाब दिया, हमें पूरी तरह से भरोसा है। वहीं सुनीता विलियम्स ने जवाब दिया, मुझे पूरी उम्मीद है कि अंतरिक्ष यान हमें घर ले आएगा, कोई समस्या नहीं होगी।

उन्होंने कहा कि वे स्पेस स्टेशन पर अपने समय का आनंद ले रहे हैं। इस दौरान वह मूत्र को पीने के पानी में बदलने वाली मशीन पर पंप को बदलने जैसे कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा वह कुछ शोध भी कर रहे हैं। वह माइक्रोग्रैविटी वातावरण में जीन सीक्वेंसिंग जैसे विज्ञान प्रयोग कर रहे हैं। उन्होंने स्पेस स्टेशन पर समस्याओं के मामले में स्टारलाइनर को सुरक्षित ठिकाना बताया है और इसकी जांच भी की है कि जब चार लोग अंदर होते हैं तो इस यान की लाइफ सेविंग सिस्टम कैसे काम करती है।

अनिश्चितता बनी हुई है

हालांकि, विल्मोर और विलियम्स के घर लौटने से पहले इंजीनियरिंग टीमों को स्टारलाइनर द्वारा अनुभव की गई कुछ तकनीकी समस्याओं के मूल कारणों को बेहतर ढंग से समझने की जरूरत है। इसके लिए उन्हें यहां धरती पर समान थ्रस्टर्स और हीलियम सील के अधिक सिमुलेशन चलाने की जरूरत है। जानकारी के मुताबिक टीम को लॉन्च से पहले यह पता था कि अंतरिक्ष यान को में हीलियम लीक की स्थिति थी, लेकिन उड़ान के दौरान और लीकेज की समस्या सामने आने लगी। एक प्रेस कॉल में, बोइंग के एक्जीक्यूटिव मार्क नैपी ने मीडिया को बताया कि थ्रस्टर की खराबी के का कारण ओवरहीटिंग थी। नासा और बोइंग ने इस बात पर जोर दिया है कि आपातकालीन स्थिति में स्टारलाइनर घर वापस आ सकता है। उनका कहना है कि सिर्फ कुछ थ्रस्टरों में खराबी है। हालांकि बहुत कुछ स्पष्ट नहीं है। नासा के एक अधिकारी स्टीव स्टिच ने जोर देकर कहा कि नासा अभी सुनीता विलियम्स और विल्मोर को स्पेसएक्स क्रू ड्रैगन पर वापस लाने पर विचार नहीं कर रहा है। स्टिच ने कहा, अभी मुख्य विकल्प बुच और सुनीता को स्टारलाइनर पर वापस लाना है।

मिस्ट्रेस मार्ले से बेइज्जत होने आते हैं पुरुष, बदले में उन्हें मोटी रकम और तोहफे देते हैं

न्यूयार्क, एजेंसी। डॉक्टर, इंजीनियर या बड़ा कारोबारी बनने जैसी करियर रेस में एक महिला ने अजीबो गरीब पेशा चुना है। खबर है कि अमेरिका की एक महिला सिर्फ पुरुषों को बेइज्जत करने, उन्हें नीचा दिखाने और यहां तक की गले में पट्टा बांधकर घुमाने तक की मोटी फीस लेती है। महिला ने खुद ही खुलासा किया है कि वह एक साल में लाखों डॉलर कमाती है। 30 वर्षीय मिस्ट्रेस मार्ले का पेशा पुरुषों को अपमानित करने का है। यूट्यूब चैनल प्यार करो, आलोचना मत करो के एक कार्यक्रम में मार्ले ने अपने पेशे को लेकर खुलकर बात की। वह बताती हैं कि क्लाइंट्स उनके पास अपमानित होने और उनके कंट्रोल में रहने के लिए आते हैं। मार्ले बताती हैं कि वे अपमानित होने के बदले में उन्हें मोटी रकम और तोहफे देते हैं। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, करीब 6 साल पहले कॉलेज से ग्रेजुएट होने के बाद उन्होंने पाया कि आम नौकरी उनकी आर्थिक जरूरतों को पूरा नहीं कर रही है। इसके बाद उन्होंने ऑनलाइन तरीके खोजना शुरू किए और यहां उन्हें महिलाओं का एक समूह मिला, जिसके बाद उन्हें एक आइडिया आया।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129